357

Hindi Ms.
8 H 1

B 594

357-Ms.

बिहारी सतसई; लक्ष्मी-चन्द कृ०
१८६६ वि० लि०
१२१ पत्रक ॥ ल० भ० १६ पं० प्र० पृ०

हि० ज०

A. no. 357

मिल × धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोष ४ः

हारीसत

१

॥ॐ॥ अथ कवि बिहारीदास कृत दोहा टीका कवि चित्र चंद्रिका लिख्यते॥ अथ मंगलाचरण
प्रथेनाद॥ ॥दो०॥ एकरदंत बुधिवंत सीससिंदूर अर्धससि। गजमुष परम दयाल देत आनंद अधिक जस। परस प्रान
गन ईस। ईस सुत रिधि सिधि दायक। देत विधि निज प्रगट। जगतपति जगत सहायक। सुचिवा नंद आनंद कंद। चिंतय
के उपावन चरण। मन वचन कर्म कवि रूप कहि। वंदित च्यार वरन॥१॥ ॥दोहा॥ मेरी भव बाधा हरौ। राधा नागर सोइ
॥ जा तन की झांई परै। स्यांम हरत दुति होइ॥ ॥१॥ ॥टीका॥ लक्षिजन वाक्य। कवि विहारीदास कहतु हैं॥ जो श्री राधा नागर
हैं एश्री कृष्ण चंद्र सोई मेरै भव कहीये संसार। आ जन्म तिन की जो बाधा है सो हरो। पै वे राधा नागर कैसे है। जिन के तन की झां
ई कहीये छवि जा दिष्ट परै तें स्यांम कहीये पाप तिन कुं तो हरै। अरु दुति कहीये निर्मल ता पनो करै॥ ॥और अर्थ॥ जो रा
धा नागर कहीये चातुर है सोई मेरी भव की बाधा हरै। बाधा है सो हरकरो। पै वा राधा कैसी है कि। जिन के सरीर की छवि पै
स्यां तें जो श्री स्यांम है तिन के तन की हरी सी दुति होत है दुति को हरायमान करि है॥ ॥॥ कवित्त॥२॥ जाके चरित्र सदा
विधक रोषर से समस्य यं तु सुरेस न मोहे। मेरे हरो भव के सब उरक नश्री वृषभान जा नागर सोहे। वेई जगत में रूप स
वे कहै वाके समान नारी वई कोहै। जाके सरीर तना के मिले तें घना घन स्यांम हरे रंग होहै॥१॥ जाकी प्रभा अवलो
कित ही तिहुं लोक की सुंदरता गहि वारी। कृष्ण कहै सरसीरुह नैंन को नाम महा मुद मंगल कारी। जा तन की
झलकै झलकै हरित दुति स्यांम की होति निहारी। श्री वृषभान कुमार कृपा के सु राधा हरो भव बाधा हमारी॥२॥
॥दोहा॥ अपनै अंग के जांनि कै। योवन नृपति प्रवीन। स्तन मन नैंन नितंब को। बडो इजाफा कीन॥२॥ ॥टीका॥ मु
ग्धा ज्ञात योवना॥ सखी को वैन सखी प्रति॥ हे सखी राधा जू के सरीर कें विषै। जो वन रूपी ये नृपति प्रवीन नैं अ

१

1A

मलकस्यौ मोस्तनांकौ मनकौ नैनाकौ नितंबकौ अपनेअंगकेजांनिकै इनकोंइजाफाघनौसोवक्षो
रोदीनौ॥१॥कवित्त॥ अपनेकांमसमर्थहितअंगकेचेतचितैंरसअंकुरलसीनें जोवनन्नामममहाबलरूप
पनैदेवहिवांनदवीननवीनें साचेसाहामनेचातुरस्वकसेसोदईमांनोमनोजनेकीनें चित्तउरोजसुनै
ननितंबकोरूपवहैईइजाफाईदीनें॥२॥दोहा॥ अरतेंटरतनवरपरोदईमरकमनुमैंना॥होफाहोसी
वढिचलो॥चित्तचतुराईनैन॥३॥टीका॥मुग्धाग्यातयोवना॥सखीकोवैंनसखीप्रति॥हेसखीश्रीराधाजी
केशरीरविषैमैंनरूपजादईहूतैयौतितिनके मरककहीयेघोराहै सोवरकहीयेजोरावरपरेहै सो
अरैतेंटरउनांहाहैसोकेसहैघोर चितकीतौचातुरतागरनैनकीचतुराईएहोतुहोफाहोफीवढतेव
लेजातहै एवंचलत्ताव्यासहै औरविचारहैमैंननैइनांकोमरककहीयेइसारतदीनीहै तातैंहोफाहो
फीवढतहै ३ कवित्त कोऊमनोअनअनोपमसाहसीवाहीनेंमानोमरखदईहै तातेंअरेतेंटरेनदी
जोरतेंभरनपौनकीपछिलईहै एकहीवेरअचांनकधावतहोरवदीओगरूरमईहै वैहूंअचाउ नैन
रचितचलैवहिरूपअवेइहमांतिनईहै ३ दोहा औरैओपकनीनिकन गनीघनीसिरताज म
धनीकेनेहकी वनीवनीपटुलाज ४ टीका मुग्धाग्यातयोवना॥सखीकोवैंनसखीप्रति॥ हेसखीरा
धाजूमैतोतांसंयुक्तवेनीहै [illegible] ऐवीचनायकसोहै

हि० तरुईसा
२ ५

यौं वाकौं श्री रूपरूप सबमें घनी सी सिरताज गनी सोजु न बधनी नर तारति न के नेह की मनी सी नई
तव छिनक में वन सी के पट कौ लाज की वी और अर्थ सखी कौ वैन सखी सौ हे सखी श्री राधा जू सो
तौ साधि वे वीहै सो कनी न कनक हीये नेत्र कटाक्ष सहित तौ न रतारें घनी ही गनी पेवा की ओरा
ही जू आप ना लै ता कौ सब तें सिरताज मानी सो तव धनी के नेह की मनी सी नई जब छिनक में वन
के लज्जा रूपी पट की यौ नेत्र न वाण ४ क. वित्त और ही आप है नैन कनीन की पीत म नेह की मानो म
नी है देखें ते और सुहाइ न दीपति ना थे घनी सिरताज गनी है सुंदर सील सकोच भरी अति अं
बर अंतर लाज बनी है कउ रकारी अन्यारी संचारी विचारे न आवती वा न बनी है ४ दोहा स
निक रूप रुचि पक रूप लगन उपज्यो सुदिन जु नेह कौं नन्द पति के नोगवे जहि मन्द में मकरन्द से
५ टीका मध्या रूढ़ा यौवना सखी कौ वैन श्री राधिका जू सौं हे राधे जिनके मकर तथा मीन लग
न के विहंस नी स्वरूप तौ कै सो सब देस रकौरा जलहि नोगवे सो तैरै का जल है सो सनी स्वर है अ
रु नेत्र है सो तौ फव कही ये मकर मीन लगन है अरु सुदिन कही ये न तो जो ग सो तो नेह उपजे
सो तो नन्दपति कै केसव दहीं सु देस सो तो नायक कौ शरीर लहि कै नोगवे कुं नही ए जोगवे ज
या कौं ज्योतिग्राथ [illegible] र की देही कौं नोगवे ५ क

२

के:

टी॰ २७ नसंकोचउजग्योहै आजनअचांनकआयमिलेसुनलीकरीदेषननैंउमग्योहै आपसतेंचनेऔ
रकहाकहौंकान्हकेनेहसोंग्रंनपग्योहै २४ दोहा लाजगरबआलसउमग नरेनेंनमुसकाय
त रातिरमीरतिदेतिकहि औरेंग्रलाजनात २४ टीका खंडिता नायिकाकोवैननायकसों है
हरिउमारेनेत्रलाजतेंगरबतेंआलसतेंउमगतेंनरेमुसकावतेहैं औरप्रातकेआवनतेंऔ
रहीप्रत्नाक्रारि लागतहै तोरातिकान्हमैंरतिरमीहै सोकहिदेउहै २५ कवित्त लाजतेरआ
तिऔरगरूरतेनरेअरूआरसआंनभईहै सोरैअनेगउमंगनरेबंकनैननिनैंमुसकांनिला
ईहै रातिरमीरतिदेतकहियत लागिलहतीसीरीतिनईहै सांझिकेसांकेसिंगारमिटेसबअं
रेंश्रनापरलातनईहै २५ दोहा पतिरतिकीवतियांकही सषीलषीमुसकाय केकेंसबेटा
लाटली अलीचलीसुषपाइ २६ टीका क्रियाचातुर सषीकोवेंनसषीसों हेसषीपतिआ
सवीसांम्हेदेषिकेमुस्किकांनकरी तबसषीयांजांन्योकेनायकरतिकीवातकही जबसषीटला
रलीसीकरिकेअलीपैसीषपायकेउवगईं २६ कवित्त गौनेंकीरातिलेआईसिंगारकेनारि
नईऊंवियोगवितेके वातकहीरतिकीजबपीमुसकाइलषीसषीहीछुईतेके टराटरीकेकेंच
लीऔंअलीसबदंपतकीबकवातरितेकैं पाइसबैसुखकेकेहसेमुषप्रीतमप्यारीकीपीति

3

बेहारी री
र २
मोहनजूकै

तेकै ९६ दोहा तोपरवारौउरवसी सुनिराधिकेसुजांन तूंमोहनकैउरवसी कैउरवसीर
मांन ९७ टीका मांनमोचन सांमउपाय सषीकोवैननायकासों हेराधिकेसुजांनसुनितेरे
ऊपरजोउरवसीकरहतोअपछरातिनकोंवारिदेउ ओरतूंकैसीहै उरवसीकहतांलछमीजूस
मांनहैकैंहृदैमेंवसीहै असीउसामर्थीकरकैमांनमनायो ९७ कवित्त सीलरूपसुगंधसि
रामनिउर्वसीतापरिवारहीमाहंतूंसुनिराधिकेकांनअराधकेतेरेचरित्रनितोपैनिहारुं वाउरी
तेरीचितैकै उरवसीमोहनकेमननमेंयुंविचारुं कैउर्वसीकेसमांनउउरवसीजेजगरूपसों
तोपरिवारुं ९७ दोहा ऊंचगिरिवढिअतिथकितह्वै चलीदीठिमुंहचाहि फिरनटरीपरीयेर
ही परीचिबुककीगाहि ९८ टीका नेत्रलगननायक नायककोवेनसषीसों हेसषीमेरीजो
दीठिनायकाकेऊंचरूपीगिरिचढितेंअतिथाकीहूई ओरतीमुंहकीचाहकरतोचढावा
कोचालीसोचिबुककीजोषाहपरीहै तहांआंनकैपरीसोपरीयेरही नोटरसकीनदीपचिबु
ककीसोनातेनेत्रलागेहै ९८ कवित्त ऊंचेपयोधरसयलसमांनचढेतैंथकीअतितपउजा
री आगेहेन्हासेंचलीमुंहचाहिकुंमीठिहीयेमहादीविचारी कांपरीयेरहीपाछीफिरीनटरी
अरीयैरहीकेतोसेंनारी गोपीकेगाहअचीनकआयफुकीसोफुकीअवबातकहारी ९८

[illegible] औरजियकीवातजोहैसोकहदेतुहै अरुचौरअनेंकु
[illegible] हैं औरबिनमेंऔरसेहोतुहै से
[illegible] तुहै बिनुमैंतोऔरसेहोतहै औरबिनमेंऔरसेहोतुहै
[illegible] ११ कवित्त वातकहैबहकेजियकीसबसुंदरजोतिलरे रतनारे
कुचौरनैनबैननीयार औरसेहोतबिनेकमेंऔरही औरबिनेंबिन
एबिबिबाकेईनैननिहारे ११ दोहा नीकीदईअनाकनी फीकीपरे
रकवारनतार १२ टीका नकिजनवाकं कविबिहारीदासकहतु
सीअनाकनीकहीयेकानीमुदीदीबीहै मेरीजागुहारकहीयेडुकारि
थीतिनकोंतारकेंउनवारकहीयेविरीयातेतारनकोविरुदहैसोतअं
यातेतेनाहिगदाधरनीकी अनाकिनी [illegible] आपदईहै मैंअतिक्रूररूप
हीरगईहै जानीयेजातअवेअपनीमनुतारककविदेंवदायदईहै वा
अहेनोतिलईहै १२ दोहा फिरिफिरचितउतहीरहतु टूटी [illegible] लाजकी
सोरकीनाव १३ टीका नाइकाकोचित्तलगनो आनलालजूकोबैनसबी
[illegible] नाकेंतेपेचितफिरफिरकें अंगप्रतिकीग
रूपीकीनावथीसोटूटी [illegible]

बेहारी स
१ २
मोहनकै

तेकै २६ दोहा तोपरवारौंउरवसी सुनिराधिकेसुजांन तूंमोहनकैउरवसी कैउरवसीस
मांन २७ टीका मांनमोचन सांमउपाय सषीकौवैननायकासौं हेराधिकेसुजांनसुनितेरै
रूपरजोउरवसीकरहतौअपछरातिनकौंवारिदेउ औरतूंकैसीहै उरवसीकरहतौरलसीतूंस
मांनकेकैंहृदैमेंवसीहै ऐसीउसामदीकरकैमांनमनायौ २७ कवित्त सीलसरूपसुगंधमि
हमनिउर्वसीतोपरिवारडीनहूं तूंसुनिराधिकेकोंनअराधकैतेरचरित्रनितोपेनिहारूं वाउरी
तेरीचितकै उरवसीमोहनकेमनमेंयुविचारूं कैउर्वसीकैसमांनउउरवसीजेजगरूपमो
तोपरिवारूं २७ दोहा ऊंचगिरिवढिअतिषकितकै चलीमीठिमुंहचाहि फिरनटरीपरीयेर
ही परीचिबुककीगाहि २८ टीका नेत्रलगननायक नायककोवैनसषीसौं हेसषीमेराजो
मीतिनायकाकेऊंचरूपीगिरिवढितैंअतिषाकीहूंई औरमीमुंहकीचाहकरतौवढावा
कौचालीसोचिबुककीजोषाहपरीहै तहांआंनकैपरीसोपरीयेरही जोटरसकीनदीपचिबु
ककीसोनातैंनेत्रलागेहै २८ कवित्त ऊंचेपयोधरसयलउसमांनचढैतैंषकीअतितउप.उजो
री आगै अहासेंचलीमुंहचाहिकैंमीठिहीयेमहादीठिविचारी कोपरीयेरहीपाछीफिरीनटरी
अरीयेरहीकेतोसंनारी गोरीकेगाहअचीनकआयफुकीसोफुकीअबवातकहारी २८

औरजियकीवातजोहैसोकहैदेतुहै अरुचौरअनेंकु
तुहै छिनुमैंतोऔरसेहोतहै औरछिनमेंऔरसेहोतुहै म
११ कवित्त वातकहैवहकेजियकीसबसुंदरजोलिलेरतनारे
कुचौरलनषैननीयारे औरसेहोतछिनेकमें औरहीऔरछिनैंछिन
एछविवाकेईनैननिहारे ११ दोहा नीकीदईअनाकनी फीकीपरी
रकवारनतार १२ टीका नक्तिजनवाकी कविविहारीदासकहतु
सीअनाकनीकहीयेकानीमुदीदीवीहै मेरीआगुहारकहीयेपुकारए
थीतिनकौंतारकैउनवारकहीयेविरीयाते तारनकोविरुदहैसोतऔ
यातेगोविंदगदाधरनीकी अनाकनी[illegible]आपदईहै मैंअतिकूररूप
जाइ होरगाईहै जानीयेजातअवेअपनीमनुतारकविर्दवहायदईहै वा
अहेनांतिनईहै १२ दोहा फिरिरचितउत्तरहीरहै[illegible] टूटी[illegible]लाजकी
नौरकीनाव १३ टीका नाइकाकोकविवचनउगतें आजहलजकोवेनसबी

रूपीनावथीसाटूटी नबतमैराचिताफरांफरके अगाग्रतिकीगं

समेंप्रगटहै अरुवेजोद्विजराजकुलसोमवंसकेविषेंप्रगटहै ग
विषेसुवसवसेहै अरुवेजोमथुरातेंव्रजकेविषेआनिकेसुवस
अरुकैसौरायजोश्रीकृष्णजूमेराकेदेससबहीकलेसकोंहर
मवाहीनेआपनोजन्मलसोहै आइसुवासवसेव्रजनीवसोंनंद
ग्रंनकियेपयपांननिवाकेविमांननिवासलसोहै सोप्रभुमेरक
रदयोहै ए दोहा हौरीकीछबिरीफहै बबाहबबीलेलाल से
उत्तीमाल १० टीका मिलाइवोअंगमोला सषीकोवेनआकह
बविछबिकैहोतारीफीहै येतुमहीदेषकेरीफोंग सोकोंकिजव
मालाआंनकेमिलतहै तबमालतीकीमाला तिनकीसोनानजु
नरीकृअबेछबिरीकिहोआपनतेंगिरधारी गोरीगुराईकीयुब
री सुवसरूपसुगंधमई अतिमालतीमालनलेउरधारी गातव
दबैमनधारी १० दोहा बहकैसबजीकीकहत बेरकवोर
कैंने ११ टीका ...नायकाकोवेननायकसौं होव

...गकीजोजुगतिहैसोललीसीमिषाईहै सोएनेत्रकोनोंकुंसे
...दिषतहै औरअर्थ: जोगमारगमानोंजैनामेंमहामुनीस्वरने
...ाननकरतीवनतिनकोंसेवतहैसोमांनोंनेचोंकरिकें पियकरु
...पनेकोंचाहंतुहै १५ कवित्त आसनसाधसमाधलगायअराधनजो
विरोधविषैसबमंत्रमनोंमुनिमैनरहयेहै आपनेचित्तमेंचाहतएकताए
मनोंवचकेलिकलातजिकांननमेंनिवासलयेहै १५ दोहा घरीपात
आककलीनरलीकरै अलीअनीजियजांनि १६ टीका मांनमोचन
धैतेंतोकांननकीघनोसीपातरीहै सोमैंताकुंकेसीवांनकरकें वहांउक
आककीकलीमेंअलीनेवररलीकरतानही सोहेअलीइहीजीयतेंजा
ककलीसोतोअन्यनायका अरुनेवरसोनाइकसोकेसेउनतेंरलीकर
पाहुरीकांनकीकाहेकोंतैंअबमोनलयोहै कोंनवहांउसीबांनहेकामि
अ... कलीनरलीकरैकेंसेकुंकेंजनकेअविमोहमयोहै जोंनअलीन
रसोंनेहनयोहै १६ दोहा पियविछुरनकोंदुसहदुख हरषजातप्यौस



कमल =

है उवैहीरहतहै औरकीनावतिनकोसीपरैनयो और अर्थः षंदित
मों हेकान्ह जमैंजानननं जासोंतुम्हारोचितलागोहै सोफिरफिरकैजो
रहैतिनमैंजोलालजरूपीनावथीसोतूटी अरुनौरकीसीनावतईरहतुहै १३
कहाकहोंवारहीवाररह्योचितकोरही सोक्योनहीसकुचीनहीनेकउलाज
अनोपमकीछबिकोरमेंरूपकेरूपकीबांहबिथारही टसोटरैनउहांहीरे
कोतोरही १३ दोहा बितईलटचोरैचषिन नटघूंघटपटमांहि ललसों
बांह १४ टीका क्रियाविदग्धा सषीकोवैनसषीसों हैसषी नायकल
चितई अरुनायिकाघूंघटकेपटमांहितें नायककोंनटकरतांदेषे सो
नायिकाअपनीछबीलीछायाकोंउकरउसुछिनुकमेंनायकसोंछुवाय
विन नोति नलीललचोरहैहसोहैसलोयनरूपकीरासिनिहारी ल
किनिहारेंबिहारी गाकलआरसबैतियहेरीपैवेईवसीछलिहारमसे
ाईबविबांहकहारी १४ दोहा जोगजुगतिसिषएनलेल मनों

[illegible] सषीकोवैननायिकासों

उम

सुमनु कैरे सफल आतपरो सनिवार वारी वारी आपनी सींच सुहृद तावारि २२ टीका अमोल
रमाली तेरी वारी के विषे जो सुमनु है फूलगो है सो सफल कैहीगो तेइ नतें आतप कहीये सूर्य ति
नको रोस कहीये तेज निवारे देऊ अरु आपनी वारी के मनमैं ल्लै चित करके वारिकहीये पानी
सींच औरु अर्थः नायक की अभिलाष दसा सषी कोवैं न रतिनायकसों रूराधे तेरी सले जका
रे जो नायक सो मनलाग्यो है तो सफल कैहीगो तेइ आतप कहीये वेद अरु रोस निवार देऊ अ
रु है वारी जावोते री वारी है तिनके विषै नायक की वारिकहतां आवन की विरियां तिनको एक चि
रु हे वारी जावोते री वारी है तिन के विषे नायक की वारि ... सुमन सबै सिर
तकर सींच एहऊ अवलोकन करि २२ कवित्त फल होइ गो अ से ईजो नित लग्यो है सुमन सबै सिर
सो है आतप सो है जो रोस अपार निवार बलाइ ल्यों यो मन मोहै वारी तुवारी ये आपनी जो नेन
तो सींग वारि आहा कहि कोहे सींच सुनैनी सुहृद ता वारि तिमे रे कहे ते लगें डुषतो है २२ दोहा
अजौं तरयो नाई रह्यो श्रुति सेवत इक रंग नाक वास वेसर लह्यो वसि मुगतन के संग २४
का अन्याकहीरा वेधी अरे नर अजों हीतरयो नाही तेइ करंग नये मासत्रस्यो तो नीयों २०५
अरु... देषि जो वेसर कहतां मा... नजो नेति कोमुगत गामीको साधवस के नाक मे २०६
को... वास लहयो २२ ... वेगीही आ है ... होऊ से रस्यो अरु कोटिगुपाइ कीये न २७७ २८

हे रंगैकरि सेवति है … सस्योहै संगतिके अतिउत्तम है फलवसरनाककोव
सकसोहै साथसदावसिमुक… रवइहै रेनवसिंधतस्योहै ४४ दोहा उमकारिमुहतरहरि
पस्यो इहथरिहरिचितलाइ विषयनिषापपरिहरि अजों नरहरिके गुनगाइ ४५ टीका उपदेस
वचन अरेनरउमरूपीयोजोहाथीहै तिनके मुहआगललतिसलकेपस्योहै तोकुअजेहरक
दतांप्रीतिसहितचितलाइकै ऐसीराषि सोकैसीहीकि विषयकोटहलाहैसोतासनजेहै अरुनरके
विषेजोहरकंहतांसिंघसमानहै पुनीभगवानतिनकेगुनगाय ४६ कवित्त उमराजमहा…न
नराजके अंजनमाथअवेतरहारिपस्योहै वेगहीयेहरलाइमहासकवृटनकाउपायकस्यो
है नागकेलालवगाफदबेलउंजेमलमूत्रनेकारनस्योहै हेनरसिंघकेगा… अजोगुनलकेउ
चारनलेपधस्यो ४७ दोहा पलनुपीकअंजनअधर धरेमहावरलाल आजुमिलेसुतलीक
री ललेवनेहोलाल ४८ टीका षंडिता नायिकाकोवेंननायकसो होस्यांमउमारेपलकानके
विषेपांनकीपीकलागीहै औरअधरकेविषेअंजनलग्योहै औरलालकैविषेमहावरलग्योहै
सोप्रातऐसेई आनकेमिलेसोललीसीकीवीहै लालमेकहतऊंकेललेसेवनेहो ४९ कवि
त हरनपीकनेरपलपीतमअंजनजेवकहांतेलग्योहै जावकनालनस्योकरुनाकरदेपतने

रा॰ टी अथ दोहा वाहीकोचितचटपटी धरतअटपटेपाइ लपटबुझावनविरहकी कंपटनरौंत
११ रुआइ अथ टीका धीराअधीरा नायिकाकौंवैनसषीसौंनायकसौं हेकान्हजूतुम मेरेइ
हौंआवनकोंपेरअटपटेसधरतेहौ औरमेरीविरहकीलपटबुझावनकोंउरकेविषेकप
टनेरहीआवनहौ सोकैसोहैकपटकैउनहीअस्त्रीपेजावनेकीचितमेंचटपटीरहतीहै अथ
कवित्त याहीसौनेननठगेवलि रावरेयाहीकीचित्तमेंचुपजागीहै धारतहौपगआपनेओर
सेताहितेमोहनमोहिलगीहै मेरेवियोगदवागनकीलपटेंजुबुझावनकेंऊपेमपगीहै आप
हेकुबेकपटनरेउपनेकविहारनषातिषगीहै अथ दोहा लषिगुरुजनविचिकमलसौ ।
सीसछुवायोस्याम हरिसनमुषकरिआरसी हियेलगाईवाम अथ टीका वोधवहाव स
षीकोवैनसषीसौं हेसषीश्रीस्यामकूंगुरुजनकेवीचजानिकें राधाजूकमलसौंसीसछुवा
यौ वाकोविचार आआरसीमेंमूरतवसतिहै त्योंवामामेरेहीयाकेविषेवसतिहै औरअ
र्थः मांनमोचनपरनलउपाइ सषीकोवैंनसषीसौं हेसषीस्यामजूराधाकोंगुरुजनकेवीचदे
षिकेकमलसौंसीसछुवायो तबराधामांनतजकेहरिजूकेसनमुषआरसीकरिकेआप
नाहीयातेंलगाई अथ कवित्त वैठीहीश्रीवृषभानकुमारिसषीगनमेंजननीसंगमोहै अ ११

सुहामनो आपनपो अनिधन्यजनाथो ॥२२॥ दोहा ॥ कौंन भांति रहहै विरुद अब देषवी मुरारि
५ बीधे मोसों आंनि कै गीधे गीधहि तारि ॥२२॥ टीका ॥ सखि जनमाको कवि विहारी दास कहत है
हो म्हा मुरारि अव देषवी है कि तुम गीध पंषी कौं तारि कै गीधे हो सो अैसो जिनावरघा पें अबा
मो सों आंनि कै बीधे हो सो अैसो विरुद कौंन भांति रहै है एमहापापी है तारनो कठिन है ॥२२॥ क
वित्त भांति भांति नली करि राषि हो न धर आपनो विरद तुम मैं बलिहारी अैसी मनो गीसी आइ परी
अब देषवी बेल बबीले विहारी मो सकपट ते से आइ कै बीधे हो गीधे ही तारि घने अघहारी ॥ ३
रक विमोचन पंकजलोचन सो तुमरा बरी बात क सारी ॥२२॥ दोहा ॥ कहत नटत रीझत षिजत मि
लत षिलत तत जियात ॥ भरे भौन मैं करत है नैननि ही सब बात ॥२४॥ टीका ॥ विलास हाव सषी कै
थेन सषी सों हे सषी राधिका जू अरु कान्ह जू नेत्रां करि कै कछू कहत है अरु नेत्रां ही सों नटत
है अरु नेत्रां ही सों रीझत है अरु नेत्रां ही सों षिजत है सो अैसे आदमी यां तें भौंन भरयो है तिह
न के विषै नैनां ही सों सब बातां करत है ॥२४॥ कवित्त ॥ आपकहू मुकरै अरु रीझत षीजत षेल
त आंन मिलै है और रही बात सुनैं रस की उलजात किरात पें नैरहि लै है भौंन भरे मैं करै सब
बातन नैंनन ही सब रूप गिलै है चातुर रूंघ चल्यै चूंप भरे अति सीलसुनैपहा मनै बयल अब लै है

५ ति कलीहै तिनहीसों बंधानो हुतो उभौरा कैसो हवालन आगे कैगौ एअबहीतें ऐसी बात जांनये १
४० कवित्त याके पराग नहीं अति सुंदर मीठो मकरंद न देष्यो औरकहा कहौ देषितो नी
केहीनेक विकास अर्स्यो नहीं पेष्यो नांतितहीके कलीसों बंध्यो अलि आंतुर याही सों औ र
न लेष्यो यों अबहीतें तुलानो मधुव्रत आगे कहा करिहै सुविसेष्यो ४० दोहा लाल उभौ मारें
विरह की आगनि अनूप अपार सरसे बरसे नीरकुं झरहे मिटैन झार ४१ टीका गामांते
र निरह राधिकाकी सषी कौ वेन कान्ह जूसों हेलाल उभौ मारे विरह की जो आगनि है सो घनीसी
अनूप है सोक्यों कि सरसाई सहित झर करकै नीर बरसत है तो वा राधिका के तन ते वा झर न
मिटत नाहीहै ४१ कवित्त हे गिरधारी उहा रे वियोग की आग अनूपम और हीजांनी याकों लमै
साई पीर न जान तऔर नजांनन वाही की वांनी झा जलके बिरकै नुबुझात पैंया सरसै वरसै घ
नपानी बुंद वमीनकी जो झर लागे लक न मिटे इहू झार करानी ४२ दोहा देह दुलहिया की व
है ज्यों ज्यों जोवन जोत त्यों त्यों लषि सौतन सबे वदन मलिन दुतिहोति ४२ टीका मुग्धा ग्यातये १
पन सषी को वैन सषी सों हे सषी या दुलहिया के सरीर कै विषे ज्यों ज्यों योवन की जोतिव
ढती जात है त्यों त्यों देषि के वाकी सब वहीसों तांके वदन की जो प्रभ मलीन होत है ४२ कवित्त दे
ह मैं ज्यों ज्यों बढै दुति जोवन की गति नई नई बविता ते देषि तें और सुहा यन नेनेन को।

सार है ... ि सबै लषि सैं नैंन पैतनहै रहि रातहियै माहिल्लजै मोहमरोरसुंमे
... तेनैंनकेराजै ॥ अथ दोहा ॥ मंगलबिंदुसुरंग ससिमुषकेसरआडगुरू ॥ ६ ॥
मग ... नयाकियलोचनजगत ॥ अथ टीका ॥ साक्षातदर्शन सषीकौ वेंनसषीसौं है
केसुरंगबिंदुहैसोमंगलहै अरुमुषहैसोचंद्रमाहै केसरकीआड़हैसोबृहस्पते
है वैतीनोंग्रहैतोइकनारीयासाथपर्यो अरुएतीनोंएकठोअस्त्रीकेपर्यासो उनाकुंतो सं
सारकौपांनीनेंरसमयकीनेंहै अरुइनेनायककेनेत्रांकौंमनेहरसमयकीयेहै एनायक
नायिकाकौंअवलोकितहै ॥ अथ कवित्त ॥ सोहतमंगलबिंदुसुरंगकहैसबमंगलमंगलका
री आननसोइससीसमजोंननकेसरआड़गुरूउरधारी नारिकीयकसो संगलपाइकैभा
इबरछितिमेंहमतारी कीनेंघररसरूपविलोचनयोंजगकेबदिकौंहनिहारी ॥ अथ दोहा ॥ ज
गतजनायोजिहसकल सोहरिजान्योनांहि ज्योंआंषिनसबदेषियै आंषिनदेषीजांहि ॥ अथ
टीका ॥ नंदजिनबाकंय रेनरजिनहरियेंसबहीसंसारपरगटकसोहै उनकोंतेजान्योनही
एहैतोनेरोईविण ... ज्योंनोंही पैकैसेकरजान्यो आंषिनकरकैसबनुकौंदेषियतुहै अरुआं
षिनकौंदेषीजातिनांही त्योंऔरकारू ... कि आंषिकौतोआरसीकरिजोंनीजातहै सोयाभ
कोउनर किरीयोंनेंहरिकूंजान्योजातहै ॥ अथ कवित्त ॥ जोंनेजगतनेंनायदयोअरुसोतैंकेब १२

68

नेमलननबेलीयेनेंकऊं याविधबलपैलेहोकहाजू बाकऊबाककहैतैघटेरतिगोड़ो अनोधीस
बालमहाजू ९ अतिअेगीअमबीसीफालउतबोलतनोंहिनेनाअकहाजू नेंकुरसोहीसीनोंहे नऊं
कुर नवसोंहनपायकेपायरहाजू ५२ दोहा दीरघसासनलेकुउष सुषसांईनहिलेल दईदई॥
क्योंकरतहै दईदईसुकबूल ५३ टीका उपदेश कविविहारीदासकहतुहै रेनरजोतेरेतांई
दुषनयोहैतौतूदीरघसासलेकमति अरुसुषनयोहैतोसांईनलेउमति १९ कवित्तराषि सो
अबदईदईकहतोहाइहाइक्योंकरतुहै जोतगवानदीनोसोकबूलकर ५३ कवित्त काहेको
सोचकरैरेनरखावरेदीरघसासनलेउषहीतें साहिबकोंजिननूलेरलीविधितोहिकहेंसुष
कीरूषहीतें ए दईरदईकाहेकोबोलतयोंसिरआइपरीसोसहीतें जोकरतारदई अबतोहि रु गो
कबूलराषिओटारनहीतें ५३ दोहा याअनुरागीचित्तकी गतिसमुझैनहिकोइ ज्योंज्योंबु वलि
हैस्यामरंग त्योंत्योंउजलहोइ ५४ टीका नायकाकोचित्तलगन सषीकोवेनसषीसों हैस षीसों
षी तातेनिकेवलचित्तहीकोअनुरागीदेषेयतुहै औरगैं.. ईजाननतनांहीहै सोकैसेकि वारा
ज्योंस्यामकेरंगविषेबूडतहैसोत्योंत्योंउजलहोतजातुहै ए.. ज्योंस्यामकोंचीनारसहै कवि
नि त्योंत्योंहरषहोतहै ५४ कवित्त याअनुरागमा.. रंगेचितकीगतिकोसमुझैइहजानसषीरी

7

नूलगायेसबकेसबसत्रमलोकअलोककीरीतिनषीरी ज्यों जै ए दूहल ज्यों तिलनीघन
ज्यों मलरंगमेंजाइकषीरी त्यों स्यों सबेमिलमेटघरीकमेंकैगईहै फल ज्यों पलनषीरी ५४ दो
हा हाहा वदनउघारहग सफलकरैसबकोइ राजसरोजननैं नस्यो हसोससीकोहोइ ५५ टी
टीका मोनमोचन सषीकोवेंनराधिकाकासों हेराधेहाहा हवकरमनवदनउघारदेऊ सुंमा
6 ताकुंअवलोकैकैसबकोऊनेत्रसफलकरै औरसरोजनकेरोचनोपरै अरुचंद्रमाकीहांसीक
कै ५५ कवित्त सुंदर सारु नाआरसीसोमुष आयउघारहाहाकरौवारी याकेविलोकितही
सबकेदृगजातिफलनफलऊसोफुलवारी रोजपरैसगरेईसरोजकोकोऊवचेनहिएछविन्यारी
यद्यपिसुंदरसुधासोंनस्योससिहोइहसीअबहीतेंमहारी ५५ दोहा होमतिसुषकरिका
मना उमहिमिलनकीलाल ज्योंरमुषीसीजरतिलषि लगतिअगनिकीज्वाल ५६ टीका
व्याधिदसा राधिकाकीसषीकोवेंनकोन्हजूसों हेकान्हउमांरमिलनकीकामनाकान्हको
सुषकरिकेहेमती सोक्योंकिउमारीकामनाराधिकाकोंसईहैसोवाकोंज्वालामुषीलवानी
कीसीनांईजरतीदेषिकैकहतिहोंकि उमारीलगनिअगनिकीसीज्वालाहै ५६ कवित्त हो
मतिहैसुषकोंकरिकामनालालतिहारेमिलापकेलीने देहनयोअतिछीनतिहारीसोजीय १६

न्नयोमुषबुद्धिविहीने ज्यालमुषीजरिवो करिको करज्योदिनरैन बुके नाक्ष
ज्वालजगन्नेग्रगन्नलषीज्वरतेयहजोनलोजानष्वीने ५६ दोहा सायकरे
नयन रंगेत्रिविधरंगगात रूषोविलषिजलजातडर रुषिजलजातलजात
ना गुनकथनदसा नायककौवैसषीसौं हेसषीरामचंद्रकेनेत्रसायकसमकहतोतीक्ष
हीविलषाद्केकैजलमेडरजातहै औरजलकहतोकमलसोऊतोदेषितेहीलजाइमानके
है ५७ कवित्त हेग्रतियायकसायकसेसमलोचनमायकज्योतिनरहै तीनप्रकारकेरंग
ग्रंगग्रनकेनैनकोजायलरैहै जायडरेजलवीचिकषोलषिजेजगरूकेरूपनरैहै औरछु
इनकीछविकोलषिकेजलजातलजातपरैहै ५७ दोहा मरीकरीकोटरी व्यथा कहाषरीवालि
वारि रहिकराहिरग्रति ग्रवमुषग्रादिनग्रारि ५८ टीका जहतारसा सषीकोवेनसषीसों
हेसषीयामृईपरीहै केनायककाकोईवेधाटरगईहै सोतेषरीक्यौहैयालकेदेषि याइतनीवारा
तोईतोग्रतिकराहिरकररहीषी सोग्रवयाकेमुषतेग्रहिकारोहीकरतनाहीहै ५८ कवि
त्त मरीग्रोकरीग्रोटरीहेव्यथाकेकहातयोरीकदीजातनजोतै तातेकहाषरीवगवलोग्रवलै



10B 7A ग्ररकटसह

ऐसो छबीली को।
रा० टी० देषिसली विधिज्ञोनमहा तैं आगेकरैही कराहिरगईसबसाजरहीयहवातैं
२७ मातकैजातश्रबेमुषआहिनआहकहातैं ५८ दोहा कहानयजोचीबुरे मोमनतोमनसाथ उ
६८ नीजातकितहोतऊ गुनीउनायककहाथ ५८ टीका नायिकापत्री होकोन्हजू मनजोमेंतुमसु
वीबुरीऊंसाचोविबुरमोजोनोमतिसोक्योकि मेरामनतुमारेमनसाथिबसाहे मोकैसीपरे
सुगुनीकितहीकोतुनीजातहे पैनिदानगुनीउनायककेहाथहेसो ५८ कवित्त पीतमनेपर
देसतेंपातीवनाइपठाइदईवनतागी जोविबुरेतोकहानयोमोमनतामनसाथरह्योअनुरा
गी योंउनिजातगुनीकितऊंलकमारउनायककेहाथनलागी योंसुनिकेउकिसीजाकिसीरहीहे
बनचित्तमेंआतुरीजागी ५८ दोहा लषिलोनेलोइननुके कोइनहोइनआज कोनगा
बाजयो कतिरुद्योरतिराज ६० टीका नेत्रशोभा सषीकोवैननायकासों हेनायका
सुतेरेइनलोइनकेकोइनकोलोनेसदेषिकेंसबतहैं केरतिराजकोंनहीगरीबपरनि
करीहे किनाकाहूपरिरुद्योहे ६० कवित्त लोनेसलोयनकोइनकोंलषिआजकेंसों
नयेहै कहौकितियातरंगेरंगमातसुरोषरंगीलीकीवांरवयेहै कोंनगरीबनिवाजहो
सिवाजसकोंरतिसाजनजयोहै तोहीकहौत्रबप्यारीतिहारीसोंकापरमेंनपरजीय २६

84

107

ऊरकटसह्=

नसे = सुवासमों घटै नमहिमामूर पीनसवारे ज्यों तज्यों सोराजानकहूर ॥ ९१ ॥ टीका अ
नाम पीनस रोगवारे कहूरकों सोरा साजो नकै तज्यो तो कहा वाकी सीतलताई
मीनातिनकीमहिमा घटी सो तो मूलहीघटत नाही ॥ ९१ ॥ कवित्त सीतलता बङ्गतो तिन
सुगंध मम्रहसच्यो है सो महिमा कबङ्कं न घटै सुनि आपनै पानि विरं चिरच्यो है पीनस
वालो कहा नयो घ्रांन के रोगतें देहतच्यो है लै अपनै कर संधिकहूरकों सोराई जो निम्न
च्यो है ॥ ९२ ॥ दोहा कागलपर लिषतन वनै कहत संदेसलजात कहिहै सब तेरो हियो मे
री वात ॥ ९२ ॥ टीका पत्री नाइककी है राधे कागदपर तो लिष्यो जात नाही है ओर संदे
सो कहिते लाज आवतु है सो या तन मेरे हियाकी जा तंत वात है सो सब ही तेरो हियो तेकुं कहैदेत
॥ ९२ ॥ कवित्त कागदके पर तो लिषतें न वनै इहवात कितै कहीयेजू ओर सुनौ कहूवायपवे
संदेस न लाज न कैरहीयेजू सो सब तेरो हियो कहिहै लषि डरकद सा अपनी गहीयेजू मेरी
हीयकी वात भली विध जान कहीयो अवै लरीयेजू ॥ ९३ ॥ दोहा जबजबवेसुधिकीजीये तब
बेही सुधिजो हि आंषि नु आंषि लगीरहै ओंषपा लागत नाहि ॥ ९३ ॥ टीका जनता दसा सषी कें
नायकसों हैदई जब जब वे कहता राधा तनकी सुधिमे करियतु है तब तो वाकी सब हीस

9

...जो तरहै तहै और आंषि सों आंषि लागी रहतु है पै बिनु ही आंषि लागति नांही है ६२ कवित्त
...हरषी तिकौ रीति अनोषी लषी कहूं जानी न जाति कहा लागति है चितचाह की चोंप चढी ये रहे...
...मन चित घाउ रपागति है नित आंषिन सों वह आंषि लगी रहै आंषिन कें सेकें लागति है जब
...जब तैं सुधि कीजत है तब ही सुधि जीय की जाति है ६३ दोहा बंधु न ए पकादीन के कों ता...
6 ...रघुराइ तूं गे शफि रउ है हो जू गे विरुद कहाइ ६४ टीका नक्ति उनवाको कवि विहारीदास कु...
...तुहे हे रघुराइ तुम कों न से दीन कहत लोगरी बतिन के बंधु कहत तो वमन ए हो अरु कोन को
...है तो है तुम यों ही जूगे से विरुद कहाइ के वाके २ से न ए फिरत है हो ६४ कवित्त बंधु न एक दीना
...नादीन कें बंधु कहे सब कोई हे रघुराइ को तास्यो महाधम तारक विरद की वेली ये वोई औ
...ई तूं वे फिरो हो करो हो कहा बक हो जिय होइ जू वे ही विरद कहाय क आपनो जाइ कै
...घोई ६४ दोहा कोन सुनै कासो कहो सुरत विसारी नाह वदावदी ज्यो लेतु है ए
...२ ६५ टीका प्रोषितपतिका नायका को वैन सखी सों हे सखी मेरा प्रकार कोन सु
...मकहो [illegible] ए कहै तें गरज काई सरै नहीं अरु जासो सरै सो नाह ने तो आवन को
मा. ...दीबा है सो एवदरा बुरे राह के चलने वारे वदावदी सों मेरा जिय कों लीये जातु है २६

त्रि

9A

10A नसकं नंतोसिषासिषायकेहारे ।। दोहा ।। रहतिनरएजयसाहिसुष सिवगेनकी।तोम
सीजै निराषरकचलै लेलाषनकोभोज ।। टीका ।। राजाजैसिंघकौचोरनसारीतोम
ऊरकटसह= रचूंन उहै राजाजैसिंघजूकोमुषरनकेंविषैजोअरिकीलाषाकीफौजकुमति ऊलेति
यकं मतरैनाजजाय और जोकोऊनिराषरकरतौअनपढौकैसोअमरस ऊलकं १
कीफौजलेकैजाय ।। दोहा ।। हीयासुमीसचदाइलै आबीनांतिअजारकेपा
तलियो ताकोइषहिनफेरि ।। टीका ।। अन्योक रेनरतेरतांई अवहे ।। कवि
नांतिअथरकैमाधचदाइलेऊं सोकौंकिजिनपासतेंसुबलीयोचनघरहाय
सोफिरमतिनो ।। कवित्त ।। तोहिदयोकरतारकरारकैसीसचढाइहै तोइहना
करैजिनमांनसमांनसनांतिनलीकरिकोंनअवरै जाहीपेसुरकचौसरचंद
जनहीअहीऔरसवैरै आपनेबंदिमयानपनोसबताकोदयो नायिकाकै १
दोहा लरवनकनककपोलडति विचविचहीरविकांन तालऊताकेसंकेप
बिऊसमान ।। टीका ।। कपोलसोनां सषीकोवनसषीमैं हेसषीरहीलेउहै ।।
वरकहतेअकोटांकीइतिसौजेकपोलनिकेइतिकेविचिमैचूनींदनचंदसुगंध

10

बिहा॰ टी॰ २२

अरु लखन के जरी लाल चूनी जो चमकत है सो हो ता के चौका ति॑ कवित्त
कवित्त आजकी बनक बरनन न बनति तेरी छबि की छटान की घ थेर है जो
तिस रस सिंगार को अपार रूप जोबन की कांति जगी जोति सी जगि तै है जब
को ललित कपोलन की दुति में समाइ गयो अदभुत लगति है ६५ दोहा कौ ता
चमकति एनो लाल लाल चुनी चौका बिकसी लगति है दास क
रहत जु मिलि जिय साथ सो मन बंधिन सों पिय पिय सों तिन के [illegible] नको
रा नायिका को बैन नायक सों हे पिय मैं तो जानति हुती कि मन मैं कछु दोना
जियत रहत है सो मन बांधिन सों पी ये पीतम सों तिन के अबेरा पन ई औ
प सो का कहि मेरे वियोग व्यार बहै है ताके मरोर करोर हूँ बार सो डके
हैहै ६६ दोहा कुंज भवन तजि भवन को चलिये नंदकिसोर फूलत हैं ए
का हट चि कुंज और ६७ टीका या को बिदग्धा नायिका को बैन नायक को न सु
ब कुंज भवन को छोड़ि कै भवन को चलिये सो क्यों कि ए यारी आवन को
सो गुलाब की कली यां फूलति है या को अलि आय इहै है कौ ये जात है
[illegible] जब सो मिल के जिय साथ रहे हैं

× कवित्त रमौ [illegible]

२६

10B नसेऊंनकोंबांधि छिपानहींनोंनकुंगोंनकरोगिरधारी तारिकादीनलईसबगोंनकी॥ तोम
सीञ्योतिकहांननिहारी फूलतिहोछुगुलाबकलीचटकाहटकी चिऊंऔरनलारी ताम
ऊरकटसह= रखूननकेरवराजतवाजतमंषमुनेसुषकारी ॥८॥ दोहा कहतनदेवरकीकुमति कुलति
यकलहफरोइ पिंजरगनिमंजारहिग सुकज्योंसूकतजाइ ॥८॥ टीका बीतलरस कुलक १
स्त्रीहैसोकलहतेंमरती जोदेवरकीकुमतिकाहूसेंकहतनाहीहै अरुज्योंमंजारकेपा
सशुकसरितपिंजरोपर्योहै अरुशुकसूकतजातहै त्योंस्त्रीयासूकतजातहै ॥८॥ कवि
त देवरकीकबहांनकहेकबुवातबुरीबिनबारमईहै आपकुलीनवधूअपनेघरहोय
कलेसयेसीतलईहै भीतरसोंपिंजराकेसुआअतिसूकतजातमंजारवईहै सोईहना
रिमहादुषसोंअबलहिसंकोचसुंसूकगईहै ॥८॥ दोहा औरैरांतिनएबए बौसरचंद
नचंद पतिबिनुअतिपारतनिपत मारतमारतमंद ॥८॥ टीका उद्वेगदसा नायिकाके १
वेनसषीसों हेसषीअबएबौरहारचंदनऔरचंद मैं औरहीभांतिकेनएहैसोकैसेंकेप
तिविनाअतिविपतपारतहै अरुमंदमारतकहतांमंदपवनहैसोमोमारेहीलेतुहै ॥८॥
कवित मोहिकरैअविवेकतअचेतहिऔरहीभांतिनयेअवभेई बौसरचंदनचंदसुगंध



औरप

स० टी० औ मारत मारुत मंद घरेई पीत मबांहि दैये परदेस कों ता दिन लेइ हृनां तिक रेई पारत
२४ मोहू विपत्ति घनी मधि सांचीक कुं इहपीर धरेई ८८ दोहा कोक कोरिक संग्रहौ कोक ला
॥ षदृ नार सोसंपति यदुपति सदा विपति विदारण हार ८९ टीका नक्ति जन वाक्य कवि बिहारीदा
सकहतु है और कोक कोरक लषौ अथवा कोकंदसक को रिलषौ पैमेरे ता विपति को विदारन हार
जो यदुपति है सोई सदा संपति है ८९ कवित्त कोउ रूपैया क रोर गहो अरु कोऊ तो लाषह ज
र निराषौ ताही तें दान रु लोग क के गहै तीन पदारथ के सुष चाषौ मेरे तो काय मनो वच वोध ते
वो हि दयै अभिलाष पतिलाषौ याद वकों पति है सब संपति दूर विपति करै मुह ताषौ ९० दोहा
सासु चलन न पावत निगम मगु जग उपज्यो अति त्रास कुच उतंग गिरवर गह्यो मैंना में नुम वास
९१ टीका नया न करस नायिका को वेन सषी सों हे सषी निगम मारग चलन नें पावत नाही
सो क्यों कै मैंन रूपी मैंना तिन कों कुच रूप उतंग गिरवर पकरयो है तातें जगत कों त्रास उपज्यो
है ९१ कवित्त पंथ चलै जु निगम्म कोनेक कुपंथि मवैप छिता य रह्यो है एक हि बार नयो बकु
त्रास जगत्म मैं आनि जंजाल बयो है ऊंचे सरोज पहार के ऊपर आप मनो वास वसाय गयो है वि
सरेषो चित्त दैवैन रहि काऊ पै मैंना मनोज मवास मगस्यो है ९१ दोहा त्रिबली नाभि दिषाय कै सिर

11A हकिसकुचसमांहि गलीअलीकीओटकै चलीनलीविधचाहि ॥२॥ टीका उलापदमा सषी
कोंचेंननायकसों होलाल राधकोंन्हमोकुं ऐसेकसोकि ताकोंनेकुंती जोसिरहकिकेहतोंने
हनोतिनकेंसंतावनेंतेंसऊंचीतामेनासिसाहितत्रिबलीदिषाई अरुनलीविधसुचाहिअरु
अलीकीतरहकेंगलीमेंगई सामेंकेकहतिहेंताकोंनकुंती ॥२॥ कवित्त आपनीनासिहि
षाइबलीत्रबलिबलीदिषाई अरुनली यह्मोरदिषायरोमावलिकारी ऐसीविराजतहैइ
नकोंबविमानोमनोजनेंआपसंवारी अंगसंतासिसमाहिदुरकेरोसिरवाहीकेंबितसकोच
महारी आलीओओटकीयेहुचलीगईसांमनलीविधिनैननिहारी ॥२॥ दोहा देषतनें बु
रेकहरज्यों उपैजाइजिनलाल बिनबिनजातपरीषरी बीनबदीलीबाल ॥२॥ टीका जैसें
तादसा सषीकोवेंननायकसों होलालराधकेतांईऊरेसेदेषियहुहै कहरकीसीनांई उ
पैकहतांउफिजिनजायकेंबबीलीबालबिननबिनमेंपरीषरीछीनहोतजातुहै ॥२॥ कवित्त दे
षतहेंजुऊरेईंकहरलोंजाइवहेजिनलालबिचारी बालैनहींओविलोकितताकुपैऐसीविचे
गदसाहैतिहारी होतपरीओषरीबिनहीबिनताकुनहीछिनमेंबालिहारी षायेकछुनपीये
कछूआपतेबीनबवीलीयबालनिहारी ॥२॥ दोहा हसिउतारिहियतेंदई उमऊंतिहि

रं
२५
12

दिनलाल राषतप्रांनकप्ररज्यौं बढ़ैचकुटनीमाल ॥ अथ टीका ॥ उन्हतादसा सषीकौंदेषैंनना
यकसौं हेलालवाजोतुमन्आपनेहीयातेउतारञ्यरुहेसिकैलिहिदिनचुहटनीकहतोंषि
रमीतिनकोमालादीनीकुतीसोअबवामालाराषकेप्रांनकोंज्योंकरकोंचुहटनीराषे॥
ह्योराषतहै ॥ अथ कबित्त ॥ वादिनवाहिउतारदईहसिआपनेहीयतेंउरकहरांनो लालति
हारीचिकुटनीमालसुराषितिप्रांननकोंसुषसोंनो ज्योंघनसारररहैमषिकेसंगत्यौरउपाइ
नहीहमजोंनो ॥ ज्यों तुमनेकनिहारोललीविधवाहीकोहेइसबेमननमांनो ॥ अथ दोहा ॥ द्वैज
सुधारीधितिकला वहिलषिदीवलगाइ ॥ मांनोअगासअगस्तिया एकैकरीलषाइ ॥ अथ
देषि टीका ॥ करुनारस अन्योक्ति ॥ रैनरआगासकैविषैद्वैजकोचंद्रमाकौंकिरनि अरुकलावा॥ कहतो
कोदीवलगाइकैं योहीजचंद्रमाहरनकुतोसोअबमांनोअगस्तियाकीएकैविधिकलोसा
रसोलषाइमांनहोतहो ॥ अथ कबि० ॥ हेसजनीउहिदेषनलीविधिदीवलगायप्रनीचिदसाको
द्वैजसुधाकरकोचुकलाबविराजतहैंअतितिन्मादिनिसाको एककलीहैअगासअगा॥
स्तिकाअंकिपकोमनुजानतिवाको एईअबैउपमाकहिआवतहेरिरहीउपमासबनाको॥
अथ दोहा गद्दरानेतननजोवनी [illegible] दिग करैगवारसुमार २५

12A

५६ टीका नाइककीपत्री प्रलापदसा नायककोंवेनसषीसों हेसषीगदरानेकहतांजोके
सोतनुहै औरगोरोरंगहै औरसिंगारकेविषैएपनकीआनंदहै सोनेत्रलखेतासाकरिकेज्यो
फंउठोदेतहै गोतेगवारसवारकरलेतहै सोकोनहै ५६ कवित्त हेगदरानेसरीरकोंगोरटी
सोचितचोरटीओरनऐसी सारीचनीपचतोरनकोंअरुएपनआरिसिलारअनेसी फुंअ
ढाईदेतबहैहवलैहगरूपनिकाईकहीनपरेसी बांदिदईअवलोककीलीकगमारसुम
रकैरेनववेसी ५६ दोहा सिसुताअमल तगीरसुनि नएआरमिलिमैंन कहोहोतहै
कोनके एकसवातीनेन ५७ टीका नायकाकीउहगदसा नेत्रसोना सषीकोवेननायक
सों होकोंन्हएनेनपहिलैतोसिसुताकहतांबालकतिनकेसषाईकुते सोअबसिसुताकोंअ
मललतगीरहयोजानकेअरुमैनसोंमिलिकेंओरहीकेगए सोमैंकहतहों एनेनकसवातीहै
सोक्योंकसवातीसिपाईकाहूकोकैनहींसोंएनेत्रकाहूकेनोंहीकै ५७ कवित्त आमिल
हेहमैहोत तगीरसुन्योसिसुताको तबैसकुचोंनी आवतजोवनकेअपनालीयानाली अ
नोपमहासुषदोंनी अकसवातीयहोतनकाहूकेमैंनसेनेंनमिलेसुषसांनी सषीचितोंनी
यदेषतसोअबवंकाविलोकतओसरसांनी ५७ दोहा सदजसविकनसांमरुचि सुहे

२६
13

सुगंधसुकुमार गनतुनमननमधअपघरुषि विधुरेसुषरेबार ७८ टीका केससोना सषी
सोंचैननायकसों होकोनराधिकाकेवारकैसेहै कि सुनावेंतोचीकनेहै अरुकालीहवि
है अरुनिर्मलहै अरुनलीवासुहै अरुसुकुमालहै अरुसुघराईतेविधुरेसेहै सोऐसेवा
रतिनकरिकैराधारूपगुअपगुकरतेतोउजैनसजननतिनकोदेषिकैमनुतैगनतिनाहीहै ७
९ कवित्त हैअतिरामसचिक्कनस्यांमसुगंधकेधामहैकोरेघनेहै जोंकतेलोबेओवांम
कोवामहै वेईअनोपमबालवनेहै ऐसेसुदेससुबेविधुरेलषिपंथअपंथनचितगा
नेहै योंबविबाकअजांनलोंस्यामसुजांनहोहारतिकोमननेहै ८० दोहा सुडतिडरा
ईडरतिनहि अगटकरतरतिरूप गुटेपीकेंओरेउवी लालीओवअनूप ८० टीका
सुरतांत सषीकोचैननायकासों हेराधेयानलीडतिविपाईछिपतनोहीहै यातेरत
कीयांकोरूपपरगटकरतहै सोकैसेकि पानकोपीककीलालीताकोबांहिकैतरेओ
वकैविषेअनूपसीलालीउवीहै ८१ कवित्त हेसषीतैंरतिकीनीसलीनईकेसडरारे
डरैहमजांनी योंरतिरूपवन्योअतिसुंदरताहीनेंआनकहीहैनिसांनी पीवंबुटैतेउ क॰
अवओरहीलालीअनोपमओवअजांनी ऐसीकहैतेंगईगहिलाजननैंननमैंअति २६

13A. लाजलजांनी ८८ दोहा गहिगाढेपरी उपट्यौहारहियैनै आन्यौमोरमतंगमनु मारि
गुरैरनुमैन १०० टीका षीरोषहिता नायकाकौवैननायकसौं हाकौंन्हउमारेयौंआन
कौहारहीयाकैविषैउघरयौनांहीहै यातैउमारोमननरूपमतंगहै तिनकौंमैनकरलांकोमन
वतिनगिलांलांसौंमारकैमोउआन्यौहै सोवेगिलोलागहिकैषाढापरीहै १०० कवित्त येश
गडेगडिगाढापरीअतिहोइनहारहीयैउपट्योई आन्योहैमोरिमतंगमहामनमारिगला
लनमैनरस्योई आजकहारनिरंगरमैकऊकोंन्हरआपसौंपतघट्योई जाननतनांहिनवो
रऊवोरहिवोललतहांअहोवैनलख्योई १०० दोहा नैंकनकरसीविरहकर नेहलताऊमा
लात नितनितहोतहरीहरी षरीफारतेजात १ टीका सषीकीपत्री हाकौंन्हउमारेविरह
कीकरनहैसोअगनिकीकलसारसीहै तोऊनेहकीवेलमीनेकहीऊमलातिनांहीहै सामें
नितप्रतनीकैह्वेजातहै अरुफारउरतिकरलांफैला वक्कैतीजातहै १ कवित्त नेहलतानां
हिनेकफुरीनगईऊमलाइवियोगकेफारै तेजतनाईअईरहेंनीतरमानोंदवागम्रसम
नपजारै वासरवासरहोतहरीहरीपावससौंवनवीथिविहारै फैलरहीअतिपातनसौं
अवकातरतोनईजातनिहारै १ दोहा हेरिहींहोरेगगनतें परी परीसीटूट षरीषा

स॰टी
२८
15

हैसोभालहै अरुसमरहैसो नीलहै सोतरुनरूपीमृगहै तिनकोफसीमतरिकैरहनुहै ६
कवित्त ज्योंरमधारिकेंजोंनतहैअरुनोहकबांनकहैसवकोई आपनीकानिसबैतजिकैबाधि
कारकहैरतिनाइकसोई मारतहैअतिपेजककरैमृगवारीहीकोयोंतरुनाईमेंहोई केफिगकैहटि
केऊगिनालहीचंदकबानकेलेतनिपोई ६ दोहा नीकोलसततेलेउफ्फवरि हीकोजरतजराइ
छबिहिवदावतुरविमनो ससिमंडलमेंआइ ७ टीका तिलकसोला सखीकोवेनसखीसो
हैसखीराधिकाकेलिलारकेविषेमांनकजरावतेजस्पोरीकोनलासोसोनतहै सोमानोससि
मंडलकेविषेरविआइकेआपनीछविकोवढावतुहै ७ कवित्त है अतिसुंदरआननओपलि
लारकैवीचलसैअतितिहीको लालजवाहरसोंजरिकैअहोजांनतहोंमननावतपीको वाकी
अनोपमआपवनीमांनोंआसवहैरातिराजबनीको आइकेउपवढावतहै ससिमंडलवी
चिमनोरविनीको ७ दोहा जेतासंपतिरूपनके तेतीसुमतिजोर वढतजातज्योंज्योंउरजे
त्योंत्योंहोतकवोर ८ टीका कविविहारीदासकहतहै रूपनआदमीकेजेतीसंपतकीजोर
क तेतीहीताकेसुमतिकै सोकैसोपर कैअरुस्त्रीकेज्योंज्योंउरोजचढेत्योंत्योंकविनहोतजाइ
त्यों ८ कवित्त लोहिकऊंमुनियासवकीगतिएकअनेकसुनायलसेरै याहीमेंयाविषै २८

15A

सरबकेलतत्र्प्राड्हपरीकबकुं निकमेरे नेनीयसंपतिहोतिहे सुप
वमेरे ज्योंज्यों वढेहे ज्ञातिकुवेसराजनन्त्योंत्योंछिजातकछोरकमेरे
रीटप्यौ तरलतेरीनाकोन परयोंमनोसुरसरिसलिलमे रविप्रति
तसीनासाना अधरंगमसरूप सषीकोवेननायकसों होकोनट्ग
तरलअमकोटाकोनकेविषेसोचेहे साकेसोहे रविकोप्रतिविंब
होतिनकेविषेपस्योसोनेमनोसोंसोनतहे ७ कवित्त काकुमुहाग
ओपतसोनालप्योहे गकुलजोन्हमीसारीटप्योनहिजातिकहोवड
रंगनिनीरसमीरनिजानतपावसकालउनप्योहे ओनेपस्योरविकोप्रति
राजतप्योहे ७ दोहा हमहारीकेकेहहा पाइनुपास्योप्यार होतकहीं
स्योर १० टीका सषीकर्मोषिजवो सषीकोवेननायकसों हेराधेहमजे
हारी औरप्यौकोहीपाइनुपास्योहे तधेतनरेरोंसकीयहेसोअजुं
कवित्त हारिरहीहमकेकेरहा सबयों अबलोंनहीवाततिहारी पाइ
मसोहनईनहीनोहेतिहारी हमजनी अजहोंकुछचाहतऐसकीय

16

रीरेगुं त्योंरकरैरहीपाहनतें अतिपीनमहारी १० दोहा सतरसोंरहरूवे
मनुनीव कहाकरौकैमातहरि हेरिहसोंहीदीव ११ टीका कोनमोचन
वैनसषीसो हैसषीमरीनेंाहासतरसोहै और मेरेवचनहीतोकूं षके
मेकविनकारेल्योंवेहरिकोंदेषतेंहीमेरीदीवहसोंहीजाइ तिनसमैकें
हकरोंमनरोहीसषीसुनिवेनकहेंअतिरूपपरूवे नीवकुंवार करै
बहूवनहूपे हेरसहींनईजातअवेहरडीवहसोंहीसुहातनरूवे मेरो
रव्वजनरूवनरूपनरूपे १२ दोहा चाहिलषलोइनलगे कोनगुनवतन
बाहिहिय जोकवारमीहोति १३ टीका गुनकथनदसा सर्वानुराग
हैसषीराधकोंलष्योंपवै और ऐसीकोंनअस्त्रीकोंज्यो तिहै केजासै
कीसरीरकीवायातिनआगेजोन्हकहतीचंदमाकीचांदनी तिका
विन ऐसीकोंनारिनिहारमनोहरयाकेनिहारतेंपसपगोई जाकि
नहैताकीतिलोकमेजोनिजगोई जाकेसरीरकीबांहलवेदिगवं
ऐसीकपालतजोबनिरावरी ऐसेकोयेतेंसनेहनगोई १४ दो

१८ग

मा हरिआननकै ईस विरहज्वालजरिवौ लखै मरिवौ नई असीस १३ टीका जहतादसा सषी
कौ वैन नायकसौं हो हरि राधाकै आननकै ईस मेवाकै तनको दसा उमसौं कैसी कहौं तुमारे विर
हकी ज्वाला विषै असीज रनीदीतीकै मरनेसी नई है १३ हे हरि आननके ईस कहा कहौं वाकी दसा
सुनिक्यौं न निहारौ ज्वालमै रैनि दिवा जरि १ यौ करत्रसो दई है वियोगतिहारौ वेग चलौ अति ब
नतई सषी वांकेन कौं वनकौ तु विहारौ यौं ब्रजकी युवती सगरी कहै संघार तक्यौं न संघार
नहारौ १३ दोहा ज्यौं ज्यौं जोवन जेठदिन कुंच मति अति अधिकाति त्यौं त्यौं छिन छकहिं छिपा
अति४ छीन परति नित जाति १४ टीका मुग्धा ग्याते अरु थी अरितवर्ननै दोय युत ज्यौं जेठमासको
दिन अरु अस्त्री मुगधाकै कुंच ऽन दोनौं की मति घनी सी अधिकी होती जानहै और त्यौं त्यौं
जेठमासकी राति अरु मुग्धा स्त्री कटि छिन छिन विषै छीन नित परत जात है १४ कवित्त ज्यौं ज्यौं
व ढै जोवन जेठके वासर दीरघ होइ विचारौ और सुनौ कुचरूप मती वाढै जात है अचान कहौ
तपसारौ त्यौं त्यौं छिपा कटि छीन छीनौ छिन लोक कहै नित होत उसारौ ऐसो प्रसंग मिले बड़
होन हिनायक नायका मानो वसारौ १५ दोहा तेहतरेर त्यौं फकरि कतकरीयत हग लाल
ली कनहे यह पीककी स्रुति मन फलके कपोल १५ टीका मध्याधीरा सषी कौं वैन राधिका

17

र० ली. सों हे राधे यापीक की सी लीक कपोल के विषै जो निकें तें स्यों रच्यो तेरे रे करि कै डिग को लोलक
३० रलोचपल कातिकरत है याते नायक के पीक की लीक नाही है याते कपोल के विषै स्मृति कों न कहला:
तिनके मनि तिन की मनि तिन को लाल फल को सीर है १५ दोहा तेरे तरी रेई स्यो रकरै रक तकोजी
ये लोचन लोल लख्यानी तेरे नयो त्रम है इह जो नत और न जो नत जे जे सयानी पीक की लीक
सी ये मरि जो न तेरो षसं तापकोरी तिन जानी ऐसे ऐसे स्मृति के मन को फल कै रहि कपोल न
को मन मानी १५ दोहा नेकुं न जानी परति अति पस्यो विरह तनु बाम उठत दिये लो नंद ह
रि ली ये तिहारे नाम १६ टीका उन्माद दसा सषी कोवे नन नायक सों हो हरि राधिका के तनु को
विरह को बाम कहतो बाव कहा औ सो पस्यो है सो नेक रही जानी परत नाही है पे लगारे के उमारे
नाम लीये ते उनमाद कहतो समा वज्ञा वे तेरे रसा प ऊ वे [illegible] सो जंव ति है १६ कवित्त नेक
न जानी परे अति सूक्षम होय गयो तन बाम महा है ऐसी वियोग दवाग्नि छीन कही परे बाम
की मरोर लहा है दीपक की जैसी नोहि उवे बुझ कै र अहो ऊ ष्य महा है हे हरि रावरो नाम ली
ये ते संतारि उवे कर कै गुह हा है १६ दोहा नरत्ना ली चाली निसा चटका ली धुनि कीन र
श्रीली तिपाली झूनते आपवन माली न १७ टीका उक्ता नायका को वेन सषी सों हे सषी निसा ३०

17A

तौ चाली है अरननकरत्तो आकासतिनकै विषैत्नालीसी नई है और वटकालीद नैं धुने
कीनी है सो असुरअजोंजो वनमाली आए नां ही है तो जांनीयेकि और स्त्रीसों रतिपालकीनी
है १७ कवित्त आई नई ननताली घवाली सीचेवलवालिनिसा करलीनी और नोरकी
औरनिसांनी सुनो उमपाविनैं जालसवेधंकनिकीनी कोकमिली मनलीतर आवती जांन
तिहोरति और केदीनी आपनहीवनमाली निहारत जानतआली नईमतिहीनी १७ दो
हा सोवतसुपनैं स्यांमघन मिलिहलिहरतिवियोग तबहीटराकितहोगई नीदौनीदन
जोग १८ टीका सुपनमिलन नायकाको वेन सखीसों हे सखीसुणतौ मासोंश्री घनस्यांम
नैसांयनैं सुपनाकै विषै आयकै हिलमिलकैं वियोगकोहत्योचाहतुहै सोतिन समैं ज्ञोनं
मेंटरिकैकि नहीकोजानिरहीतो अवयानींदहै सो निंदवायोगहै १८ कवित्त सोवतहीसु
पनैं मिलिस्यांमकोप्यारीवियोगविदाकैदीयोहै रतिनषबतआपरसैनहासविलासविवे
कैककीयोहै ताछिनतैंटरिकैकितकुंगईनीदननीदनजोगलियोहै नरैदपुलैनलहैकहैपी
तमआपनेंहीयवियोगदीयोहै १८ दोहा कैसेछोटेनरननतैं सरतवडेकेकांम मढोदमा
मोनातुकौ कहिद्हाकेचांम १९ टीका अस्मानं कविविहारीदासकहतुहै नोछोटान

18

विहा० टी० ३१

रके तिनसों यह आदमी कौ कांम के से मरम कै एनाद नाम रै नांही याकौ द्रष्टांत यों चूहा के वां

म तें कु बके समद्यौ जातु है एतावतानन कारांम द्यौ जाइ दै १८ कवित्त जाकौ जितौ जगदी

स रच्यौ बेलु ताकौ कवीसिर तैतांई नारौ तात विचार यहै अपने जोयकौ ऊरद्याम सिसो बविव २

रौ वोटै सैकांम वहै न सरै बड़के तांई साहस कै पविहारी कोटि करो परि चूहा के चांम सौं क्यौ

ऊमद्यौ नहि जात नगारौ १८ दोहा संपति के सु सुदे मनर नव तिड हत डकवोनि विसदम

विनौ तर ऊच नीच नर नरम त्रं एकौ हानि १० टीका यसावीक कवि विहारीदास कहतु है सुदे

स के विषै कैसों कै अरु तेजे आदमी कै नचे तिहांजे सो संपति है एदो तुं एक विध है और ऊच

अनैं नीच नर तिनके संतरय मों है सो तौ विनौ है अरु नरम न एतं विनौ की हानि है १० कवि

त संपति के सुसदेस के जे नर एक ही वांनि न वे र्हई है नो ये गुन धार वहे सुकमार है नेकन ही

इनमें कबहु ऊनो आवत जात विनौ ऊच नीच न दोत ऊचो र ऊचो रा विड़नो ऐसो सुनाय वि

चारत ही सुनिकौ यमनों विघ होत ही रड़नो १० दोहा कहत सबै कवि कमल से मो मत नैन

८ पषांन नतर ऊ कैंत इनवीय लगत उपजत विरह कृशांन ११ टीका उहेगदसा नाइका अग्नि

कौ वेन सबी सो हैं सी सब ही कवी सरनेत्रां कौ कमल समाख कहतु है पैं में तो मति करि कैं नेत्र २१

18A

कोपथरसारसमेजोनतहों सोकौ जेपथरनकै तोइनकै विषे औरइसंरकैनेत्रां सोंलागेतेवे
रहरूपीरूपानकहोतेकहे २१ कवित्त जेजनएकविराजतसिरामनिपंकजसकरिकेउना
गाये योंजुनमाननतेहोंनयनोंलषिपांहनएअपनेंमतिआएजोकोउमानेनहीइनवातननें २
हितोकोइनुआरलगाये आइअवानकहालनलगेअतिक्योअबकेविरहाभिजगाये
पानि अग्नि २१ दोहा हरिशवरिशउगतिअति करिशथकोउपाइ वाकोहारखलवेदज्यों तोरसजाम X जल
यतजाय २२ टीका व्याधिमिलन सषीकोवेननायकसों होकांन्हराधिकाजूअतिहरि
हरिअरुवरिशकरिकेउवसिहेसोहमतोइलाजकरिकेवाकीहें सोसंकहतहों सोज्योंज्वरकोव
दगमावे त्योंयाहीकोतेरमिलननेकोरसजाइपकवैतोवाकोरागजाइ २२ कवित्त हेहरिकेहरि
केवरिकेवरिजुउविकेअतिआतुरदोरी ऐसीअचांनकआयफुकीकरिकेउपचारथकेनन
गोरी झाहिजेआनलयोतननमेंजुरताकीव्यथालेनईअतिवोरी तेरिसजाइहांलोवलिवेदज्यु x तुजाइ x
लालनिहारकिसोरी २२ दोहा यहविनसतिनजुराधिके जगतवनोजमुलेऊ जुरीविषा
मझरजाईये आइसुदरसनदेऊ २३ टीका विनोवर्णनं सषीकोवेननायकों होकांन्हया
राधिकारूपीनगहेतिनकोविनसतोराधिकेसंसारकेविषेघनोसोजुमुल्योसोकैसेकि वि

बिहा० टी
३१

पमर्करतें मरीसीजातिहै सोनाकों आनिके तुमारी नन्नोसादरसमनहै सोद्यो ३२ कवित्त अ
इन मैं सुचिन सैं नगराचिकैं याजगवीचिवमे मसुलीजै बेविरहदइनकी हिगकों हरि साकुन है
सुकद्यो आवकीजै जात जरी विषमर्कर मों फिर नई आति छीन कहै होइहजी जै ओर सउपायकी
यै नैधरैधरजायै आइ सुंदरसमन दीजै ३३ दोहा वियसो तिन देषत दई अपने हियतें ला
ल फिरत महमही सबबनु मैं उही मरगजी माल ३३ टीका प्रेमगर्विता सषीको वेन सषी सों
है सषी राधिकाकों श्री लालजू अपनें हियतें ... उतारिकें मरगजी करि तो मसली सी मा
ला बीजी सो ता देषतां दीनी है सो अव उही मरगजी माला परहिस्यां सबबनमें फूली सी फिरतु है
३३ कवित्त सोतिके लषत मनभावन मयाकै दीनी उर तैं उतारि परगट कीनी रति है तबही
तें हसति विहसति कुलसति विलसति तिलसति गुमान भरी आति है मन में मुदित फूली
तन मैं समाति नांही चलसि ... त अनुराग औलहति है मरगजी माला वहीउर धरै वाला चहा
ड हद हरी आसिन के कुंज मैं फिराति है ३४ दोहा वन्नोवनीलैलालकों नवलनेहलहिनारि प
हनति हूं मति लाइ उर पहरति धरति उतारि ३४ टीका प्रेमगर्विता सषीको वेन सषी सों है
सषी बनी लाल नाल कों जो हाथ कैवलो नवा नेह की नारि इनां मलसो अब वो बन्नाकों देष ३१

19A तिहेचूमतिहै उरसोंलगावतिहै पहरतिहै सीउतारिधरतिहै २५ कवित्त नंदबबाकेगवीले
लेलोकोवलोलहिनारिसबैसुषमानी नेहनयेजुरीयोसुलयोकेआपनहीयह राधिकारा
नी चाहतिहै बिनहीबिनदेवतिलावतिहैउरमेंउरमांनी लेपहिरैबहरोजउतारतराषति
हैधरनेहदानिसानी २५ दोहा नितसोंसोहांसो वचन मनोसुइहञ्जु मान विरहअगनि
लपकनसकै रूपटनमीचसिचांन २६ टीका प्रोषितपतिका सषीकोवैनसषीसों हेस
षीयाराधाकोमोतिआगेहेसोकहतोजोवजोवचनोहै सोयाकोनितसोंसोसोरहउहै कैसे
वचउहै पैएकवचवाकोउनमांनजानतहोकि इनबातनतैबचउहै कि वाकोविरहअगन
तिन्कीजालपटआवतिहै तिनकरिकैमीचरूपीसिचांनोरूपटकरिसकउनाहीहै २६
क कवित्त हेसोवचैसाईसेसोरहैनितक्योंनाहिलेतइनैननचारी मैंजुनमानलहीउनकीग
तिकाहीकेजोयनयोडषनारी जातनिकालगीविरहागनिचालपरेनहींजातसंनारी
पीचसिंचानकैकेझपटैमनहारिरह्योअबनाहिनिहारी २६ दोहा थाकीजतनअनेककरिनेकनडै २
नतमेलैल करीषरीडबरीसुलगि तेरीचाहउरैल २७ टीका अभिलाषदसा सषीकोवैननायकसों
सों होकांन्हजू तेरीचाहरूपीवुरैलराधाकेलागिकेषरीहीडबरीकीनीहै सोहमतोअनेकेकजतन

19

बिहा० टी

२२

पमहकरतेंजरीसीजातिहै सोताकोंआनिकेतुमारोतनजोसादरसनहै सोदीयो २२ कवित्त औ

इनसेंदिनसैनगराधिकैयाजगवीचिवनोजसुलीजै वेविरहइनवीहिगकोंहरिताकुनह

सुकद्यौअबकीजै जातजरीविषमहकरमांकिनईअतिवीनकहैंदइहजीजे औरउपायकी

येनथरेथरजायेआइसुंदरसनदीजे २३ दोहा वियसोतिनदेषतदई अपनेहियतेंला

ल फिरतहहहहीसबनुमें उहीमरगजीमाल २४ टीका प्रेमगर्विता सषीकोवेनसषीसों

हेसषीराधिकाकोंजोलालजूअपनेहियतें उतारिके मरगजीकहेंतोमसलीसीमा

लाबीजीसोतांदेषतांदीनीहै सोअबउहीमरगजीमालउपरहैस्यांसबनमेंफूलीसीफिरतुहै

२४ कवित्त सोतिकेंदेषतमनभावतमयाकेदीनीउरतेउतारिपरगहकीनीरतिहै तबही

तें हसतिविहसतिकुलसतिविलसतितिलसतिगुमानजरीअतिहै मनमेंमुदितफूली

तनमेंसमातिनांहीचलतिचि तअनुरागओलहतिहै मरगजीमालजोबडीउरधरैबालाचहा

डहडहीआलिनकेकुंजनमेंफिरतिहै २४ दोहा बलाबवीलेलालकों नवलनेहलहिनारि चे

हतिचूमतिलाइउर पहरतिधरतिउतारि २५ टीका प्रेमगर्वितासषीकोवेनसषीसों हे

सषीबबीलेलालकौजोहाथकोबलोनवानेहकीनारिइनांमलसौ अब वाबलाकोंदेष

२२

19A तिहे छूमति है उरसों लगावति है परति है लोउतारिधरति है २५ कवित्त नंदके बाके बनीले
ललाको बनोलनहि नारि सबै सुषमानी नेहन येजुरीयासुलयोक आपनही यह राधिका रा
नी चाहति है विनही विनदेवतिलावति है उरमें उरमांनी लेपहिरे बहरोज उतार तराषति
है धरनेह निसानी २५ दोहा नित संसोहांसो वचन मनोसुइ हन्स तु मान विरहअगनि
लपकनसके रूपटनमीचासिचांन २६ टीका प्रोषितपतिका सषीकों वैनसषीसों हे स
षी या राधाको मोंतिआगे है सो कहतो जो वचनो वचतो है सो याको नित सांसो सो रहतु है कैसे
वचतु है पैरक वचवाको उन मांनमानत हो कि इन बात तै बचतु है कि वाको विरहागिन
तिनकी जो लपट आवति है तिन करि कै मीच रूपी सिचानो रूपट करि सकतु नाही है २६
कवित्त हेसो वचे साईं संसोरहे नित क्यों नाहिलेतइ नैन नवारी मैंनु नमानल हीउनकी ग
क तिकाही के जोयन योडषतारी मातनिद्रा लगी विरहागनि वालपटे नहीं जातसंतारी
पीचसिंचानकैके झपटे मनहारि रस्सो अबताहि निहारी २६ दोहा थाकी जतनअनेक करि नेकन उ २
नतगै लैल करी षरी डबरी सुलगि तेरी चाह छुरैल २७ टीका अतिलाषदसा सषीकों वेन नायकाः
सों हो कान्ह जू तेरी चाह रूपी छुरैल राधा कै लागि कै षरी ही दूबरी कीनी है सो हम तो अनेके कजतन

बिहा० टी नकरिकै याकी पैगैलबाहतिनांहीहै २७ कबित्त मंत्रश्रोतंत्रकितेई कियेश्ररु येतेश्रनेक लिषाइ
२२ कैथाकी नैकननबंहत्तगैलपरीगरैपरीकरीतनुताउनयाकी बावरीहूबरीयेजुकरीबरीलागिकैली
ललईउतिवाकी तेरीयेचाहखुरैलबुरी श्रहो श्रैसीदसादरसीश्रबलाकी २७ दोहा लाजगहौबे
काजकत घेरिरहेघरजांहि गोरसचाहतकिरतहौ गोरसचाहतनांहि २८ टीका बनबिहारीदेो
मिलनु नायकाकोबैननायकसौं हेकान्हबारीसीलाजपकरी बेकाजहारेजाबतीकोकतघेरि
केरहेहौ तोजानतहैकिगोरसकोंढुंढतिनांहीहो श्ररुगोहंडीलिकेरसकोंचाहतहौ २८ कबित्त
लाजगहौश्रबलाजमतलेनंदकेकाजबिनाकतघेरररहौ कौनहोनहीं गहरिकरौपगजांनदीजिगह
नवानललहौहौ गोरसचाहतमोलतहौवनबालनकुंबंकुबैनकहौहौ गोरसचाहतनांहिश्रहो
मनमोहनकेश्रनुरागचहौहौ २८ दोहा धांमघरीकविचारीयै कलितललितश्रलिपुंज जमुना बिहारीटी
तीरतमालतरु मिलतमालतीकुंज २८ टीका स्वयंदूतिका नायिकाकोबैननायकसों हेहरि
धांमुहै तातेचित्तमेंघरीकविचारीजै येजमुनाकोतीरहै यातमालकतरजाफलतिनको
रुपहै सोमालतीसोंमिलकेकुंजसोबन्योहै श्रोरकलितलयाकेहैं रश्रलितिनांकोपुंज
कौरहे करिकेसोहतहै पलावतालली वोरहै यांहीरहीयो ३० कबित्त कोहरुघामघरीकनि २२

३० वा॰ रो वेत है कुंज सुगंध सिच्यो है ऐसो समीर दल्यो कुंज आवत दाहिन बेआलि कुंज रह्यो है याज
सुनाल दिनी लटकी ज्यो लमाल ललनातरसा॰ न सच्यो है मो रारा है सो लालती सुमिलिकै नली कुंज
मैं पैठि पर्यो है ॥१५॥ दोहा ॥ उनहरि की हँसि कै इतै इनसो पी मुसकाइ नैन मिले न न मिलाए दोऊ
मिलवति गाइ ॥२०॥ टीका ॥ गोगरि को मिलनु सखी को वेन सखी सों हे सखी उत सो उन राधिका हँस
कै कान्ह को दिसि निहरि कीनी तब इत सों इस कान्ह राधिका की दिसि मुसकान कीवी सो पहिले तो
नैन मिले पढे मन मिल्यो सो ऐसे दोनू गायन के मिलवति कै विषे मिलगए है ॥२०॥ कवित्त ॥ देखी इ
ते हरि की हँस कै उन या विधि आप ते नेह जनायो सौं पदई मुसकाइ तबे इन नैनन बाइ कै मन म
कं॰ नायो नैन मिले मिल कै युग यों मन दों मिलावत गाय जनायो युं रसि रीति निहार कहा कहो
आप नुपो अति धन्य कहायो ॥२०॥ दोहा ॥ पर्यो जोर विपरीत रति रूपी सुरत रन धीर करत कोलर
कमरसेंघुंघरू हल किंकिनी गह्यो मोन मंजीर ॥२१॥ टीका ॥ सखी को वेन सखी सों हे सखी पहिले तो विपरीत आ
सन रूपी जोर न तिन कै विषे धीरता की सुरत रोपी कुंती अरु थीटे जब विपरीत कै विषे जोर
पर्यो तब किंकनी कहत तांस लै दे लसी तिन को तो कोलाहल कस्यो और मंजीर कहता चीगी या
तिन मैं नाक स्यो ॥२१॥ कवित्त ॥ जोर पर्यो विपरीत रती गति सो इन लाइ के कै मनुहारी धीर
रति महा रंग नंगन आइ परी जयवन महारी याकटि को करि सब नाकी किनी जोर कुलाहल का

…स॰ टी॰ रीनिहारी मौंनमंजीरगद्यौ ग्रारिमाकरि ह्वैलवबीलेकीवातकहारी ३१ दोहा विनतीरतिविप।
२४ रीतकी करीपरसपियपाइ हसिअनबोलैहीदयौ ऊतरदीयौवताइ ३१ टीका मुग्धालज्जा।
२१ प्रियारति सषीकौवेंनसषीसौ हेसषीपियुअस्त्रीकैपाइपरिकैविपरीतिरतिकीवीनतीकही
तवस्त्रीअनबोलीसीहसिकेंदीवोवरतौवतायकेंऊतरदीयौ ३१ कवित्त नाथकह्यौ।
विपरीतिकरैरतियोंवीनतीसुनिमोनलीयोहै मेरीसुनोहिवकैसुषहोतहैपीइनिपाइनप
रियोहै नेहअनेकवताइनलीविधिप्यारघरीवकवादकीयोहै ताअनबोलदीयोह
सिकैरहीऊतरऐसेवताइदीयोहै ३२ दोहा वैवरहीअतिसघनवन पैवसदनतनमो।
हि देषिडुपहरीजेठकी छांहौचाहतिछांह ३२ टीका सषीकर्ममिलाइवौ सषीकौवेनना
यकासौं होकांहअजराधाजूअतिसघनवनकैविषवैवरहीहै सोक्योंकि ऐसेकविनइ
पहरीजेठमासकीदेषिकै सोसरीरकीछायापीसातनरूपीजोघरतिनकैविषैतापैठीहै तौ
जांनीयै छायाहैसोछांहकौंचाहतहै याकौअभिप्राय राधावनकैविषेवैठीहैउमजावो उ
रथीषसकौपालिवर्णनहै ३२ कवित्त घांमसहीनपरैउषहाइकवैठरहीवनगाढघनेहै
वैठरहोतननोंनकेलीतरषेषतहैअतिघांमघनेहै देषिडजांमनयेअवजेठकेपांनपवें
हप्रतापसनेहै यातहेसबछांहौइछांहकोदीरघदाघनिदाघवनेहै ३३ दोहा सकउन २४

३४॥

उबनातेवचन गोरसकोरसषोइ षिनषिनश्रोटैबीरज्यों परोसवादनहोइ २४ टीका

रू[illegible]नपतिका सषीश्रोरनायकाकोपरस्परबैन सषीबोली हेराधेदेषितो एषिनशकै

विषैबीरकीसीपरिश्रोटउजातुहै सोतोगोरसकहतांजीनतिनकोसवादगवायकैश्रे

सेलापबोलतहै तातेसंकतनांहीहै तबराधेबोली हेसषीसुनितोजोपाषिनशबीरज्यों

श्रोटतिहै त्यांपरेसवादकेहैनहोत [illegible] हे कैसीएहोतहै श्रोरग्रर्थः सषीकीसिष्या सषी

कौबेननायिकासों हेराधेतेगोरसकहतांजिकोतिनकोजोरसषोइकैश्रेसेनायकसों

तातेबैनबोलतिहैसोसंकतिकोनहै सोषिनशपरासाश्रोटउहै सोषीरजुपरोसवा

दनकहै एविचारिकैबोलतहै २४ कवित्त गोरसकोरसषोइसकैनहीतातेईबैनकहेम

नमानेनाकचढाइकबूफरपाइकैतांननलीविधिनेंरहकबोंने योंषिनहीषिनश्रोटति

बीरहरईरहैकरिश्रागप्रमाने सोंश्रतिग्रन्तमहोइसवादिलयाहिपोयूषनहोतसमा

नै २४ दोहा कहिलहिकोनसकैडुरी सोनजाइमेंजाइ तनकीसहजसुबासबलि

रैतीजोनबताइ २५ टीका श्रंगमोना सषीकोबैननायकासों हेराधेतैंमोसोंनज

यकैविषैजाइकैडरीसोश्रोरश्रैसीकौनसोताकुंजानसकै श्रोरमेंजानीसोतोतेरतन

११२

सिहर ही

कीमरत्नैईनलीवासमनाओनवतावततौमेंरूंलाननतिनांहीसुवासतेंकरकैपाई २५

२५ कवित्त हौरकंरंगारंगीलीकौकोंनसमकै ऊहिद्रेकाहिजातनजोंनी सो नजुही मेंडरीइक

ज्ञाइकैबलनबेलअनोपमवांनी देहकीसदजसुवासवनीबकुपंकजकेसरहेरहरां

नी सोवनओनवताइकैदेतीकहैहेईनेनांतिड्रैकुंडरांनी २५ दोहा चालैकीवातैच

ली सुनतिसषिनकेटोल गोपकंलोयननहसत विहसततजातकपोल २६ टीका मुदि

ता सषीकौवेंनसषीसों देसषीराधिकासाषिनकेटोलामेंब्रजकौचालनेकीवातेसुनी

तबतेराधिकाकेनेत्रअरुनैकपोलअवांहसारससैहै अरुविकसैहै एक्ञाजहरिसौंमिलैं

गी २६ कवित्त सासरिकोंचलवेकंकुंवातसुनीसषिमेंडलमअप्रवीनी याकरिकाम

लसवारिविहंर्ईविदाकरिदैअवणसुनिलीनी गायेकंलोयनहोतहसेहसिकेत्रुगुटीस टै

तराहरुकीनी देहअनेगतरंगउवेहरयेईकपालनमैहसिदीनी २६ दोहा सननसूकौ

वीसोवनो आबोलईअपारि हरोहरीअरिदरिअजों धरधरहहराहियनारि २७ टीका म

अतुरायानी नायकाससीसोपरसरवेंन राधाबोलीहसषीअबकैसीकरूं जोमि

नीकोषततौसकिगयोऔरवनैनकोषतहासोवीतगयोहै औरकपकोषतकंतोसो २५

२२ गषारल । योंतबसषीबोली हेराधेग्रजोंग्रारिहरिकहतोंग्रलसीतिनकोलोषतहस्योही
है मोसंनारिहीयाकीधरधरातीहरद २७ कवित्त देष्यौ सबै मनस कौं कहाकरौंवीसौ व
नौलईकहेउषाली यामैंसषीग्रपने मननावती केलकलाकीयेंजातसुषाली हरिकै
क× हारिग्रजोंहरियेंहरिघरग्राई इतेकहीषाली योंसमुझाइकह्योधरधीरजहीयकहांग्रब
जोतुंइषाली २७ दोहा ग्रापग्रापुतलीकरी मेटनमानमरोर दूरकरौयहदेषिहै बल
बिगुनीयाबोरि २८ टीका सषीकीसिषा सषीकोवेंननायकसों हेकान्हतुमराधिका
केमानकीमरोरहैतिनकोंमेटनग्रापहोसोतलीसीकोवी पैमेंकहतिहोंकिं जोयोंउ
न्हारेबिगुनीग्रंगुरीकेविषेग्रानिग्रस्त्रीकोवलोहैसोबोरिकेदूरिकरोयोंदीषतहै २८
कवित्त ग्रापहोग्रापतलीकरीमाधवग्रोरहीकोतुमसोवकनागी मेरनवाकेजोमा
नहैतोकोकरोरमरोराकिनारनलागी दूरिकरोयहदेषहिंगीतुमरैंनसबेजिहिकेसं
गजागी ताहीकोबेलछनालीएग्रापहोबोरजुहैबिगुनीग्रनुरागी २८ दोहा मेरैबूझ
तबातहैं कहबहरावततबाल जगिजांनीविपरीतिरति लषिविंडुलीपियमाल २९
टीका सुरतांत सषीकौवेंननायकासौं हेबालमेरेबूझैतेकततबहरावतहै यातौंतर

बिहा॰ टी
२६
23

ताारकैनालकेविषैतेरीबिंदलीलागीजांनिकेसंसारजांनीकैविपरीतरतिकरीहै ३९ का-
वित मैंतोललेकहिबूकतवातनदेवहरावतहै काहेकोमोहे बालकहीजिनआपनेहीय-
कीतोहिदियावततउलटीसोहै जेजगतीनीरचीविपरीतिविलासकतारतिराजनजोहै पीत
मताललबीबिंदुलीअबलागिरहीअनुरागसीसोहै ३९ दोहा फिरश्रविलबीकैलबाति
फिरफिरलेतउसास सांईसिरकचसेतज्यों बीस्योचुनतिकपास ४० टीका चितदसा
नुरागयाना सबीकोवेनसषीसो हेसबीनायकाफिरदेषिकेविलबीकेहै औरफिरकै
उसासलेतहै सोकैसो ज्योंवीस्योकपासचुनेत्यों तरतारकेसिरतेकेससपेदचुनेतहै
ताबनी॰ तातेएसपेदीआईजांनी ४० कवित्त कैविलबीफिरकेवहदेषतिडुबनिदेहदसाहै ले-
तउसासअनेकनमेंषिनआंसुनकोपरवाहवहोहै साहिबकेसिरिबालउबेसित
औविषेकेअकेरज्योंउमहोहै वाहीकोवीस्योकपासचुनेजिमतोचुनिकेचितकेंऔरस
होहै ४० दोहा नगाकिनगतिसीचलिवटक चितईचलीनिहार लीयेजातचितचोरही
इवेतरहीनारि ४१ टीका चेष्टावर्ननं नायककोवेनसबीसो हेसबी याजोगोरहीनारिति
नकोमेंचितईकैचलीजातीघीसो यामेंकोंनिहारिकैआपनेहिगकोंदिगायकेअरुतरो २६
नी

२३ª

वाढीकेकैपवैचाली सोयाचोरटी मेरौचितकौंचोरायेलिजातिहै ॥ ४१ ॥ कवित्त केहिगकेहि
गतीसीचलीबहरसोंगिरुकीचितईहैमजोनी नेंकनिहारचलीचपलासमनेनहनमैंकबूहोत
निसानी चोरटीजातलियेचितजीनकेकुंवहराततिनहोतहिरानी गोरटीमारिवहैसुकुंमार
वहैमनहारवपीरविरानी ॥ ४१ ॥ दोहा करीविरहऐसीतऊ गेलनबाढतनीच दीनेक
रैन के वसमावषन चाहैलहैनमीच ॥ ४२ ॥ टीका जकतादसा सषीकोवेननायकसों होकोन्द
गुसुनोतो राधिकाकोंऐसीकरीहैकि जोमातहैसुअंषिकेविषैचसमादीयेवाकोंढुंढत
है तऊजानतिनांहीहैसोतोपनि विरहनीचुहैसोल्गारबाढतनहै ॥ ४२ ॥ कवित्त ऐसीविये
गकरीतुबरीतऊगेलनबांढतनीचसषीरी मासुकमांसवच्योवनितातनुअंगअंगनाकी
कालसषीरी दीनेईहैचसमांकुनिवहुनिमारनकीमरियाहनसषीरी चाहतहैबऊतेनल
है यमआपनेजीयमेंहोतउषीरी ॥ ४२ ॥ दोहा जोवाकेतनकीदसा देष्योचाहतुआप तो
चलिनैंकविलोकीये वलिअचकोंचुपचाप ॥ ४३ ॥ टीका व्याधिदसा सषीकोवेननायक
सों हो ... लालबलिजाऊंजोतुमहआपवा वाकेतनुकीदसाकोंदेष्योचाहतुहै तोलिगा
रकचुपचापहोकेऐसोतकसाचालकेविलोकीये ॥ ४३ ॥ कवित्त बीनपरीअलिदीनसई

३१

रसि॰ टी॰
२७
३५

गातेऐसीअधिकरिकाकनवीनैं जोहरिवाकोसरीरहमातुमदेआहींबाहनआपयवीनैं दोकि
मघासमबूरावरमंदिरयथ्यतुरातनओरन्हवीनें तोचलिनै काबिलोकियेजायकैओचककुंबु
वापन कीनें अथ दोहा जहतनीलमननगमगत सीकसुहाईनाक मनोंअलीचंपककका
ली बसिरहलेतुनिसाक अथ टीका अतुलउपमा सखीकोवैननायकसों हाकांन्हजूराधाके
नाककीसीकसुहाईहै तिनकेऊपरनीलीमनिजरीबकीजगमगतुहै साकैसीसानलहै मानें
अलिजोहैसोचंपाकीकलीऊपरबसिकैनिसंकऊजयोरमलेउहै अथ कवित्त नीलमनीमसहा
मनिसुंजरमीककीजोतिजगअतिहीकै वासोंसोहागसारनीकोनीहैनांकयोंआपनीनावत
नीकै वाकेसरूपकीसोननिहारनओरअनोसबलागलकीकै चंपककलीवसिकेजुअलीव
मलेतुनिसांकसुहामननीके अथ दोहा जदापितजरोहालखबल लगीपलककोवार तऊ
न्वांकाघरकोलयो पैंडाकोसहजार अथ टीका प्रोषितपतिका सखीकोवैनसखीसों हेसखीना
यककेऐसबारीकोघोरोतेजवंतहै ओरबलेरारदारहैसोघरकोआवतांपलएकहीवारला
गीनहीं तऊतौपाछिग्योहैतेघरकोंआवतैको सोवारलागीसोहजारकोसकैपैंडा...कीसी
बारिकरिजोनीहै अथ कवित्त तेजरोहालखबलीसबतेंअरुजद्यपिरजधनेरोलयोहै २७.

है

वारपलेकलगीनहीं आवतजीहैं अनेकउपाइहूवैयोहै आपतें आतुरताई तईअतिहीयकु
लासयनैाउनयोहै तोअपनोघरगेंहनकोमगमेंगेताबिनकोमहआरनयोहै ४५ कवित
फेरिकबुकरपोरितें फिरचितईमुसकाइ आईजावनलैनजिय नेहहिवलीजमाइ ४६ टी
का नायिकाकीचेष्टा नायकाकोवेनसषीसों हेसषीआजराधिका जावनुलैनकोंआईभ
कुती सोजियकोंलेनआईकुती पै पोरिकनेगयेतें करिक्योंहिकमोरिकेओरनीमुसका
इके इतकोंचितईतातेंजीवकूरसों औरनेहकोंजमाइकेचाली ४६ कवित फेरिकबुकरिपोरि
तेंपफिरदेषिरहीमुसकाइकेंहोसों आतुरहोइरहीकहिकें कहूंलाजतिहेअपनेमनहीसों अ
ईहै जोमिनलैनअबइहवातवनावतओरनहीसों मोजीयनेहजमाइचलीइतफेरगईअव
नेघरहीसों ४६ दोहा इसमासमसुनिमषिनपें सांईवलनतमवार गहकरिचीनप्रवीनतिय रा
ग्योरागमल्हार ४७ टीका प्रवत्सतईका सषीकोवेनसषीसों हेसषीराधिकाइसषिनपेपास
मासमें असेंसुन्योकिसांईसवारकहीकोंचलेंगे तवप्रवीनअस्त्रीवीनाहाथलेकेमल्हाररागगा
गायोहै प्रस्तावतामेंहआएतेंसांईनचले ४७ कवित सीतसमेपरदेसकोंपीकोपयानुसुनें
वहरावनलागी यारितुमेंहरिक्योंकरहैघरदेवताइजमना वनलागी औरउपाउतकोन

25

टी॰ कबूलतसाषिकैवीनवजोवनलागी प्यारी प्रवीनसेरसुरमघ मल्हार आलापकै गावनलागी
२९ ४३ दोहा जपमालाछापतिलक सरैनएकोकाम मनुकाचैनाचैहरुषा साचैराचैराम ४४ टी॰
ना॰ जिजनवाक्य कविविहारीदासकहतहै रेनर मालाकै जपतें और छापा वनायेतें अरुतिल
कलगायेतें एकोकाम सरतुनाहीहैजोमोहिलोमनकाचोहै तोहृषानाचतुहै अरुजो माहिलो
मनुसाचोहैतोरामराचतहै ४५ वाजपमालाआछापधरोवङाकैमरिकैकरहोको आसजान रुधाइके
कबनावबनावतएकहुकाजसरैनहीजीको कैकैवनाईरहेअपनीसबमरंमनजोनिबस्यो
उनहीको काचैमनेकोऊनाच्योहृषाज्ञमसाचैहीराचतरामडनीको ४६ दोहा वनवनु
कोनिकसतुलसत रसतुरहतआइ डिगबंजनगहिलेगयो चितवदूंवेपलगाइ ४७ टीका ञ्न
शर्वानुराग नायकाकोवैनसषीसो हेसषीकोन्हज तनुकोसिंगारकैसाननैलेघको रसतोरू आ
इडितकोआइ निकस्यो सोमेरीनेत्ररूपीजोषंजनहैतिनकोचितवनरूपकपोललैचैपोलगाइ
कैपकरिलेगयोहै ४८ कवित्त वोनिकतैवनिकैतनकोनिकसतलसेआतिसुंदरसोहै आ
वतहैहसिकैरहतदेषतहीरतिनायकमोहै रीहगषंजनकोंग[illegible]हैलेगयोआइअचानक
जानतकोहै नीकीचितौनकोचेपलगाइकैनंदकोब्राहरायावनसोहै ४९ दोहा मरननलै ३८

75A

वरविरहतें यह विचार चित जोइ मरन मिटे दुष एक को विरह दुहूं दुष होइ ५० टीका प्रोषि
तपतिका नायिका को वैन सषी सों हे सषी सुनि तो या विरह तें तो जल मरनो जलो है ऐंचित
मैं विचार कर जोइ सो क्यों कि मरि के मिटी जेतो एक नायक ही कों दुष के तो तरिया विरह क
रके दोनुं कों दुष जयो है ५० कवित्त या दुषदाई वियोग तें लोन हीं देह को नास नलो वरुमों ने १
एसगरी वली यां जु कहे हो अब चित्त को चेत अली कन मांनो देह न से तें न से दुषदायक वियोग तें
दे दुहूं दुषदानो हे सजनी इह काय मनो विचमरे के हे कोष तीतब मांनो ५० दोहा घरि
घरि फोलत दीन के जनु रजाचत जाइ दीये लोचच समान बघन लघुपन वहोलघा इ ५१ टीका
नायिका जन कवि बिहारी दास कहत है हे नर दीन कहं हतां गरीब सो के कं घर के विषे फोल के ज घरा
तुरकों जाचतु हे अरु नीलो लरू पीन तो के च समाद के जो लघु है तिन को वनो सो करि लषतु है
याको अभिप्राय के तें ना राय लन ज्यो नों ही ५१ कवित्त फोलत है घर ही घर बापरे दीन नये
अति जोंन न लनों ही ऐसो प्रपंच पुरातन है कछु या चति है जिन ही जिन जों ही लोतन के वचु दी
ये पसमा कुनि वोट ईज नै नरमा हैलषा ही रैं नादवाक व हो न परं जक को हो गवे न ही घाम रू
वो ही ५१ दोहा हराषिन बोली लषे ललुत निरष अमिल संग साथ आंषिन ही में हसि धर

९८

रसकीटी-
२९

सो सीसहीयेधरिहाथ ५२ टीका बोधकहाव सषीकोवेंनसषीसों हे सषी राधिका अनमिल
तसाथकेसंगललनुकोंदेषिकेहरषीपेबोलीनही अरु आंषिनहीमेंहसिही येहाथधरिकै
सीसऊपरधरयोहै एतावता प्रनामकीयो ५३ कवित्त लालकोंदेषिकेबोलीनहीहसिको
रवेकोंबकुतेंअकुलानी सातसहेलीसवेंआमिलेमिलिजातकीजमुनाकोहिपानी
अंषिनहीहसिकेजुइसारतकेकेचलीउतराधिकारानी औरसुनोअनुरागहीयेहसि
सीसहीयेधरिहाथनिसांनी ५२ दोहा कोजानेकैसेकहा ब्रजउपजीअतिआग मनजा
रौनेननतुलगै चलैनमगउलगलागि ५३ टीका नयानकंरस नायकाकोवेंनसषीसों हेस
षीयावातकोंकोजानेंकि ब्रजकेविषेघनीसीअगनउपजीसोकहीहैंनरहेसोकैसापैरकि
नेनसोनेनलग्याचाहै अरुवीचहीसोमनआनकेलागजातुहै सोअैसीलागिलागिकरिकै
मारकचालेहैनांरी ५३ कवित्त जोनिकोकैहेकहाअवमाईरीआगिवहीब्रजमेउपजीहै
मोहिमहादरहोतकहाकरोदेषनहीसुधिबुद्धिरजीहै लोगनिहीमननमेंनलगोअरुप्रीतिल
गीकुलरीतितजीहै कोनचलैमगकोलगिलोगनिकोनइहांइननांतिनजीहै ५३ दोहा लेचु
नकीचालिजातजिन जितनलकेलिअधीर कीजतिकेसरनीरको तितरकेसरनीर ५८ टी० २९

26A

जलकोमिलन सखीकोवेंनसखीसौं हेसखी ग्वालनसहितकान्हजूअरु सखी सहित राधिका २
जूयमुनाकेविषेन्हातहे सोचुनकीलेकेजहांजलकीकेलिअधीरतासोहे तहांचरेजातु
है अरु मनोरथपूरनकरिकेपीछेजितकीनीरसिरपरकीवीछूटीसोतितनरसिरनीरपरिकी
ए एतावताजितकोचुनकीलीवीछूटी तितहीकोंनिकरे ५४ कवित्त लैचुनकीचलिजाति
जितेजितकंचनसेतनपंकजनेंनी मीनकीरीतिलईगतिगूढहीनीरकीकोकेलिकरैअति
पैनी कीजतकेसरनीरसमानसमानअनाकरिकेपिकवैनी चाउरकेजलहोतनकाग्रकेअै
सोकस्योकरतारबेहैनी ५४ दोहा छिरकेनाहनवोढाढिग करिपिचकीजलजोर रोचनरं
गलालीनई वियतियलोचनकोर ५५ टीका रोद्ररसवर्णनं सखीकोवेंनसखीसौं हेसखी
नाहहाथमेंपिचकीलेकेजोरसोंजलतेंनवोढाअस्त्रीकेनेत्रछिरकेसोवीजोअस्त्रीकीति
नकेलोचनांकोकोरिकरोचनगोरोचनकीसीलालीनई ५५ कवित्त नाहनेलेछिरकेहेन
वोढकेकेपिचकीढिगकेलिकलामें केजलजोरउमंगाव सोकरवाहीकोहेरसबेलउनां
में रोचनरंगललाईनईअतिअैसहीअोरतीयाकेनेंनांमे प्यारकोप्यारनिहारेअनूपम।
योंडुषपाइरहीहेहीयामें ५५ दोहा कहांलेतानिगकर परसलालवेहाल कढमुरलीक

नहारी टी.
४०
27

कपीतपट कडंमुकटवनमाल ५६ टीका सषीकौ उत्तर सषीकौ वैन नायकासौं हे रा
धे तेरे देषवे नै तै लाल वे हाल कै दे परे हैं सो नैनाकौं ऐसे लह्यो है तै क्यौं करे है सो लालके कडं मुर
लीपरी है कहैं पीतपट पर्यो है कडं मुकट परयो है कडं वनमाला परी है ५६ कवित्त कौ
करे नैन लहत कहा कहौं लालन तौ आज वेहाल षरे है ऐसी मनो जप्य घाउ पजी आति आकु
ल होइ तैने नैन ते रे है दूर परी कित हैं मुरली वनमाल कडं पट पीत परे हैं छंद सुन कौ नकेहरप
रे तुरतही सुगहेनरकौ नहरे है ५६ दोहा राधा हरि हरि राधिका वन आए संकेत दंपति रति
रस विपरीत की सहजसुरत हूं लेत ५७ टीका सषी कौ वैन सषी सौं हे सषी राधा नौ हरिव
नी है अरु हरि भो राधा वने है सो ऐसे वन कै संकेत आए तहां दोनुं विपरीत रति कौ सुषस
हजै और रति कै तिन मैं लेत है ५७ कवित्त राधिका नै हरि रूप लयो अरु राधिका रूप लयो ह
रि माई ऐसी अनोपम वानिक सौं वनि आए संकेत महा सुषदाई कीजति है सह जैर तिय
थापि केलि कला अपने मन नैं ताई दंपति हौ विपरीत रति तै सुष लेत है कै के वियोग विदाई
५७ दोहा जम नअपजस देषत नहीं देषत सांवरगात कहा करौं लालच तरे चपल नैना
चलि जात ५८ टीका सहजै मान मोचन नायिका कौ वैन सषी सौं हे सषी मेरे नैन चपल है ४०

२७A
सो जमकमुखपंकजमलेरूषतनांहीहै सोक्यों जबमांबलेगातवारकोदोष देषनदेतनबनाकेरूप
के लालचलागेगहांहीचलिजातहै ५८ कवित्त ओजमकोंजलकौंनहींदेषतिदेषतसो
बरगातवन्योदे सोलसरूपसिरोमनिकोंलषिआपनेंजीयमेंनेहसन्योहै लालचसारलते
ईकहाकरो अैसोवनावअनूपवन्योहै हैअतिचंचलआपहानेचलजातहु नैनकोनाव पंषी
नन्योहै ५८ दोहा चलतुपाइनिगुनीगुनी धनमनिमुतियनमाल भेटिनएजयसाहसों
भागवाहियतुलाल ५९ टीका कविविहारीदासकहतुहै जोलालकेविषेभागकैतोकै
हागुनीअरुनिगुनीधनमनिमनियनमाल राजाजयसाहिजूसोंतेटकुंवेंनोइतनोपाइकै
सैलैचले धनमनिपावेमोतियपावेलालपावे ५० दोहा नषसिषरूपभरेषरे तऊमांगत
मुसकानि तजतनलोचनलालची ए ललचौहीवांनि ६० टीका साक्षातदर्शन नाया
श्री ककोंवनसषीसों हेसमरेनेत्रलालकेलरे अैसीलालचकीवांनितजतनांहीहै सोकैसीक
हेराधाकेरूपकरिकैसोपगांकेनषअनेसिषचोटीतकषरेभरेहै तऊमुकुकीमुसकांनिमं ८
गतहै ६० कवित्त रूपभरहेषरेनषतेसिषतोमुसकानचहैबडुतेरी कोहांअघातनरूप
अचैकततकोंनकूटैवपरीसुकहेरी जानकीलोचनतांहिलगोहतयेललचौंहनिवांनिन

हारीटी हेरी नीयकौ जांनिक हौं सषी तौ ही कौ जांनत हौ किहि वाय वहेरी ॥९०॥ दोहा ॥ बई बिगुन पकु
४१ वो गहत अति दीनता दिषाइ बल बामन कौ ब्योंक सुनि कौ बलतु उम्हे पसाइ ॥९१॥ टीका ॥ हे
४४ नायक नायक कौ वेन नायकसौं हो कौं न दबाइ लिजा कं उम्हे अति दीनता दिषाइ के तौ मेरी
बिगुनी करहि तो बिहू आगली बूई हतीमो बिगुनी बानि कैं अब पकुचो पकरत हौ सो बलरा
जा कौ अरु बामन कौ तार को बांक सुनियेतैं उम सेकौं न पस्या बेगो एउ मारी कौन जांनेक
गु: हा करो ॥९१॥ कवित्त ॥ गु बिनी पकुचोई गौ लै अहो ऐसे नैन सौं कहो कौं न पस्यो है दीनता आई
दिषाइ परी कहो ऐसो सुनावू कहौ तै घस्यो ज्यों बलि पै धरनी पग तीन कवामन जा चितलो
क हस्यो है एसुनि ब्योंतन न होइ हौ धरि रावरी और पस्यो उटस्यो है ॥९२॥ दोहा ॥ नैंनां नैं कन मांन ही
कितो कसो समुझाइ तनु मनु हारे हू हसै तिन सों कहा बसाइ ॥९३॥ टीका ॥ सूहजे मांन मोच
न नायका कौ वेन सषी सौं हे सषी इन नैंनना कौं कितौ क समुझाइ कै कह्यौ पे ए नां क ही मांन मा
नत नहीं जौ मेरो तनु अरु मनु हारि कै है तऊ एनायक कौं देषि कै हसे हे तौ तिन सौं के से वस अ
इये ॥९३॥ कवित्त ॥ नैन न हमारे नमानत पकं कं ऐसे हवी लै नया जगा हेरे मैं तनु मन ते समुझाइ क
सौ टिक लाय रहे पै फिरे न ही फेरे आपनां मांन स केर्तो तन हारि कै बारी कै दाह गये अति बेर ४१

३४ग फेरहैसेइतनेपरमाईकहीतिनसोंवबसायहसेरे ॥६१॥ दोहा मोहनमूरतिस्यांमकी अतिअ
दभुतगतिजोइ वसतसुचितअंतरतऊ प्रतिबिंबितजगहोइ ॥६२॥ टीका सज्जिन कवि
विहारीदासकहतुहे श्रीस्यामजूकीमोहनीमूरतातिनकीकैसीअदभुतसीगतिहै सोदेषितोजे २
प्रेमरोचितमांहिबसेहेतोईतिनकोसंसारकेविषेप्रतिबिंबकहेरे ॥६२॥ कवित्त स्यांमकीमोहन २
मूरतहैसुकहीनपरेस।रतेअतिनीकी देषतिहीअतिअद्भुतसीगतिवाहिलषेबियलागत
फीकी आइवसैचितअंतरओ प्रतिबिंबतहोइरहैजगहीकी नामतिहेतितिहुंलोकचराच
रनिर्मलताहीकरैसबहीकी ॥६३॥ सोरठा मैंसमुझ्योनिरधार यहजगकाचोकाचसो एकै
रूपअपार प्रतिबिंबितलषियतजहां ॥६४॥ कविविहारीदासकहतुहे मैंअसेजान्योकि या
संसारकाचसोकाचोहै अरुनिराधार है येएकजोश्रीभगवानहैतिनकोअपाररूपहै सोसं
सारकेआधारकोजहांतहांवाकोप्रतिबिंबदेषियेतुहै ॥६४॥ मैंनिरधारअबेसमुझ्योकबुआ
पनेजीयधनेरोअरेहै काचसोकाचोइहैसगरोजगहेरघरोहीयराहहरेहै एकहीरूपअगा
धअपारहैओरबिनेकाविलायहरैहै वाकीतोबातकहांएकहीयेजिहांवाप्रतिबिंबितदेषिप
रैहै ॥६४॥ दोहा लटकरलटकउपलै नटवमुकटकीबांह चटकअन्यानटुमिलिगयो अटक

बिहारीस
६२
२१

नटकवटमांहि ६४ टीका वचनकौ मिलन नायकाकोवचनसषीसौं हेसषीश्रीनंदजी नटकाकर
तैमितावेषकरतुहै उपनआपनेमुकटकोछायाको देषलेजातहै सोमैसांझसमैचटकीलीनटई
ती ताकौनसयोमिलयोसो नटकके मारगपर अटकपसो ६५ कवित्त आवतुहै नटकेलटकेल
टकोनवचलैअतिसुंदरसोहै नटवरमुकटकीछांहमनोहरदेषतहीसबकोमनमोहै तातेचटकन
स्योमिलहीगयोसोनटनागरनंदकोजोहै अटकईवटमांहिकेवाकेमनमांनकहोडजकोहै
६५ दोहा मलिनदेहवेईवसन मलिनविरहकेरूप पियआगमओरैचढी आननओपअनू
प ६६ टीका श्रवनदर्सन सषीकोवचनसषीसों हेसषीदेषितोराधिकाकेसरीरमैलोहै अरुमै
लेहीवस्त्रहै ओरविरहकरकेरूपमैलोहै पैंआजलरतारकोआगमसुन्योहै ताते आनन
कोविषैओरहीअनूपओप चढीहै ६६ कवित्त देहमलीनसबैपटवेइहैरूपमलीनवियो
गछयोहै कैगईछीननईमतिहीनधरैनहीधीरउसासलयोहै पीयकेआगमओरैचढीअति
आननओपउजासलयोहै योंउलसीविलसीफिरेआंगननआइअनेंगनदाउदयोहै ६६ दो
हा रंगरातीरातैहियै प्रीतमलिषीवनाइ पातीकाछीविरहकी छातीरहीलगाइ ६७ टीका पत्री प्रो
षितपतिका सषीकोवचनसषीसैं हेसषीप्रीतमरातैहीयातेरंगमेरातीपत्रीवनाइकेलिषीसै ६२

॥६॥

३१A

हे सो उवा पत्री कैसी कहै विरह की कतर तें वाली है तातें छाती सों लगाइ रही है ॥ कवित्त
रंग सों राती ओराती है हीये लषि पीलम आप पगाइ रही है याविधि प्यारी को नातल षीउ नतो विष
यानि यनायन रहे पाती वियोग की काली सी आपनी छाती सों आय लगाय लई है जैसे मि-
ली सुपने मन ना वन सी तल तन अंग अंग लई है ॥ दोहा लाल अनोल कल रकई लषिल
ष सषी सिर हांसि आज काल में देवियत उरू उकसाही नांति ॥ टीका मुग्धा नवल बधू बाल
क अवस्था सषी को उसु तरनायक सों हो लाल अनो लो आनोल कलरकी है पैवा को सषी
देषदेष कै सिहात कहत विचारत है मा के सी कहै या के अब आज काल्ह मैं उर के वियै उक
सांई सी देषी परैगी ॥ कवित्त लाल रवा [illegible] ना पीया की अनोल लनरकई लागति है आति सी की
ता हि सषी लषी सिहांत मसकपतें ओर लगैं उतिफो की आज ही काल्हि में देषी परैम बयाव नक
परमा न नषी की ऐसा वनाव वनो हम जानत नांति न ईउरमें उकसी की ॥ दोहा चिलषी न
न को देवधन पिय लषि गवन वनाइ पियगहन रिसाई गरें राषी गरें लगाइ ॥ टीका स्व
ता लाईका सषी को वैन सषी सों दे सषी नायक चातुरई ते मान्स्त्री की फर को सी अषी यों अ
न वदन में विलषी सी देषि कै पिया के गरे गहत रिसाइ [illegible] तल गवन तें चर आइ के आपने गरे लगा

बिहारी टी

६२

३०

गायराषी ६९ कवित्त होइरही विलषी मनकों है दिलोचन सामिनी जी तिनई है नायसवारे
ईसिहक करैलषि गोनबरायउमाधिनई है आयैहैर्प. तमके गहवैरसों आसुनसों अतिआंषिव
ई है औरवचावकीयेनवचैजबनाछिनतैंउरलाइरहीहै ६९ दोहा प्रतिबिंबतिजयसाहडुति
दीपतिदर्पनधाम सबजगजीतनकोकस्यो कायव्यूहमनोंकाम ७० कविविहारीदासकहत
है औरीसामहलके विषेराजाजयसाहजीकोसरीरकीडुतिदीपाइमानहै सोयोकायव्यूह
कहनांघनाशरीरकरता तिनकोजोकामकस्योहै सोमनसबही जगजीतनकोकस्योहै ७०
दोहा बालकहालालीनई लोयनकोयनमांहि लालउमारैदृगनकी परीद्रिगनमेंछांह ७१
टीका प्रौढाधीराधीरा नायकनायकाअनुसर सषीकौंदेनसषीसों हेसषी हौकांहअंत्रा
निकेबोलहै बालतेरेलोयनकेकोयांमेंलाली कहांतेनई तबबोलीहोलालउमारेनेत्रांकी
लालीतिनकीछायामेंरेनेत्रांमेंपरीहै ७१ कवित्त लोचनकोयनमांकिकहौउमबालहलाई
नईनहींजोनी मेंबकुतेउनमांनकीयोकुनिवातनत्रांनपरीमनमांनी याउनबूफलहोबक
नायकजोरिकडंकरदोइनिसांनी लोलनरावरेंनैननकोअबबाहपरीनयनोंरसमांनी
७१ दोहा तरुनकोकनदवरनवर भएअरुननिसिजागि वाहीकेअनुरागदृग रहेमनो ४३

कवित्त

30A

अनुराग ७२ टीका धीराधीरा नायकाकौं वैन नायकसौं हे कांन्ह तुमारे नेत्र आगे तो तरु
न कोकनद तिनके रंगसों तो अब हे ही और नीनि सि जागिकै अरुन नए हे मन वाही अरु
कौ अनुराग कहतें प्रीति तिनकर हे अनुराग कहतें रातें ही रहे है एवाकी मेरतें नांही हे ७
७२ कवित्त जोबन नवंक नैलाल मनोहर रंग रंगे वरवांन वने है आरकुं जाम जगे रजनीक
कें ऐसी उजागर नां ति न नेहे वाको लग्यो अनुराग हीयमनों ताही कें रंग तैं आइ सनेहे ऐ
सौ छबीलि सोहे मनें सुंदर रावरे नैन रसाल घुने हे ७२ दोहा चलत चले ले चले सब सुष संग ल
लगाइ ग्रीषम वासुर सिसिर निसि प्योमा वास बसाइ ७३ टीका करुना विरह नायकको वैन
सषी सों हे सषी जब ही प्यो चालत हे तब हीस ब सुष साथ लगाइ कै ले चालत हे और मेरे पा
स दुष देने कौं ग्रीषम को तो दिन अरु सिसर की राति राषि जात हे ७३ कवित्त आपने साथ स
बे सुष साथ लगाइ कें दैंदै चालत है लालन लाइ नरहे मेरे तो माई नई ग्रब यों बिन मोंति सा
तिन्ह से पन ड स्क द ए हे ग्रीषम वासर और निसा ससिरे रितकी रघपाल नये हे ए दिग वास व
साइ गए कुनि मेंन उनीद लगाइ गये हे ७२ दोहा तजत अर्थ तानन हवपस्यो सब मति आवें
नांम नयो वाम सवाम के रहे काम वे काम ७४ टीका सब नायक सषी कौं वैं अघवा नाय

बिहारी
४४
31

नाकौं वेन सषीसौं हे सषी देषितो सव मति ऐसे फेटैलाग्यौ है कैन्हावो जो मका को आवागनन करि
तो घरस्यों नतनांही है अरु काम वे काम वा स्त्री कैन्हा वे पासे न स्यो रहतु है ७४ अथ वा नायका प्रो
षितपतिका व्याघ गंदसषा सषी नायक सु संदेसो लिषतु है इह नायका तु कों काम है सो वा मम हि
देव जानि के तन गेउ नांही हव पसौं सव मति आवै जो मन आवा न क रहतो ... कि के वेक
मरहतु है उवा नायका को आन तु नांही ७४ कवित्त लोल मन नाव नैतिहार विधु रेले वाल
विरह आगन में बरलने इहनां थहै वेहीं काम का मन वा मदेव के नरमस्नु लि हत्यो वाही वाम सो विष
म वेद नां थहै सव मति इम तरि दया ऊरप रिहरि आवै जो मन रहतु सरास सरु सों थहै कीं ने
थो इक हाउ पाउ बांन तन आवै पाउ न के हरि वि को दाउ लाग्यो इ दीं थां यहै ७४ कवित्त वो
हे आता न न ऐसो हठी लो है कोंड न आजे क सो नहीं ... मां नें आयो ई जो मर हे रति काम त
जे निज धाम आजा न नजा नें होइ वा वा मकौ वाम न स्यो रहै काम वे कं मम सबै दिक वा नें आपनें न
यलगाइ रहै आरे। सरूफ तनां हि न तां विहां नें ७४ दोहा वेसर मोतीड तिफ लक परी अधर प
रि आइ चूनो होइ न चतुर नर क्यों पटु सं गति जाइ ७५ टीका स्वाधीनपतिका सषी कौं वेन ना
यक सौं हो कां दस्नू राधा जू के अधर पर सतव विसी है सा वेसर के मोती को डति लिन को फ

लकपरी है सो है वदुरन रह्यो वूनो नांही है पर तन तें वतें कै से जायगो ॥ ७५ ॥ कवित्त वेसरनाक-
ल सें अति सुंदर मोतन की छवि कोजनलनी की ताकी फल उक्तपरी अहो आवते वाल कहो सुनि ॥
आपने जी की तो हि कहा कहीयै तउ विविछिन हूनो न होइ वनी सब ही की कोपट पोवलहै पल-
ही पलक श्रवन जाय परे न हीको की ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ आवत जात न जानियत तेजहि तजि सियरान
घरहिं जमांई लों घट्यो घरो पास दिन मांन ॥ ७६ ॥ टीका हेमंत रितु वर्ननं कवि विहारी दास क-
हतु है या समय कों आवत अरु जात जांनियत नांही है सो क्यौं कि आपनो तेज तो छांरि द्यो है
तातें जैसे घर जवांई की पर पोस कै दिनकों मांन षरो सो घट्यो है ॥ ७६ ॥ कवित्त आवत जात
न जान्यो परे कछू कौम को अबोध रातन कीजे तेज तौ छांडि द्यो अपनो सब श्रै मैन सों मिल-
के कहा कीजे होइ रहे अति सीरो सवारतें याविधि देषकहूं न पसीजे नांन जमाई ज्यों आलस
घट्यो दिन मांन षुरो अब सम कहीजे ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ चितवत वचतन ह्रत ह वजाउन डिगव-
र जोर सावधान केवट परा एजागत के चोर ॥ ७७ ॥ टीका उराहनो सषी कों नायका कोअ सषी
कों वेन सषी सों हे सषी लालन के नेत्र असे जोरावर है कि जो आदेषत है सो षत नाही है
और हवकी नेतें हारत नांही है और जो सावधान है ताके वटपरा है और जो जागे ताके ॥

चोरहैऐसनेत्रहै ७७ कवित्त चित्तकोवित्तवचैनहीरंचकयोंहविकैंहरिलेतऐसेषै लालनें
ननकेवरजोरवकैंकरिकैहीयमेंऽवरेषे येअतिवाटपराहैप्रवीनकेंऔरऽजोनननकेंहम
देषे मोवतचोरचुरावतहैजवजागतकैंहहचोरविलेषे ७७ दोहा विकसतिनवमल्लीकु
सम निकसतपरिमलपाइ परसपजारतविरहहिय वरसरहेंगीवाइ ७८ टीका वर्षारित
कविविहारीदासकहतुहै याजोवरसकेंरहे पीछेजोपवनआवतहै मायाकेपरसनेतें
एतेवांनकैंहै जोनवमल्लीहैतिनकेकतेएकतोकुसुमफूलतहै औरकेतेकपरमलतापा
इकेंनवनिकसतहै औरजोविरहनीहैतिनकेहीयाकोंपरतहै ७८ कवित्त नूतनमालती
फूलप्रफूलतपाय सुगंधसवैसुषमांन्यो सीतलऔमंदपरागनस्योविकसातगुलावचलै
मनमांन्यो जारतहैलगिपंथवधूजनकेहीयराऽपनेजीयजांन्यो रैनसवैऊरलाइरहैफुने
मघरहैनकीवाइविदांन्यो ७८ दोहा गोपअथायनुतेउवे गोरजछायोगेल चलिवलिअ
लिअभिसारकी लतीसंजोषीसेल ७९ टीका चितयमिलाइवो सषीकोवेननायकासोंहै
राधीजोग्वालकैंतेसोअथाइनतेउवेहै औरगायनकीरजकरिकेंमारगछायरह्योहै हे
तेरीवालिजोकं जोपीछेहीचलेतोअवहीचलनेकीचलीसीजोषलीयेसेचलहै ८० कवित्त ८५

जीतन

बिहारी नेहजीतीयेआइलगैजबआइकैलीको पमचौंगानकेषेलतैंऐसोवनावबनैतबनीको ८१
८६ दोहा हसिरदेरतनवलतिय मदकैमदौउमदात वलकरबोलतवचन उलककरलपत
अभी त ८२ टीका मुग्धाकोलीलाहाव सषीकोंवेनसषीसों हेसषीआजनवलनायकाअप
नेनरनारकोंहसिकेंहेरतहे सोक्योंकि मदकरकेमदोन्मत्तनहैहे तिनबासतेंओरनी
बलाकैरबवेनबोलिकेंललकिरनायककेसोंरूपरजातहे ८२ कवित्त हेरतहेहरसीनव
कामिनीसुंदरबानिकसोजबनीरे बोलेंअधोंअतिआछमधुमंदतेउमहातिसुहातिघा
नीहे बोलतिहेबलकैरकलुवेनरसालविसालनसीहे सोललकेंरलपहानिमनानवकेर
मरागसनीहे ८३ दोहा मिलिचंदनबेंदीरही गोरेमुहनपषाइ ज्योंज्योंमदलालीचढे त्योंर
उघरतजाइ ८३ टीका मदहाव सषीकोंवेनसषीसों हेसषीनायकाकेगोरेमुषकीलाल १
चढतीजातहे त्योंत्योंबेंदीउघरतजातहै ८३ कवित्त चंदनबेंदीरहीमिलिकेंअतिउज्जल
आनंदकेंजुकरीहे गोरेगरूरनेरमुहवाजनतताहिसषीनलषीनपरीहे ज्योंज्योंमदलाली चढी×
अनोपमसोनोमहावररंगतरीहे देषोनकुंजुमआइअचोनकत्योंत्योंप्रकासतहोतच
रीहे ८३ दोहा नहोंजहांगाढोलच्यो सोंगमनसुनगसिरमोर विरहरूपियबिनुगहिरहतउ ड ८६

त्रि

तै

33 गाय अथाय नें उविकैं सब आपनें आपनें गेह गये हैं गोरज मैं ऊंच वाइ रही सांझ गरी किरने रवि लाय लगरहै
याअतिसार कीया मन चाह तय दरसन न आय वढये है हे अतिसार न सैल कटा अब सम मैन मा जोष
नामन ये है ७७ दोहा पोरह चति दटरन सुनत लौ गोकसकेसवनोरह लोचिन होंकी तीरमें आं
षिउहीचलिजांहि ७८ टीका साष्यातदर्शन सषीकोवेन सषीसों हे सषी ए जो इनकी आंषि
हैं सो उसुमरल्लाष आदमी की फोज तिनकें विषे आपनें मनवसें ककरनो देषकैं तिलिपर्को
बे अरु वाको सब मरोकर रषेनांही सोए कऊ पमी परै मजन सौ जाय मिलत है ७९ कवित्त सुर
लो युध में जाय पठऊ चत अैसी नमकनरे अतिसारै रोक सके कहो को इन हने अवेदेषत ही सब
कै: के मन मोहे लोचन की वनी नीरन लेर्डं आय रुगे जिनके नीय अरहे आंषिउहीचलिजांही जोरा
वरले तलराई केपमनियारे ८० दोहा सरस सुमिलि चित उरंग की करिश्कमित उवांन गायन
बारे जीतीय बेले पमवोगांन ८१ टीका चित्तलगन सषीकोवेन सदानूसौं उमारचितरूपी
जो उरंग है तिनकी अमित कहलौं अवेरउवांन करिकैं नीसी मिरस मिलि हैं सो अब गायानिरे
हें तें या पेमरूपी वांगान के षेलमें जीतीयउहै ८१ कवित्त आवो सुरंग सुमनतनसी गतिचि
त्त उरंग मनोरह जीको नांक उवान अपार महा करिकैं २ अतिसार हसही को गायन वारे विन

३३ग गनुअजौवरवार ६४ दोहा टीका अभिलाषदसा नायकाकोवेंनसषीसों हेसषीश्रीस्याम
सुनंगसिरकेमोरतिनकोजहांजहांवादेनयोदेष्योंऊंनो सोअबविनहीपियवहगौरकोढि
सुनरिनेतनगहेरहतुहे ६४ कवित्त गोहेलबेहेजहांजहांस्यामसरूपनकेसिरमोरसलूने।
याविनुओरसुहाइनसुंदररूपसिंगारकेजोलअलूने वेनागयेमथुराकऊंमाइसुध्यौधरा
पाइलगाइकेटूने वोरहेगहिराषतचित्तअजौंनयनांनविनाउनसूने ६४ दोहा रंगीसुर
तिरंगपयहिले लगीजगीसबराति पेषहुपरिवदकिके ऐंफिरीऐंनाति ६५ टीका
मध्यासुरतांत सषीकोवेंनसषीसों हेसषीयाकोसरलारसुरतिकेरंगतेंलकेरंगीहे सो
रंगतकेविषेजागतेंसबरातिलागीहे सोअबआलसभरीऐंनावतहे अरुपेषहुपरवरी
हेरहतहे ६५ कवित्त रंगरंगाइषरेरतिरंगमेंनारिनवोढनयेरंगलीने पीतमकेहीयलां
गेलगीसबरेनपगीरसपैहिगकीने पैंननपेंननपेंलनकोववकातचलीसुतरोजनपीने रू
पनरीमुसक्यानितरीमुषऐंहतरीऔऐंनातनवीने ६५ दोहा जोलनुलहिपाईडरी चोरी
सोरहकरेंन सीसचढैपनिहीवगट कहेतुकारेनेन ६६ टीका अधीरापंडिता नायकाकोवें
ननायकसों होजोलनसोरहकरोमती उमारीजोचोरीडरीसीऊंली सोलहपाई सोकेसेंजं



पपनी

बिहारी
८७

नी उमारे नेत्रांकी नांपन मी सकों चटी जातिहै सो उकारे कहि देत है ८६ कवित्त नेंदकें लीन
न ले लहि पाप हो सों हे कीये नड रे कऊं चोरी ऐसें मन बैदि गजां न न तहैं ऐसें ही तुं मति जो ने इहें य
ति नोरी मी स चढे है पन ही का हि देत उका रे बिलोचन मो कहा थोरी लाज नहो वह रावत हो कें
तयों बिनती करऊं कर जोरी ८६ दोहा चुरत सुरति कैसें डुरति मुरतैं नैन जुरनीठ कोंनीदे
गुन रावरे कहै कनोंडो नीठ ८७ टीका अधीरा षंडिता नायका कोवेंन नायक सों हो कोंन
केदुरत ही ऐसेंन अस्त्री की सुरति कैसें छिपत है सोद्ध्योंकि नेत्रों की जुरनी वसी मुरत है
व फाटस्यों रहे अरु गुरु रावरे ह्या है और कनोंडो निजर हे सोए को नीदी ये कहि देतु है ८७ क
वित्त कैसें डुरै सरद की रसि कांन्हर अंग सबै अलसांने न एहै रातिरमे रति ओं तिया संग
नी मुरैं जुरनें नन ए है एगुन बंत सबै गुन रावरे लोक सुहाम नेका पेलये हे लाज कनोंडी वि
लोकति नें इह कों नीदि ये कहि के जु दये है ८७ दोहा मरकत भाजन सलिल गति इंदु कला
के बेष झीन झगा में झलमलै स्यांम गात नष रेष ८८ टीका धीरा नायका को वेंन सषी सों
है सषी ज्यों मरकत मनि को भाजन के सो सलिल कहें तां पांनी की गति कै अरु तिन में न
वे चंद्रमा को वेष कै सो सां ने स्यां इन कै स्यांम गात और झीनो झगो तिनमें ओं न अस्त्री ८७

३५८ केनषकीरिषफिलमिलरहीहै ८८ कवित्त नालननीलमकोजलवीचिपर्योकहोंदेवत
कीगतिलीने नापरिइंडुकलाअबरोहनसोईनयोहैमहूपनहीने ऊनकगामेविराजत
हैअंगमामलत्तानपरेषन वीने येउपमानवकोनटकेतकआवततहेकछुकाहिथवीने ८
८ दोहा बालमवारेसोतिके सुनिपरनारिविहार भोरसुअनरसुरिसरली रीझषीजइकव १
र ३८९ टीका प्रौढाधीराधीरा सषीकोवंनसषीसों हेसषीरावेरेआपनेप्रीतमकोसोति
केवारेपरअस्त्रीपासगवनकोयोसुनिकेऐसोकह्यो केरसउपज्योओररूअनरसउपज्यो
रीसमानीओररसीमानी षीरीझीओरषीजी सोइतनीवातएकेंसाथहीकरी ३८९ कवि
३ त्त वाँमवारकोसोतिकसोतबसुदरयागवनेआतिसोहे ऐसेमेंएकमिलीपरकामिन १
वासोविहारतहीमनमोहे तामुनिकेछिनमेंसुनिनारिनएकहीवेरनयोकऊकोहै रीझ
औषीजरलीरसनोरसओरसुनोविहसेकरिसोहे ३९० दोहा उरतनकुचविचिकंचुकी
चुपरीसारीसेत कविअंकनुकेअरथलों प्रगटदिषाईदेत ८९ टीका कुचसोना सष १
कोवंननायकासों हेराधेएतेरेकुचकंचुकीसेतसामीहै ओरचोपरीहे तिनकेविषैउर
तनोंहीहै सोकवीसरअंकवाचतहीअरथकोंजोनेजातहे त्योंएकुचप्रगटसोदिषा

विहारीटी ईदेसहै ॥८०॥ कवेन कंचुकी वीच छिपे न पयोधर है आति उद्वत न्याव तैपी कै साढी सो हाम
७८
३५
...नी सेत फुले न सों लै चुपरी सब साधन ही कै दीव परे आति ई वके जाहर स्यों उपमा कवि
राजन जी के ज्यों कवि क्यों कनके परमारथ देषत ही सगरे सब नी के ॥८०॥ दोहा नई जुबदे
तन वसन मिलि चरन सके सुन वेन अंग ओप अंगी डुरी अंगी अंग डुरे न ॥८१॥ टीका
अंग सोना सषी कों वेन नायक सौं है कांन्ह जू राधा जू के तन की छवि जो वसन मिले सोन
ई सो तिन छवि को एक वेन क्यों वरन्यो जात नांही है सो कैसो है कि सरीर की ओप तिन में
अंगीया डुरगई पै अंगीया में अंग छिपायो है सो छिपत नांही है ॥८१॥ कवित्त यो नई है
मिलके तन अंबर ज्यों तिज गे उसति ओप नई है कौन वषान करे यच यनां कर शिक्षा पगिरां
कहि सुकल ई है ऐसी अनोपम अंग की दीपति वाले डुरी अंगीया जु नई है और रस वं
लो सुनो जके कंकव अंगीन अंग डुराई लई है ॥८१॥ दोहा सोनजुही सी जगमगति अं
ग अंग जोवन जोति सुरंग कसुंभी कंचुकी दुरंग देह दुति होति ॥८२॥ टीका अंग सोना
सषी को वेन नायक सौं है कांनजू राधिका के अंग प्रति अंग के विषे जोवन की जोति है
सो सोनजुही सार सी जगमति है सो तिन के विषे सुरंग कसुंभ कंचुकी पहिरी है ता को ७८

35A

सरीरकीउतिकरिउरंगसीहोतहै एउ१ कवित्त सोनजुहीसमहोइरहीकिलकैउतियाव
नकीअतिनीकी वाकेसवैअंगअंगकउगमगाचंदमरीचिलगेकबुकीकी कंचुकीजोसादि
रीहैसुरंगकसुंभीरंगीमनोप्रीतमयोकी देहकीदीपतहोइउरंगसीआभीलगेइहभावती
जीकी एउ१ दोहा हीविवरतबांधीअरटनु चढिधावतनंदलाल इतउतेचितउक्रनके नट
लोंआवतजात एउ१ टीका चित्तलगन सषीकोवेनसषीसों हेसषीअटनुसूधीलैकैंपी
तरूपीतोवरतबांधीहै तापरिदोनोंकोचितइतउतेअरुउततेंज्योंवादीगरआवेअरुजावे
त्योंइनकेऊपरचढिकैंधावतिहै पैनरतनोहीहै एउ१ कवित्त हीविसुद्धसंअटानसुंबांधिकें
रूपयोवलकरेरंगरातें तापरिधावतहैचढिकेनंदलालकबूअनुरागनमातें केउइतहीउ
तहीअतिचंचलरंचनचीचकहोवहरातें आवतजातउहूनकेचित्तपडेनटलोंकबकंनअध
ते एउ१ दोहा फरकिचढतितउततरतिअलो नैकनघाकतिदेह नईरहतनटकेवटा अटकी
नागरदेह एउ१ टीका चित्तलगन सषीकोवेनसषीसों हेसषीनायकाज्ञनागरज्ञकेनेहसें १
अटकीहैसोअटानपरसितावीसोंचढतिहैअरुउतरहतहै पैनेकहीदेहघाकतिनांहीहै
ज्योंवादीगरकोगोटकाहैसोंहीरहीहै एउ१ कवित्त ऊंचीअटाफटकैचढिजातनिहारउते

बिहारी
४९
36

उतरै तैलहै है नागरनंदकुमारकेनेह लली अटकी मिलवेकौ चहै है ऐसै अवेरिषसाधलन
गीकुनिनैकनबाकतिदेहकहै है देषलहीनटकेकरमैंजबआवतजानतनटासीरहै है ॥ अथ
दोहा लोनलगैहरिरूपके करीसाटजुरिजाइ हौंइनवेचीचीचहौ लोइनवनीबलाइ ॥ ९
५ टीका पूर्वानुराग नायकाकौवेनसषीसौं हेसषीमेरेनैनअरुहरिजूकेरूपकेलोनके
वासतेआपहीजुरिजाइकेसाटकरी सोवासाटनोयोंहीजरहौ अरुवीचहीसोंमाकेंइन
वेचिदईसोएनेत्रवनीसोबलाइहै ॥ अथ कवित्त लोनलगैहरिरूपकेलालचीअसेनदेषक
रूंजनमाही साटिकरीजुरिजाइकैनीकेहीबेलनैबीलेकीदेषिकेकोही हौगलिकेइनवे
चीकहाकहूंवीचहीदीवअवेवसिनांही लोयनकोयवनीजुबलायहैमेरे हौजीयलीया
उहीजोही ॥ अथ दोहा चिलककिचकनईचटकसो उफलीसटकलौंआइ नारिसलोंनीसांवरी
नागनलौंडसजाइ ॥ ९६ टीका नायकाकीचेष्टा नायककौवैनसषीसौं हेसषीयानारि
सलोंनीसांवरीचिकनाईलीयेचिलककाकरतीसिनाबीसोंसटककीनांईआनकेलफतिहै
ओरनागनकीनांईडसिजातहै ॥ ९६ कवित्त हेचिलकैचिकनाईनरीअतिसोहतहैचटके
संगलीने एलपकेसटलोंविनआइकेमेरीयेदहहलीहैएकौनै सांवरीओरसलूनीनि

36A
हारतनारिनईकोउरंगनवीनैं नागनिलोंडुसिजाइअचांनकदेह नईसुषदुरकविहानैं ७६
दोहा लोरसराच्यो आनवस कसौकुटिलमतिक्रूर नौननबौरीकोंलगे बौरीचाकिअंग्रूर
७७ टीका मोंनमोचन सषीकोवेंननायककों हेराधेजोतरेरससुराच्यो है ताकोंअनुसरि २
केवसनयोअैसोकरै सोकुटिलहैवांकीमतिक्रूरहै सोकिनदृष्टांत जिनअंग्रूरवाबीहै
ताकीनीरकोंनिबारीकैं सलागे ७७ कवित्त तोरसराच्योहै आनबंधूदसएनेदनंदनहै २
इगाकैसे क्रूरकुबुद्धिकहांनोकहांअहोजेसमुकैतोकहैकबुत्यैसे नीरनिबारीकहांकत।
लोगतयद्यापिवापरिपाकनएसे बारीलईनहीनांननतजांनन्हुआपलेचोषिअंग्रूरलयेसे
७७ दोहा हुरेउरूनकेहगऊंमकि रुकेनफोनैचीर दलकीफोजहहरोलज्यों परेगोलपर
नीर ७८ टीका सषीकोवेंनसषीसों हेसषीदोनांकेनेत्रफोनेचीरतैंरुकसकेनही
किकेजाइमिलेसाकेसीपरेकि ज्योंलराईकेविषेहरोलकीफोजहलनकोंडेलेलारन्अनुराग
रपरेलो ७८ कवित्त सांमामिलेउहीबारअचांनकवेवेकुलेसवग कविबिहारीदासकहे
इनुरेहडकंनेकेरुमकेमनन्नावलहीक कोंदुजैरुकेनहीचौध्तासरीरडलिकरिके अनुरा
लहीके ज्योंहलकोंअतिफोजहहरोलकीनीरपरेमनगा

पिहरीटी रकुसमके रहेग्रंगलमपाइ लगैजोनिनबक्रनभली केलवकौवहेहे ऐसेसबवेदिषमाधलन
५० संयोगरूषिता राधिकाकौवेनगजम्पम्रीसौं हेग्रस्त्रीत्रंगरनपाग्नावतजाननतासीरहेहे ८८
37 मकौमालनपरि राईहै सोतौवरावरीकरिकैग्रंगतैलपटाइरहीलहो लोइनवनौबलाइ र
नबुलीकरहतांकलीमजानियतुहे सोतासेंकैयोंग्रनघातहे ८८ कविस हेसुरूपकेलोनके
सरग्रंगररहेलपटाइइहैलविलौने जोननतयुग्रपने विलनौतरयेनयचौरबघनेकेदन
येंग्रकुलाइकिलीविललनौतकरहनयोताहिनईननवीने बोलतकैंग्रनघाइग्रली
कहैकारेकौंहोतग्रबेहितहीने ८८ दोहा डिगमौचतमगलोचनी नस्पौउलटतुजबाथ
जोनगपतियनाथके हाथपरसहौहाथ २०० टीका मिलननलौनाहाव सषीकौवेनस
षीसौं हेसषीमगलोचनीकेनत्रमीचतांईतुजउलटकें तुजवाथमेनसोमातियाहाथके
परसनेतेईजाननयेकिनायकके हाथहे २०० कवित्त बामगलोचनीकेडिगकौनिरवेतें
वरुइकनेदकीयोहे लैतलटाइनस्पौतुजबाथसौनारीनवाटकौगैसारीयोहे जोनगई
ईहेनाथकेहाथपहुंपजेबेहाथनकोउवीयोहे केलिककेइरनातिग्रनेकउनेसुषदेफुनि
ग्रापलियोहे २०० दोहा वहननहूजतेगुननविनु विरदवनाईपाइ कहतधतूरेसुकन ५०

37B

कै गहनो गढ्यो न जाइ १ टीका अन्योक्ति कवि विहारीदास कहतु है रे नर जो विरद की
वडाई पाय कै वडो कहायो सो गुनां विगर वडो कैने को नांही सो कैसी परे कि धतूरा कों कन
क कहि बुलावतु है पै गहनो गढ्यो जातु नांही है ते सो परे १ कवित्त आप वडे न हीं हूजीये कै
से विना गुन काज न को ऊ सरयो है नांम की वडाई कूं पाइ कै आपने पेट न हूं राख्यो इसव
लोक कनक धतूरे कहै तो कहा कबू कांम कर्यो है भूषन होइ न री कबकं इह नाम मत्र कारथ
पाइयो है १ दोहा कनक कनक तें सौ गुनो मादकता अधिकाइ उहि षाये वौराइ इहि
इहि पायै वौराय २ टीका अन्योक्ति कवि विहारीदास कहतु है धतूरौ सोना तें मद विषै सौ गु
नो अधिकौ है पै धतूरा षाये गहलो होत है अरु सोना पाये ते धनी राज पाई है २ कवित्त एक
कनक धतूरो कहै अरु एक कनक हिरन्य कहो है ये दोऊ वीचि कनक कनक तें सौ गुन माद
कता वल सो है षात उन्है जब बावरो सो अरु सो सुनावत सिद्ध कर्यो है याकी सुनो अधिकाइ ज
गत में एक नर पाइ बौराय वसो है २ दोहा तजि तीरथ हरि राधिका तनु दुति करि अनुराग
जिहि ब्रजकेलि निकुंज मगु पग पग होत प्रयाग ३ टीका नाइका सों कवि विहारीदास कहतु
है हे नर तीरथ कूं जातु है सो तजि कै हरि अरु राधिका इन दोनुं की सरीर दुति करि कै अनुरा

धिकारी

५१

३४

गयनोतिनकरिकें नंदहोरभुजनकेरउंजविषेओकाकोवीहै सोमारगमेंपगपगप्रयागतीरथकेरहोहै

२ कवित कासीगयाअरूगोमतीद्वारिकाबांधिकेंद्दतीरथमानुषहोरे श्रीहरिराधिकादेहकी

दीपतिकेंअनुरागसबेमेंगतोरे कहनकुंजनकेमगजीतरश्रावतिदंपतिहाथनजोरे जोंन

तहांछुजकोमहिमाकबपैंकनपैंकप्रयागहेथोरे ३ दोहा छिनछिनमेंषटकेतिमुहिय परी

नीरमेंजात कहितुचलीपिनुहीचितें श्रोटतुहीचिचवात ४ टीका श्रवानुराग नायकंकों

वेनसषीसों हेसषीयाषरीनीरकेविषेजातीथी श्रोरश्रावाहीवीचिवातकरिकेछिनहीछि

तेचालीसोअबवाछिनछिनमेंराहीयामेंषटकतिहै ४ कवित्त नीरमेंजातकहेजुचलीगई

सोषटकेमनकुंअतिमेरें वाहीकेंजीयकीजांनिपरीकछूअंकलातनईछिनुहेरें श्रोवन

हीचिचवातरहीकहिवेकोंपगीउफकीवकतेरें लोककीलाजकहानपरीपेंकहाकरीयेंकहि

सातनटेरैं ४ दोहा अजोंनआयासहजरंग विरहदूबेरंगात अबहीकहाचलाइतु ला

लनचलनकीवात ५ टीका प्रवत्स्यतकिा सषीकोवेंननायकसों हेलालनअबहीसों

चलनकीवातकहावलावतहो याकोंतोआगेविरहकरिकेंदूबरोगातनयोहै सोलाजमें

लगिसहजरंगआयोनांहीहै ५ कवित्त आयेनहींअजहूंजेमुलावकेरंगहसुंदरकोंन १. ५०

३८A निहारो हवैरो गात नयो है लकीर सी ऐसे मो सखै मन वियोग तिहारो ऐसे मे क्यो इह वात च
लावत लाल ने आपने ते जु विहारी हो वरजो अब आपनी सो है केवासंग वा विधि वात नि
हारो ५ दोहा अवुने कर गुहि आपरव हियपहिराई लाल नोलसिरी औरे चंदी बोल
सिरीकी माल ६ टीका प्रेमगर्विता सखीको वैन सखीसों हे सखी लाल जू ने आपने कर सों
ल वों सिरी की माला संथ अरु हव करिकै वाके हियाको विषै पहिराई सो तब लैन वोदा सिरी
कहतो लक्ष्मी जू की नोंति चित मे गरबी है ६ कवित्त आपन ही है विकै अपने कर लै पहि
राई हियै अवला को बोलसिरी की जु माल विसाल सुनो नंदलाल नली विधता को नोल
सिरी चंदी औरे अनूपम ऐसी निहारत हू अब वाको हेरति है फिर ही फिर वाही को आ
वे गरो जम अंबन हीया को ६ दोहा नई लगनि कुल की सकुचि विकल नई अकुलाइ दुकु
और अवी फिरत फिर कीलों दिन जाइ ७ टीका चिंता दसा सखी को वैन सखी प्रति हे सखी
या राधिका के नवी ही तो लगन लागी है औ कुल को नय है सो अकुलाइ कै विकल नई है
अरु दोनू और को ऐवी मार है उहे फिर को की परे दिन जातु है ७ नैननि नह लग्यो है नयी सकु
वात घनी कुल तै वन नागी वावरी सी नई मो लगति है अकुलाइ रही सगरी निस जागी वाकी

बैहारीरी दमाजु नई सो कछु व कछु गैवी फिर उझको रन लागी यों दिन राति विहाल नहीं फिर की सम ये
५२ मत्र संग निपागी ७ दोहा इतते उत उत ते इतै छिन कन क छु वहरात जक न परत जक
39 री तई फिर आवत फिर जात ८ टीका अभिलाषदशा सषी को वेन सषी सौं हे सषी रा
धिका जू अंधारी राति कौं जक परत ति नांही हे श्रीकांन्ह सौं मिलने के वासते इत ते उत
जात है अरु उत ते इत आवत है पल कहूं कछुं ठहरत नांही है सो कै सी परे कि ज्यों चकरी
फिरि आवत जात ज्यों भई है ८ कवित्त आवत है इत ते उत कै उत ते इत कै इहरी तन है
है नेक के ठहरात न पसुनियां विध वेचल नाई लई है सो दीप रे जक वा कौं दिवा निसि दे
षत है चकरी सी भई है आवत है फिर के फिर जात है आपनी सो तिन भूल गई है ८ दोहा
निसि अंधयारी नील पटु पहिर चली पिय गेह कहो दुराई क्यों दुरै दीप सिषा सी देह ९
टीका कृष्णाभिसारिका सषी को वैन सषी सौं हे सषी राधिका जू अंधारी राति के विषे नी
ल वस्त्र पहिर के पिय पास चली है सो कहो कि छिपाई कै सो छिपे जा की दीया के सी लाय
सा रसी देह है ९ कवित्त है अंधियारी महा निसि माघ की नीलनिचोल पैरो मन मोद वा
पहिर पिय गेह चली अंधयारी विष कौं अभिसार समझो है क्यों हूं दुरै न दुराव की ये सबि ५२

३५A

देहतोदीपसिषासमसोहै बेठकहीरहीजाकुनकैाअबतोसरूपतिलोकमैकोहै ८ दोहा रह्योदीव
दादसुगहै ससिहरगासोनसूर मुरझ्योनमनुमुरवानचुति नोचूरनचपचूर १० इवीनुराग नायक
कोवेनसषीसों हेसषीमेरोमनुससिहरकहतोराहहतीयानांही नकोउसूरतापनोकह्यो पेदीव
हैसोदादसपकरकेरह्यो सोनायकाकेमुरवानकहतोगियोतिनकेआरुचूरिकेविचेचिपकेचूर
नजयो पेंमुरझ्योनांही १० कवित्त दादसकोगहिकेरह्योदीवकेऐसोवदोतिनधीरविराजे सूरषरोहै
मुरझ्योनाहीरवकयोरिगुकेगनमेंबविराजे फेरिमुरझ्योनगयोमुरवाचुलियोमनआपनेसाककों
साजे चूरनलैविपकेनयोचूरसोऐसोअबहऐबहदवाजे १० दोहा सोहगूंगापाइके अनव
टजस्योआगेराय जीत्योतरवनिडुतिसुंदरि पर्योतरूनमनोपाइ ११ टीका अनवटसोना सषी
कोवेंनसषीसों हेसषीराधिकाकेपाइकेअंगुवाकेजरावकोजस्योअनवटसोरुवुहै सोकेसोहै
कितरूनसूर्यतिनकीडुतिसुंदरिपनेकीतरूवनजीत्योहै मांनोसूर्यआनिकेपाइपर्योहै आ
अरयंगनसरूपहै ११ कवित्त सोहतपायकोआवोअंगुवासुताकोअनोटजरावजस्योहै ऐ
सोविराजतहैअतिसुंदरवाहीमेआयअपारनस्योहै होरिपरीइनदोऊंसमानकेवाहीकोकाज
कबूनसस्योहै जीत्योतरुरोनकीजोतिमनोंठरिसूरजबालकेपाइपर्योहै ११ दोहा जांघजुगल

बहारी टी
५२
40

लोयननिरे करैमनौविधमेंन केलतरुनडुषदैनए केलकलासुषदेन १२ टीका जोघमोना
सखीकोवेंनसषीसौं हेसषीराधिकाजूके जुगलजेनाएजोघहै सोमानौमें... विधिहै तिननिरे
लोइनकरहलांस्पतिनहीजकोकरीहै मोजोघांकेसीहैकि केलिकेरुषहै तिनकोंतेउदुषदेनको
है अरुकेलिकलानिनकेंविषेसुषकोदेनहारहै १२ कवित्त लोइनबीचनिरेजुगजंघकरेविधमें
नमनोअतिनीके हैबकुपीननिरोममनोहरहारहैकरनेकरहीके केळनकेतरुकोउदुषदे
यकअेसबलायकनावतजीके ओरकहाइनकीमहिमाकहेकेलिकलासुषदेनहीपीके १२
दोहा रहीपकरपाटीसुरस नरनैौहवितनैन उषिसुपनेतियआनरति जगत...कुलगतहिये
न १२ टीका मांन सषीकोकहै सषीसों हेसषीराधिकाजूसपनेकेंविषेपियकोआनअस्त्री
सोरतिकीवीजांनिकेजागी...पहियेलागतिनाहीहै वारतिजांनिकेरीससोनोहअरुनैनअ
रुचितनरिकैपाटीकरहतोइसपकरकेरहीहैं १२ कवित्त पाटिरहीपकरेरिससैंतनरसिकैतगु
टीचितनैनजरेरहै देषतहीसुपनेपीयआंननवधुसंगकेलिविलासकरेहै नेनलुलेतबजागिप
रीतकुआइगरीअकुलाइअरेहै लागतिनोहिहीयेअतिदुरकतैयाविधिकेमनप्रानपरेहै
१२ दोहा नियहीयउचितचाइलगि चजियाइउहबपाइ फुनिसुनिरसुषमध्कर्कनि ५२
हा

बिहारीस

५४

40A

कौंनलालकुलत्याइ १४ टीका ललितहाव सखीकौवेंननायकसौं हेराधेतेरेपाइकोपाइलतिन्हक १
वाजताईनैंही नायककौचित्तमेंचाहलगाइकैहायलकियेहै सोअरसुनितोजोहरेमुखकीमधुरी
धुनिसुनिकैंलालकौंनललचावै एतावाताललचाँहीज १४ कवित्त हायगयोअतिहायलछि
नलगीजबवाइषरीदुषदाई याकोकछूनहींदोषअचानकवाजउवेनुयपाइलमाई केरिउतैसु
निकैंमधुरधुनिकौंनललचैंनकुमारकेन्हाई एकलिहारोसरूपअनोपमहूसरीदेहदिपैअ
धिकाई १४ दोहा लीनेकसाहसससहस कीनेजतनहजार लोयनलूसिंधुतनु पैरनपावतिपा
र १५ टीका साष्यातदर्शन नायकाकौवेंनसखीसौं हेसषीमेरेलोइननेहजारेकलोसाहसले १
नेअरहजारेकजतनकीने पैराधिकाकेतनुरूपीसिंधकैहैतिनकौंसिरतैलोयनोंकोपारपायो
नांही १५ कवित्त लीनेउसाहसकेलेहजारेककीनेजतनकरोरकमेंहों याविधकैकेउपायर
हीवकिमैमरजादनषीअबतेंहों लोयनतूसिंधपरेतनपैरनपारकहाकोउलेहों आपनेहातन
होइहैंवातकरीकरतारसबैजाकेहों १५ दोहा पटकीढिगकतदांपियत्तु सोभनलसुलगसुवेष हदर
दबरबविदेहयह सदरदबाललकीरेष १६ १६ टीका सुरतांत सपीकौवें नायकासौं हेराधे

६=

बिहारी टी
५४
41

योपद्दकीदिगकरिकैकतदापतहै नलेनागसोंनलेवेषसोमनतहै इदतोयाकीरक्षबाद्दकी है पैसरददरिततिनकोंबततिनकीरेषकीबविदेनतहै १६ कवित्त क्योंपदकेदिगहांपतहोञ्र पनैनिसनाहद्दईगिरधारी ऐसीविराजतहैअतिसुंदरआपअनोपमहैबकुनारी येरद्द कॅबिदकोबविराजतयाकोनिहारतऔरकहारी योंसदद्दंतदीयेनेलगीअबघावकीरेष नईसुषकारी १६ दोहा नाहगरजनाहरगरज बोलसुनायोटेर फसीफौजमेंबंधबिच हसीसबनतनुहेरि १७ टीका मुदितहावरस सषीकोवेंनसषीसों हेसषीरुकमनीजूकेंा सिसपालनाहकीसोंगरजनांहीहै अरुश्रीहरिजूकीगरजहैसोवासमैटेरकरकेंकाह्यऔ सोबोलसुन्योकिहरिआए तबरुकमनीआपनेबंदजनकीफौजविचफसीथकीसबनुके तनुकुंहेरिकेंहसी १७ कवित्त नाहरगरजकेनाहरकीरवयोंअपनेमनआदरनारी आ वतहूंपलमेंदिगतोकहिबोलसुनायोहैटेरकैनारी फौजमेंआइफसीबंधुयाबिचकोनउपा यकरैंअबवारी योंसुनकैंकुलसोधिरकेंहसिजोबनकीसबदेहनिहारी १७ दोहा कीजैचि तसोईतरे जिहपतितनुकेसाथ मेरगुनऔगुनगननु गनोनगोपीनाथ १८ टीका नजि

५४

५।त तहीमनमेंनरह्योहै ऊचेउरोजसरोजमुखैअनआंचरआंननसौंपकर्योहै ५० दोहा लईसोंह
मीसुननकी तजिमुरलीधुनिआंन ।कियेरहतनितरातदिन कांननलागेकांन ५१ टीका श्र
वनदर्शन सषीकोवेनसषीसों हेसषीराधिकाजूमुरलीधुनिविनाओरधुनिसुननकीसोंहमा
रसीलीनीहै सोवाधुनिकेवासतेरातिदिनकांननकेविषेकांनाकियेहीरहतिहै ५१ कवित्त ।
सोंहसीलीनीहैआनसुनैनकोबांसुरीधुनीमुरलीहमजांनेगीतओवाजेअवेनहीनावतलावतनां
हीहीयेकठूतांनेऐसीतोहोइरहीमुनिकामिनकाऊकीवातनमांनेरैनदैवानितकांननकां × काऊ कों
नलगाइरहैओउपायनवांने ५२ दोहा तूमतिमांनहिमुरकई ।कियेकपटचितकोट जोगुन
हैतोराषहै आंषिनमांफिअगोट ५२ टीका सषीकोउराहनो सषीकोवेननायकासों हेराधे
तेंचितकेविषेकोरिकपटकरिकें जोमतिकोमानकेविषेमोकलीकीनी सोकोंजोतोमेंगुनहै
तोआंषिनकेविषेअरुअंगकीउटमेआपहीतेराषिहै ५२ कवित्त सुकतईमांनियेनदेइजोक
पटविनुकोटिकरेतउमोहिदोनअभिलाषीये कीजीयेहमारोकह्योदीजीयेनजांनकहूंवारवा
रवातसमझाइयहैनाषीये कहेकविकूलयहीकहतसयानेसवदेषोराजनीतिकूकेग्रंथन
मैसाषीये जांनीयेजोगुनहीतोआंनियेनओरठरनीकेहीअगोटकरिआंषिनुमेराषीये ५२

बिहारी टी
९२
५१

दोहा गिरतें ऊंचे रस अधिक मन बूडे जहां हजार बहै सदा पसु नरन कौ प्रेम पयोधि पगार ५२ टी
का प्रस्तावीक कवि विहारीदास कहतु है रसिक जन है तिन कौं तौ मन गिरि ही तें ऊंचो है पैंय
प्रेम रूपी समुद्र तिन में हजारी बूडे है और पसु नर है तिन कें यों ही जु प्रेम रूपी समुद्र पगा रस
म है ५२ कवित्त ऊंचे पहार तें ऊंचे रसीले के मान मन आपने ज्ञान लीयो है बूडे हैं आय हजारा
जिहां अहो आपने अंगनि दान दीयो है सो वह प्रेम पयोधि सदा इह पामर तुं जु पगार कीयो
है नेह न जान तन नाहि न बूडत ऐसो अनार जु कौं हीयो है ५३ दोहा नावक ऊउर सो नयो
कबुक पस्यो नरु आइ सीप हरा के मिस हीयो निस दिन हेरत जाइ ५४ टीका मुग्धा नवो
ढा सषी कौ बैन नायक सों हो कांन्ह जु राधिका के नावक जो कहतां लिगार एक उनरो हो कहतां
उचास पनो नयो है और तिन उचास के विषे आन के कबूक नरा व पस्यो है सो सीप के हार के मिस
करि कै राति अरु दिन हीयो देषते जान है ५४ कवित्त नावक आय नयो उनरो अब कै है उरोज इहे
अधिकाई और सुनौ नव कांमनी के हीय बोऊ पस्यो है कबु बात कहाई सीप के हार बिलैकै रआ
पनो हेरत ही यह दिवा निसि जाई यों सक धीर धरो अब कांन्ह रसौ वह बाल उनई सुषदाई ५४ दोहा
गली अंधेरी सांकरी नो ऊटने रा आंनि तरे पिपि बाने परस पर दोहू परस पिछान ५५ टीका ९२

अेघरकौमिलन सषीकोवचनसषीसों हेसषीसुनिअंधेरीतौरातिहै अरुसांकरीगली तहांदोनुं
कोआंनिकैं नटनेरानयो सोपरसपरपरसंपि अंगनकैजांनिपरेहै ५५ टीकवित्त सांकरीएक
अंधेरीगलीमधियालहीराधिकाआयेकन्हाई सोनटनेराअजांनउकुंनकोंऔसीनईअति
व्याकुलताई नीकेपिबानेपरेहैपरसपरदेहपरसआपिबानननमाई लाजनकुंगाफिवेउरकेसुनि
यातरहेहवनआंगनआई ५५ दोहा कहिपवईजियनावती पियआवनकीबात फूलीआंग
नमैफिरै अंगनअंगसमात ५६ टीका प्रेमगर्विता सषीकोवचनसषीसों हेसषीतरतारआ
पनेआवनकीवातराधिकाकोकहिदेनीसोप्यानीयकीनावतीवातसुनिकैंअंगनकेविषे
फूलीसीफिरउहै अरुअंगीयाकेविषेअंगसमावतनांहीहै ५६ कवित्त हेसषनीमननावती
तूसुनिवाहीकं काकुनिवातकहीरी नाथतिहारौदिनेकमेंआवैगोमोपैपठायसंदेससही
री नाविनतेंइहफूलीसीडोलतबोलतनांहिनऔसीरहीरी अंगननतेंघरमेंघरतेंफुनिअंगन
अंगसमातनहीरी ५६ दोहा दिनदिनदेषेवेकुसुम गईसुवीनवहार अबअलिरहीगुलाबमें
अपतकटीलीडार ५७ टीका अन्योक्त कविविहारीदासकहतुहै रेअलितैंजिंनादिनजोवेफू
लदेषेकुतेसोअबवावहारवीतगईहै अबइनगुलावकेअपतअरुकटीलीडारोरहीहै ५

विहारी टी. ३ जेदिनांदेषे हवेनलेफूलसोरागरंगीलीसीवांनिवनीहै सोगईबीतबहारहज्जारकुकोसन्नबेह
६२ हरीतिलहीहै रूपमहामकरंदसनैउन्हगोन्नबनांतिनलैईसहीहै देबिन्नलीन्नहोन्नागुल
43 बन्नयसेकदीलीमीमारहीहै ५७ दोहा मैंवरजीकैवारतूं इतउतलेतकरोट पंषुरीलगे
गेगुलाबकी परहिगातषरोट ५८ टीका सुकुमारता नायकनायकाकोवचनपरस्पर कांन्ह
बोलेकि हेराधेमेंतोकोकेवारबरजीकि इतकरकोंओरक्योलेति तबराधाबोलीकि हेकां
न्हजूमेरेगातकेगुलाबकीपांषुरीलागेगीतोषरोटपरेगीसोतिनवासतेदेउहो ५८ कवित्त
मेंवरजीतुहजारकवारनमांनतओनओबेलरहैजू लेतकरोटइतेंकतमाईरीमेरोकह्यो
हियराधरिहैजू पंषरीलागेगुलाबप्रसूनकीयेसुकुमारकहाकरहैजू रूरकरोपलिकाइ प्रसन्न
हसोंतिनगातषरोटषरोपरिहैजू ५८ दोहा नीचीयेनीचीनिपट दीठिकुहीलोंदौरि उठिउं
चेनीचेदयौ मनकुलंगझपिझौरि ५९ टीका सर्वानुराग नायककोवचनसषीसों हेसषी
राधिकाकीआवनीचीऊंती अरुनीचीजोवनीऊंती सोवाकीदीठिकुहीकीपरेऊंचीउडिके
मेरेमनरूपीकुलंगकोंझपिझोरकेनीचेदयौ ५९ कवित्त नीचीयेनीचीनिपटकुहीसमा
दीठिआवांनदौरिलयोहै तेजततांईकहांकहुंनाहीकीदेषतहीमनहेहलयोहै कुविके ६२
री

43A

कसे बेनीन न्ह और न पहुंचन मैं परत छुबयो है जैसे उपाय सो आनि गहो पुनि चित्त कुरंग को
नीचो दयो है ५८ दोहा ख्यरउदित कमुदित मनु मुखसुखमाकी और चितैरहत चिकुर और लै निरख
नवषनु चकोर ६० टीका परकिया कहा नायका को वैन सषी सो हे सषी जो सूर्य कमल है ताकु
मनु करिकै मुदित है और मेरो मुख जु है सो चंद्रमा की और है सो तातै नैन रूप चकोर निरख लगा
या चिकुर दिस तै जोवदार हूवे है ६० कवित्त ख्यरउदेते नथ्यो मन मोद सु आनन सुंदर सो लरकी :
और है ऐसो वियोग दहै जनको सगरो निसि बीनन ध्येक कैतो रै देषत है चकु घाते दि तो ननन अ
पनी ही वन और वजो रै एक चितै रहकत नायर है अहो जानत है मनु वंद चकोरै ६० दोहा स्वेद स
लिल रोमांच कुस गहि दुलही अरु नाथ दियो हियो संग हाथकै हथलेए ही हाथ ६१ टीका
स्वाधीनपतिका सषी को वैन सषी सो हे राधा को स्वेद नथ्यो सो सलिल पानी है और राधा रोमांच
तई सो कुस न है सो हाथ लै वै विषही नाथ ने ही यो हाथ करिकै दयो अरु दुलही ने लीयो ए नायि
का के वस है ६१ कवित्त स्वेद सुनी र रोमांच गिनो कुस दान के साधन दो कन ने है मंजुल ह आ
हे अरु दुलही गहि साथ निलेके बनाव बने है हाथ के संग ही चा जु दीयो सब नैनन निसार सेने र
सेने है हाथ लेई हे हाथ नली विध गात ड राई गरूर धने है ६२ दोहा दचन पिय कै वाम न

बिहारीसै विसराई तिय आनि एकै बाषर कै विरह लागी वरस विहान ६१ दछिननायक सषी सो दै
६८ न सषी सो हे सषी दछिननायक जो है सो वाकै वस ह्वै कै और स्त्री कौं विसार दीनी है सो वा [illegible]
५५ सो एक बाषर कर तो घरी को विरह न यो है सो वा घरी वरस सारसी विहावन लागी है ६२ क
वित्त दछिननायक यो वसवास के धाम न आवत आवत जो मे आंन तिय विसराय दई सुंदर रू
प नई आफिरा मे एक घरी का घर के विरह आकुल सेज रचनाइ सिंगार कै मा मे लागी है वर्ष विहान स ^ श्रुत
बाषरएक बी सुनि [illegible] नई बनी या मे ६२ दोहा वाल वेलन सूकी सुषद इह रूषी रुष घाम फेर हह हरी
कीजीयै सुरस सींच घनस्याम ६३ टीका सषी कर्म विनय सषी को वेंन नायक सो हे कोन्हये उमारी
रूषी घाम तिन करि कै वाला रूपी वेल सुष की देन वाली मुरझात है सो हे घनस्याम वा को सुरस सींच कै
फेर हह हरी कर लीजीयै ६३ कवित्त बाल लता सुषदायक सूक गई ऊ मिलाइ सबै सुष सांनी
रूषीये तेरी रुष वर घाम दहै तन कोमन नहीं तुम जानी मै कर जोरि कै रावीन तीअति फेर हरी करी
यै मन मानी हे घनस्याम सबै सुष धाम सुसींच महारस नेह निसांनी ६३ दोहा चित तरसत न मि
लत न बनत वसि परोस कै वास छाती फाटी जात सुनि टाटी ओट उसास ६४ टीका आलिलाष
दसा सषी को वेंन सषी सो हे सषी नायका नायक परोस वसे है सो नायक को चित्त तरसे है दे। ६४

५५A मिलनोबनततनोंहीहै सोदाढीकैउदटउसासलेतीसुनिकेंगातीफाटीजावैहै ६४ कवित्त लाम
परोसबसेंहेदोऊंजनपेंसकुचेंकुलचालकैलीने कोऊकेंमिलेनमिलापकोसोचघनोदिनरात
रहैचितदीने गातीसुफाटीयेजातकहाकरेदेहनईसबसुरकुबेहीनें [illegible]दाढीकीउंदटउसास
सुनेनबेनेननएकरूनारसनीने ६४ दोहा नालरेषमगअंगको कबूउजासोपाइ पीवद
येजगसोरदो हीविरुरोषालाइ ६५ टीका अभिलाषदसा सषीकोवेनसषीसों हेसषी
नायकाकेसरीरकोंनालीकेछेदविषेकबूकउजासोनायकनेपायोहै सोअबसंसारसोंपीव
देकेंमेरावाकोंदीवलगायकेंरह्योहै ६५ कवित्त ऊंचीअटापरिबैठीहीराधिकाएकसमैंस
जनीसुषदीने नालीकोछेदवहीपथहोइकेंअंगनपाइ[illegible]उजासनवीने पीवदयोजगसोर
सोईछदरैनहीदीवउपायकैकीने आपनीहीविरुरोषालगाइवहोसुषपाइमनोजकेली
ने ६५ दोहा परतियदोषपुरानसुनि लषीमुलकिसुषदांन कसुकरराषीमिस्रकें मुहआ १
ई मुसकांन ६६ टीका मिस्रमजाष सषीकोवेनसषीसों हेसषीआजमिस्रपरअस्त्रीकोद २
दोप षपुरानविषेंबनायो सोमिस्रकीजोमित्रकृतीसुनिकेमुलकी सोमिस्रलषी तबमिस्रकें
मुहमुसकानकरीआवत सोकसककरकेंराषी ६६ कवित्त दोषसुन्योपरनारिविहारपु[illegible]न
नमेंपरतीतकैलेष्यो यासुषदानिलषीमुलकीफुनिआपतेंईविहीयेअवरेष्यो राषी[illegible]मि

अज्ञानी विवेक के कमिकै अब कै हियमें मवि सेषो आनन आइ गई मुसिकांनि विया इत नई कछु
काऊ न देष्यो ६६ दोहा सहित सनेह संकोच सुष स्वेद कंप मुसिकांनि प्रांन पांन करि आ
पने पांन धरे मो पांनि ६७ टीका महा हाव नायक कौ नायकी कौ वैन सषी सौं हे सषी प्रा
न वल्लभ नौ नेह सनेह सहित अरु सुष कहतौ रति तिनके संकोच सहित अरु स्वेद कही ये पर
सेव अरु कंप कांपनी साहित अरु मुसिकांनि सहित आपने पांनि कहतौ हाथ करि कै ना
गर वेल के पांन मेरे पांन ऊपर धरे सो मां तुझा लाही जै धरयो है ६७ कवित्त साथ सनेह रस
कोच औ स्वेद के सुरक औ कंप गही मुसकांनै या विधि की कछु प्रीति जनाइ कै ऐसी रसा स
गरी मनजानै पांन लै अपने कर पांन सबै अंग अंग सुधारस सांनै पांन हमारे धरे इह पां
न सुतौ मजनी इह बात की तांनै ६७ दोहा सीरे जतननु सिसिर रितु सहि विरह तनु ता
प वसिवे कौ ग्रीषम दिननु परयो परोसन पाप ६८ टीका आधदसा सषी कौ वैन सषी सौं
अथ नायक सौं हो कांन्ह राधिका के परोसन जो है सो वा के विरह कौ आगु नेतन कौ ताप
सहन कै वास्ते सिसिर रितु कै विषै सीरे जतन करती ऊती पै अब ग्रीषम रितु कै विषै घर में
वसन कौ पाप सौ आनि न परयो है ६८ कवित्त सीरे उपायन के हम जानी सिसिर रितु के दिन हू 

45A

कीयेहै सुमित्र जु वियोगनि की तन ताप दवानल ज्वाल समान कियेहै ग्रीषम कौ वसंत कहुं माई परस्यो
है परोसनि पापहि येहै सो मन मानत पुंडरीक अवजा मसरे नहि को मउ मासम लियेहै ६८ दोहा संग सत सोहत
मानसौ यहै कहै सबलोग पानपीक ओठनु वनै काजर नैननि जोग ६९ टीका सखीकर्म विनय अ-
न्योक्त सखी को वैन नायक सौं हो कौं न्द सब लोग ऐसे कहत हुहै के समान कहता बराबरी को कहै जो जै
सा ही सो है ज्यों ओठन को पानी की पीक ही बनै अरु नैननि को सो काजर ही जोग है सौ ६९ कवित्त सोह
त संग समान कहै सब ऐसी जगत मैं रीति निहारी देव कहु नायक नंद कुमार कही जपरे कहूं नांतित
हीरी पान की पीक सो ओठ वनै अरु काजर मैं नन पेरे अधिकारी ये विपरीति कितें करि आए कहा कहूं
आपकौ कुंजविहारी ६९ दोहा तू रहि सखि हौं ही लखौ चढि न अटा वलि बाल सबहि उ विनहीं ससि उ
दै दीजत अरघ अकाल ७० टीका सुखसोतं सखी की सिख्या नायका सखी को परस्पर वैन नायका
बोली है सखी तैयां ही रहि हौं ही जु नायकै देखुं तब सखी बोली है बाल तेरी बलि जाउं अटा पर चढि न
सो क्यों कि और सब ही विनु ही ससि कै उदै न्ये तेरो उद्योत पनो देखि कै अकाल ही अरघ देवेहि गो
७० सवैया रहि हौं ही लखौं सखी नायकै ऊपर सौध कै काम हमारे सोरह दी ये बलि तोही कहौं कुं चढौ न
अटा अपनी पगधारे है वहि नीविनु ही पगटै ससि होइ गी है रवि है निरधारै दीजति अर्घ अकाल सबै।

तीयत्र्योननत्रुपउजासतिहारैं ७० दोहा दीयौ अरघनीचेचलौ संकटभानेहिजाइ सुचतीकैं औरै
सबै ससिहिविलोकैं आइ ७१ टीका मुषसोंना सषीकोविनय सषीकोवेनराधाजूसों हेराधे अब
अरघदीनीनीचेकौंचलौ जुसंकटजाइकैंनानां अरुऔरसबहीसुचितीकैंकैं आंनिकैचंदमाकौं वि
लोकैंगी ७१ कवित्त नीचेचलौक्यांनअर्घदियोअहोगाढकराइतहोइरहेहो संकटभानहिजाइ
सबैतीयआपनेशुभ्रकवरेहहो कैसुचतीअरवैअबअब्रतफूलऔवेदनहाथगहेहो औरैउयससि
हीकैंवलोकैसुआइइहासुसुमाकौंलहेहो ७१ दोहा ललितस्यांमलीलालल्लनि वढीचिबुकछबि
दून मधुछाकौमधुकरपस्यौ मनोंगुलाबप्रसून ७२ टीका चिबुकसोंना सषीकोवेननायक
सों हेकांन्हललनिकेचिबुककेस्यांमलीलोकहतांकालीबिंदीललिनहै तासोंचिबुककीछविदूनी
षरीहीवढीहै सोकैसीकि प्रसूनकोछाकामांनोंनभरोगुलाबकेप्रसूनकहतांफूलतिनपरपा
स्योहै ७२ कवित्त मोहनीलीलालसैअतिस्यांमलबैअतिरांमहीयाहरस्योहै लालननेनीचढी
चिबुकछबिनारिनगोरहिकैवोहीकस्योहै कैसोविराजतनीकोनयोकहियाकहिकैउपमातेरस्यै १
है छाकौमधुमकरंदमिलीमुषमांनोगुलाबप्रसूनपस्योहै ७२ दोहा सबैसुहाएईलगै सबैसुह १
ईवाम गोरमुखबिंदीलसै अरुनपीतसितस्यांम ७३ टीका बेंदीसोंना सषीकोवेननायकसों ६६

५६A

होकोंरहदेषोनोराधेकेमगलेसुहावनेवामसकलसुहावनोलगतिहै पैंतामेंविसेषगोरेमुककेवि
षेयारानीपीलीधोलीकालीवेंदीकेसीसोभतहै १३ कवित्त हेसजनीसुनियानवकीगतियेअतिवांम
सुहाएवसेहै तेमबदेषोसुहाएलगेंफुनिओरनिहारहीयेमेंहसेहै वाकीअनोपमसोभवहेसुकहो
नपरेमगारेसुषसेहै पीतमितासितत्लालहरीमुषगोरेगुमायअनवेंदीलसैहै १३ दोहा नएवटाऊ
नेहतजि वादवकतिवेकाज अबअलिदेतउराहनो उरुउपजतिहैलाज १४ टीका प्रवस्यन्तर्ईक
नायकाकोवेनसषीसों हेसषीजोनेहतजिकेवटाऊहोनएहै तासोंवेकाजवादकोंवकतिहै हेअ
लिअबयाकोउराहनोदेतासोमोउरुकेविषेअतिलाजउपजतिहै १४ कवित्त नेहकोंबांधिवटाऊन
एफुनिलेअपनेसबसाजसजेहैं काहेकोंकाजविनावकतीअहोएकओहेदिनमांझिनजेहैं ताहीकहा
कहीयेसजनीयहदेषतहीसबसोभतजेहैं देतउराहनोपीतमसोंअबलाजघनीउरमेंउपजेहैं १४ दो
हा मांनकरतवरजततनहो उलटदिषावतमोह करीरिसोंहीजाहिगी सहजहसोंहीनोह १५ टीका मा
नमोचन सषीकोवेननायकासों हेराधेमैंतोकुंमांनकरतेवरजीनाहीहे मेंतोकुंउलटीसोहेदिषावति
हों अरुमैंतोअसेकहतिहोंकि तेरीसहजमेंहसोंहीसीनोहे रहतीहे तो एरिसोंहीकरीजाहिगी एनकरी
जायगी १५ कवित्त मांनकरोताकरोसुषहीवरजोनहीहोंकवकंउपिसोंहै रूपरसीलीलजीलीष

बिहारी टी
६७
47

रीझ्यतिएयेईनोहेसुनावहमोंहै जोननतरीतिमदाउठठीअबतोहिदिखावतिहौअतिसोंहै कैसी लि
[illegible] हारीकरीएरिमांहीजाहिगीहोअपनेहिबमोहै ७५ दोहा तियतिथ्यतरुणकिसोरवय उ
त्मकालसमदोंन काहूपुन्यनपाईयै वयसमसंधिसंक्रोन ७६ टीका मुग्धावयससंधि अरुपुन्य
कालसोना सषीकोवेन नायकसों होकांन्हअबैत्रतीयातोतिथिकै अरुस्त्रीकीकिसोरवयकै औ
रसंक्रांतकोजोगहै औरवयकीसंधिकै सोपुन्यकहतांदोनतिनकोसमकालहै सोयोजोगकाहूपु
न्यतैपाईयतुहै ७६ कवित्त नाभिनिसोतिथिराजैषरीतरुनीवयताहूनओनवईहै, ऐसीविराजतनी
कीनईछविपुन्यसमबेगतिदोनुलईहै यासमओरतिलोकनकोऊनिहारिनहीइहआइबईहै का
हूपुरानेईपुन्यनपैयहबे संधियेईसंक्रोननईहै ७६ दोहा गनतीगनबेतेरहे छतहूअछतसमा
मान अलिअबएतिथिओमसैौ परेरहोतनुप्रान ७७ टीका प्रोषितपतिकाकोप्रवासविरह नाय
काकोवेनसषीसों हेसषीएजोमेरोप्रानहैसो गनतीकैसोगनतीकोविषेगनबेतैरह्यो अरुबतोर १
अबतांबराबरहै सोकेसीपरैकि हेअलि ओमतिथिकहीयैत्रतीतिथतिनकीपरैयोतनुमेरोपरयो
रहो ७७ कवित्त एगिनतीगिनबेतेरहेअरोहेतऊनाहनाहिसमानकरैहै जोहोरहोकिकरोंम ६७
नत्रावतीकाहेकोयोंदिनमांनतरेहै. गातओवातसुहातनकाहूकीबेदनचोसरचीरहरेहै

आपनी मोरे की ये ई कछु तन ये तें थि आमलौ प्रानपर है ७७ दोहा सबै हमन कर ताहि दै नागर ता के नाम
गयो गरब गुन कै सबै गये गवार न नाम ७८ टीका प्रस्तावीक कवि विहारीदास कहतु हैं जो गवारें ना
म के विषै गये तें गुन को गरब कछु ना सो सो सब ही गयो पै जो नागर ऐसो नाम है ताही को सबै गवार करि
तारी दैकै हसत हैं ७८ कवित्त तारी दैकै करहांसी करै जन नागर ताई कै नाम लयेते सुंदर रूप सुलछ
न संग गन लीवि धि अंग सुहात न येतें जात रह्यो गुन जाति को गर्व लहै नही मर्म कछु मर्म नये ते ऐसे
अनारज साथ सबै सुष सूं लो गवार कै गाम गयेतें ७८ दोहा जात मरी विछुरें घरी जलज सफरी।
की रीति छिन छिन होत पिषरी षरी अरी जरी यह प्रीति ७९ टीका प्रोषितपतिका है कछु येन रविरह स
षी को वैन नायक सौं सुनाय कै सषी कहै स्याराधिका जो इन सौं घरी ही विछुरते जो जलज सफरी वि
छुरते मरि जात तौ री तिकै गी सो देष्यो नहो कि एछिन मैं छिन ह्वै कै विषै षरी सी षरी होति है · अरी मो या
प्रीति हू जर जावो ७९ कवित्त जात मरी विछुरतें घरी इहि नातिषरी कबहू न धरोरी अंब मछली ज
लहू है न ये ते घनी विलला तकै जात मरो री होत षरी आषरी पल ही पल ऐसी बुरी कछु रीति है तो।
री नामिन मलि करो जिनको ऊ अरी सम ए अति प्रीति जरो री ७९ दोहा प्रियप्रानन की पाहरू क
रत जतन अति आप जाकी दुसह दसा प्रगट मो तिन कूं संताप ८० टीका स्वाधीनपतिका सषी को

विहारी टी वेंनसषीसौं हे सषी याराधिकाविरोषातनरतार कैं जिसकी चौकीदार है सो इनकी सौतां आ
६८ पनतें याकें नतनन करत है सो क्यौं कियाकी क विनदसा तें सौनां रूं को संताप पस्यो कु तो तातें
48 नतनन करत है आगैं याकी डसहदसा तें नरतारहु षपायो सो नरतार आर कें डुषपावनेतें अ १
न असी रूं डुषपायो तातें वे जतनन करत है ८० कवित्त श्रोनननकौं आतिपाहरू यो पियवा ही।
नैं आप जतन्न करयो है याविधको उवई अरे हो वेदनदेह सबै डुषटेंदई स्यो है ऐसी तचो है ती या त
न मैं समुफीन परै जियज्जातजस्यो है नैक दसा अवलोकि नहीं कुनि सौं तिनको परितापव स्यो है
८० दोहा अरे हकरेन कहा कयो तासौं नंदकिसोर वदबोली बलिहोत कित वहेंड़िगनुतें जोर
८१ टीका अन्य संयोगदुषिता नायकाकों वेंन अन्यसषीसौं अरे जो तासुं नंदकिसोर है तिनकु है
न कहा कयो है तव सषी बोली कि हे राधे बलिजाउं तेरे वहे नेत्रां के जोर करिकें ऐसी वहु बोली क्यौं हो
त है ८१ कवित्त तोसों कहा कयो कौन कहै अरे होनंदकिसोर नें नाम लियें तें होत है वात सदाई स
मीपन और से होत है का लतनये तें बोलत है हो कुवहे वहे बोल वेहेंनन की वेदी वनाई दयें तें तौ सौ तें १
गोकुलकोंन नई कहुनैनन के वहे जोर नयेतें ८१ दोहा दसाजु पिय लषे वषवनुमें षेलत फाग षया
ल वाढ़त जो अति पीर सुनि कारे वैवन तगुलाल ८२ टीका पूर्वानुराग सषी कौं वेंन सषी सौं हे स ६८

न

48A

घीनरनारफागकैषयालफैलनैनायकाकेचषनुविषैलषिकैगुलालदीयोहै सोअतिपीरषहत
है पैवागुला लकाहतवनतुनांहीहै ६२ कवित्त षेलतफागषयालसबमिलिआपसमेसजनी
सुषपावै नाचतगावतऔरबजावतअंजनअंजतितेमिरलावै ऐसेमेंपीयदयोललनांह
गहेरिसिहातहीयैकहिनावै वाहतक्रूअतिपीरगुलालनकाहतवातइहैवनिआवै ६२ दोहा
वहिकवनाईआवनी कतिराचतिमतिकूल विनमधमधकरकैहियै गहैनगुहरफूल ६३ ६
टीका अन्योक्ति कविविहारीदासकहतुहै वरकौाघकोमतिकूलकैवनाईकीयैकौराचतुहै
सुनिज्योविनुअमृतनभमराकेहीयाकेविषैगुफहलकोफूलगहैनहीसौ ६३ कवित्त अपनीआ
पवनाईकरैकतकौवरकैरूकरोमनमांने राचतिवित्तकरामतिन्नलिकियेतेंलईहैसषीनिदाने न
कैनोकीयैघरल्याईकंलोलनुऐसीमीनकौअबकोपहिचाने जासकैफूलविनामधमासगहैनहु
रेफहियैजनगजाने ६३ दोहा आंनिदेआलेवसन जानिहूकीरानि मांहसकैकैमनेहवस सषीसवे
ढिगजाति ६४ टीका व्याधिदसा सषीकोवेंनसषीसों हैकोउन्नसषीहैसोयाजानाकीरातिहै ता
मैंआपनेसरीरकैआनिआलेवसन्नदेकैसनेहकैवसिषकीराधिकाकैपाससवहीमांहसकरकेजा
तहै एराधिकाकोसरीरआगनिसोंतपतहै ६४ कवित्त ऐसीवियोगवलायलगीतनयाकीतप

नारिन

विहारी टी
६८

निदवा गिनषीहै आजेदेदे अति आली उदोन तवे उठि नेक सुषा तलषीहै जाहकी रातिहिं तें परहै
तकुआं ववनी नहीं जात नषीहै माहसके के सनेह नये वस ताडिग को सब जात सषीहै ६४ ।
दोहा मैं तपाइ तिय तापतें राष्यो हियो रमामु मतिकवक्त आएइहां पलकु पसीजहि स्यांमु
६५ व्याधि रसा सषी को वचन नायक सौं हो कांन्ह मैं हो मेरो हियो द्वा तियके तापतें रमाम सों करिकें रा
ष्यो है सो मैं कहतिहो कि मतिकहू ता कदाचित पलकही मैं रइहां आयते तो हैं मपसीजेहोंगे ६५ क
वित्त हे मधुसूदन के सव ध्यानकें के इहनां तिन गावे ऐसें कीये तें ध्यानके नाय तो आप हितें स
व साधन पावे राष्यो है तीन कृताप तपाइ के या मैं रमाम की या कंवुनावे नैक पसीजत गात कदा
चि सांवरो मोहन आवे तो आवे ६५ दोहा सब अंगकरि राषी सुघर रसजुत लैन अनंत गति छुत
री पातुर राइ ६६ टीका चेष्टा सषी को वचन सषी सौं हे सषी या राधिका के नेत्रां की सतली रूप पातुर १
है ताको नेह रूपी नायक है तिन याकौं रसजुत अनंत गति लैन को विचार सिषाइ के सब अंगके
विषे सुघरि करिकें राषीहै ६६ कवित्त नागर नेह नेराषी है सिषाइ सबै अंगमें सुघराई विसेषी कोटि सं
गीतन वेग निरतदसों या विधवानि कओर न देषी साथन वेर सत्यति अनंत नतललीन रतार हियें अवरे
षी देषत हो अहो देषि उमेदें हरि पातरी पातुर राय सुलेषी ६६ दोहा सुनतपथनुमुरमा निसि उ ६८

नायकनेद सिषाइ ४ ६ सत्न

५२प वैकुलतउदिगाम विनुबूकै विनुदीकरै जियतविचारीवाम ६७ टीका करुनारस सषीकीपत्रीसष
सों हेसषीनायकनेंकान्हपथीकेमुदतेंऐसासुन्योकि मारमासकीरातिंविषेउदिगांमलूवांचलत
कैतीसोनायकनातोबूकैा अरुनाउनिनायकयातेंकहा पैज्ञान्योकि विचारीअस्त्रीजीवतीतोहै
६७ कवित्त मारमदास्रजनीकेघनीउदिगांमलुवेविकं व्यामहुवेहै यांसुनिकाहूवटाउकेग्रां
ननआपनीओरतेंनेहहुवैहै वाकेसवैअतिव्याकुलहैजनएकघरीसुषमेनसुवेहै ब्रजेविनां
ओकहैविनुनायकजोन्याविचारीजीवैहैनुवैहै ६७ दोहा अनतवसेनिसिकीरिसनु उरुवर
रहीविसेष तकलाजआईफुकृउ षरेलजोरेरेष ६८ टीका प्रौढाधीराधीरा सषीकोवेनसषीसों
नायकआनकेरातिवसेकृत सोनायकाउरकैविषेविसेषवररहीकृतीं अरुषिजनकोंलई
तकनायकाकोंलाजआई सोक्योंकि नायकसोंषरेमेलज्योंहै सोदेषिकै ६८ कवित्त आंनतीया
संगरैनवमेरिसतेंमवमुरककमहहसुकैहै गारिनईजरिकैउरलीतरअंगनबांधिकेरूपलुकैहै ।
आएलजातषरेअरसातकितोउतरातऔवासुकैहै एहंगलागिरहेनेहनंदनलाजतकनैंनान
फुकैहै ६८ दोहा सुरंगमहावरसोतियग निरखरहीअनषाइ पियअंगरिनलालीलषे षरीउठी
लाजिलाइ ६९ टीका अन्यसंयोग सषीकोवेनसषीसों हेसषीराधिकाकेसोतिकेपगेसुरंगमहा

50

बिहारी टी
७०

हावरनिरषिकैगांमपकफिरहीऊनी पैंनीनरनारकैआंगुरीकैलालीजांनिकैमरीरकौंबरीलाय।
मीउविलागीहै ८७ कवित्त मोतिकेपाइसुरंगमहावरदैबिषरीअनषाइषगीहै औरसुनोपि
यअंगुरीलालउलषेअपनेउरवासजगीहै कासुकहैसकेहाकरैताछिनताभिनिकीमतिऊल
नगीहै योविऊकीसीषकीसीजकीररिआइअचानकलाइलगीहै ८७ दोहा मानऊमुऊदिष
रावनी ऊऊहितुकरिअनुराग मासमदनमनुलललनकं सोतनदीयोसुहाग ८० टीका स्वा
धीनपतिका सषीकोंवेनसषीसौं हेसषीलमांनिऊकि ऊलरनुसोंअनुरागकरिकेमुऊदिष
रावनीकोमासमतोघरिसुप्यो अरुलालजमनसोंप्यो अरुसोतिनुंसुहागुदीयोहै ८० कवि
त्त योमुहकोंदिषरावनीलायसबैऊलहीअनुरागकीयोहै हारदयोसुमरासुनजोतिनजेवजि
वानीऊलासहीयोहै नंदलालअपनेकरसैकरिदेवरतेलेहगातेलीयोहै मासदयोघरला
लनकमनसोतिनकनेसुहागदीयोहै ८० दोहा कहुसंकुचउनिधरकफिरो रतियोषोरउमेंन
कहाकरोजोजायए लगेलगोहैनेन ८१ टीका धीरा नायकाकोंवेननायकसौं हेकान्हकि
मवास्तसंकुचतेहो निधरकहीफिरो जोअन्यअस्त्रीमोचित्तरतियोहै ताकीउमारीकोउनहीया
सौंतुमकहाकरोजोलगोहै नेत्रहेसोजायकैलगोहै ८१ कवित्त पीतमचातसुनोतुमकोंकऊक २ ७०

50A हेकोंजीयसंकोवधरोहै आपतैआपकिरोनिरसंकमोमेरेवियोगदवागिहरोहै याविधसुंम
हरातसषासेंग खारकिलोमतेंहरिटरोहै मांईयेनैनलगों लगेलवधीरजकोंफिपयानकरोहै
८१ दोहा आपुडयौमनफेरलें पलटेदीनीपीवि कोंनचालयहरावरी लालतुकावतनीहि
८२ टीका धीराधीरा नायकाकोवेननायकसों होकांन्हजोमेंआपुमेरेतो मनुदीयोहोफेर ३
लीजे पैहेलालरावरीकैसीचालहैकि पलटकैपीठदेके दीवकोलुकावतुहो ८२ कवित्त अ १
परीयोमनफेरलैकांन्हयाविधिकेतुमसाहनयेहो तापलहैफुरि निपीवदई इहरीतिनईक
तपायगयेहो रावरीचालउहईयहकोनरहेअबमोनषिसोनेनएहो काहेकोंलालतुकावत
दीवअनीठकेओरकेमोहमयेहो ८२ दोहा गोपिनसंगनिसिसरदकी रमतुरसकरसरास
लहीवेहअतिगतिनकी सबनुलषेसबपास ८२ टीका दछनायक सषीकोवेनसषीसों हेस
षीसरदकीरातिकेविषेगोपिनुकेरा धरसिकलालरसकरिकेरासरमतिहै सोवेहसोंवे
सोअतिगतिलीनीजोसासबदेषेतासबहीकेपासहै ८२ कवित्त आछीसरदसोहामनी
यामनीगोपिनकेसंगरासरसोहै नोतिअनेककुदहलकेउनहीकोहसाहकेआपहसो
है वेहलहीगतिकोंअतिएकनअकलगाइकेहरिलसोहै आइअचोनकअकलरो

51

बिहारी टी ७१

अहेदेषतहीसबपासवसोहो ८७ दोहा स्यामसुरतिकरिराधिका तकतितरुनजातीर असुवनकेतित
रोसको बिनऊबरोदेनीर ८४ उन्मादहसा सखीकौवेनसखीसों हेसखीहेराधिकास्यामकीसुरतिकरिकै
तरुनजाकहतांजमुनातिनकीतीरऊचीतकतिहैसोआंषिनुतेआंसूगिरतुहै तिनकरिकेउनरोसकोनीर
षिनकमेंश्हनिवायोकरतहै हमीसायजमुनामेंरूहेतिनकोसमीयो ८४ कवित्त स्यामसंलारकेराधि
काकामिनीज्योंज्योंअनेकउसाससलेरहै ताकतिहेजमुनातटकोंकुंजनितेंअंसुवानिकरहै वाजलतेतिन
रोसकोनीरषिनकमेंदेषिपराईधरेहै असीग्बीलीकीदेहदसालषिआवनोमाईहीयाररहेरहै ८४ दोहा
गोपनकेअसुवनतरी सदाअसोसअपास डगरडगरनेंहैरही बगरबगरकेवार ८५ टीका करुनारस
मकराकोसमोहै ऊधोकोवेननायकसौं हेकांन्हजू वारनेरपांवमेरगोपनकेआंसूकेवारकरिकेनदीसी
तरीरहीहै सोसदाअसोसहै अरुअपारहैअसीहै ८५ कवित्त गोपिनकेअंसुवासुलरीओअपारअसे
बउसासवहीहै याविधिवाकोवनावसुनोकबुआननसुंनदीजातकहीहै पेंडनपेंडनपे व्रजवीचनदी
उमहीउमडीओरहीहै आयमिलेबगरेबगरेनकेवारनतेबऊनांतिलरीहै ८५ दोहा उचितेचितहल
तनचलत हसतनऊकतिविचार लिषतिचित्रपियुलषिचितै रहीचित्रलोनार ८६ टीका चित्रदर
सनं सखीकोवेनसखीसों हेसखीयाराधिकाआजुलरतारकेलिषितकोजाचित्रांमदेषिकेचित्तकरिकेउ ७१

आंखिन-

51 चितीहै औरहलैचलैनांहीहै औरहसतिनांहीहै औरकुकदेकोविचारहै औरचित्रामकीसीपरैनार
केरहीहै ५६ कवित्त ऐसीउचित्तचितैअतिव्याकुलकान्हरकेअतिनेहनहीहै औरहसाकियोहोइसे
नकुकैपलकहीपलनेनननिहारविचारतहीहै लेलेलषेपीयमूरतिचित्तजूदेहअनंगदसानदहीहै गंग
हृयेसुषदुरकसबैचित्रकीपुतरीनईबालरहीहै ५६ दोहा कनदीवोसुष्योसुसर बकुथुरहथीजांनि
रूपरहचटैलगिलष्यो मांगतसबजगुआंन ५७ टीका रूपवर्णनं सषीकौवेनसषीसौं हेसषीसुमसु
मरेलरूकोगेरोहाथजांनिकै कनैकादेवोसाष्यो सोवाकेरूपकेरहचटैसोबारंबारसबहीजगुआंन
कैमांगतेहै ५७ कवित्त जांनिबरूकेलघुकरसासरवाहीकेनीकेसबैगुनगावै आजतेंईकनदे
वोकरोसुनितेरीकलासुसरैनकुनावै हैबकुतेरीवमोलकुमीकहुवाकोसयानपकोउनगावै रू
पलष्योसगरोजगवाघरमांगनकोनिसवासरआवै ५७ दोहा निरषनवोढानारितनु बुरकुलरक
ईवेस जोप्यारोपीतमतियनु मानकुचलततबिदेस ५८ टीका स्वाधीनपतिका सषीकौवेनसषीसौं
हेसषीनायकनवोढानारिकेतनकौनिरष्योकि अबतोलरकपनोछूटतहै सोऔरस्त्रीकोपीतम
वलनयोसोमांनकुकिविदेसकोचलउसोनयो पनवोढाकेअधीनभयो ५८ कवित्त नारिनवोढकी
हेरिसबैतनआंननमांकिउसासलयोहै छूटतहीलरकाईलेमसुदेसमनोजनेजेषदयोहै औरति

सु
यानकोपीतमप्यारोनयोसुविश्वारकह्योनगयोहै याकोसिंगारहीगेजुविदेसमांमोचलावकोधोसा
रुस्योहै ९९ दोहा आंनपियाहियमेंवसी नषरेषासमसिनाल लोदिषायोआंनयद हरिहरूप
रसाल ९९ टीका षंडिता नायकाकोवेननायकसों होइहरिंमारआणवस्ता तोहियामेंवसी
है औरनषरेषानाउकैविहेलागीहै सोचंद्रमाहै सोउममराेदवजतकोरूपरमालसोंआंनिकेत
लोदिषायोहै ९९ कवित्त आंनपियाहियमेंवसी अरुनपसोइलहैनषनीकोनयोहै ऐसोअना
पमरावरारूपतिहारहीयेअनुरागनयोहै साजसऊइहरीतिमनोहरंआयनलेहीदिषायदयो
है कततिहारीकहाकऊवातहरीहरकोजुमरूपलयोहै ९९ दोहा तियनईहियजुलगीजनु
पियनषरेषषरोंट सूकनदेतनसरसइ षोटिरषतषोट १०० टीका सर्वानुराग सषीकोवेन
सषीसों हैसषीराधिकाकेहीयाकेविषेतरसारकेनषकीरेषकीषरोंटलागीहैसोनईजुलगीचलि
जातीहै सोक्योंकिरकेकिवारषाकोंसूकनदेतनाहीहै सरसाईयकाईवाकोगुरटषोंरिषोंरिलतहै
१०० कवित्त कैपरिरंरुननाहचलेनषरेषषरोंटउरोजनईहै ताहिविलोकतिहैपलहीपलमांन १
मनोजनेस्लउदईहै सूकनदेतनताहिसुनोअवलाइहनोंतिनमोहमईहै श्रेटतश्रेटतकेषतषु
टनराषतहै सरसाईनईहै १०० दोहा सीसमुकटकटेकाछनी करमुरलीउरमाल इहव १ ७२

52A

नकमोमनसदा बसोविहारीलाल १ टीका नक्रिजन कविविहारीदासकहतुहै हेविहारीला
लसीसकेविषेमुकटहे औरकटिकेविषेकाछनीहै औरकरकेविषेमुरलीहै औरउरकेविषेबै
जयंतीमालहै सो ऐसेवांनक [illegible]मुममेरेमनमेंसदावसो १ कवित्त सीसमुकटकछीकटिकाछ
नीसंगसषावनकोंजथसोहो मालदीयेमुरलीकरलैव्रजगाइचरावतनीकेंलसोहो केकेकरट
लनंनोंतिनलीग्रबलानटसायकेआपटसोहो देनंदलालसदाइहवांनिकमोमनआइकेक्योंनवसो
हो १ दोहा नकुटीमटकनपीतपटु कटकलटकतीचाल चलचषचितवनचोरचित लयोविहा
रीलाल २ टीका हर्वानुराग नायकाकोंवेनसषीसों हेसषीनोंहांकीमटकावनीऔरपीतपटुकों
ओटवो औरमतावीसोंलटकतचालवो औरचंचलनेत्रांकरकेंदेषवो सोइतनेवानेकरकेंवि
हारीलालनेमेरोचितचोरलीयोहै २ कवित्त पीतपिछोरीनलीकटिराजतकेसरटीकोलिलारक १
योहै नोंहमटकनीचालकलटकनीआंननओपचटकरीयोहै चंचलचखिचितानिचारकेनंदल
लाचितचोरलीयोहै नांहिनमांषनदूधदहीअरुक्योंकहिमोहिरातदीयोहै २ दोहा सघनकुंजघन
घनतिमर अधिककंधेरीराति तकुनदुरिहैस्यांमयह दीपसिषासीजाति ३ टीका कृस्नाभिस १
रिकासषीकोंवेनसषीसों हेसषीसघनतोकुंजहै अरुघनेवादरनकोतिमरहै अरुअधिकौ।।

बिहारी टी. ही अंधेरी राति है तौ ऐसी स्यांम तामें छिपत नांही है कि ही वाकी ओड़ की सी चली जात है ३ कवि
७३ त गाढ़ घनो घन कुंज घनो घन और निसा अंधयार मई है ऐसे मे स्यांम सुजांन सुनो तुम नी
53 ल नी चोल लगाइ लई है लाय रहे जक बां मै न क्यु अब केती न वेर कों सो हगाई है कौ होड रैन
ही ज्योति अनोप मदीप सिषा सम देह भई है ३ दोहा स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा देष विहंग विचा
र बाज पराए पानि पर तू पंषीहि न मारि ४ टीका प्रस्तावीक रे पंषी बाज विचार देष कै या मैं ते
रो स्वारथ न है अरु सुकृत न है श्रम वृथा करतु है तातें पाप करि कै पांनि परि पंषीयन कों मा
रमति नां ४ कवित्त स्वारथ एक सरै न ही वे कया ही मै सुकृत कों न निहारे और ह्या श्रम हे स +देषत+
ब वार विहंग विचार हजारे बाज पराये ई पानि परयो कुनि आपने दुःकृत क्यों न संभारे देस वते १
हि कबू सुधि नां हिन रे अब पछिन कों मारे ४ दोहा संगत दोष लगै सबनु कहै ते साचे बैन
कुटिल बंक भ्रुव संग ये कुटिल वेक गति नैन ५ टीका अन्योक्ति संगत करकै सब कों दोष ला
गै ऐसो कह्यो सो साचो बैन है सो देषो न हो कि वा कुटिल हारा की संगति तैं नेत्रो की गति कुटिल
अरु बांकी नई है ५ कवित्त संगत दोष लगै सब ही के सो वाही के हेरि कै लाय लये है या विधि नेक
है सो चेष रे जग वेन प्रपंच तें हरि गये है देषे न क्यौं इह अछिन अछिन कोरे कों और प्रसंग दये है ७३

53A वंक कुटिल नये जु वसं गति नैन नि वंक कुटिल नये हैं ५ दोहा जरी कोरि गोरे वदन वढी षरी व
विदेषु लसति मनो विज्जुरी कीये मारद ससि परिवेषु ६ टीका ललितहाव सषी को वेन नायक
सों हो कांर देष जु गोरे वदन परिया जरी की कोरि ले षरी सी ठविदे रही है सो कैसी कि मानो सारद चंद मा
के परिवेषु कीये वीजुरी सी लसतु है ६ कवित्त सारी षरी पहिरी सुथरी सिर कोरि जरी अंचरा जु लीयो है औ
नैन गोरे वदी है री ठवि आप अनंग दमामो दीयो है देषत ही सगरी सुषमा मन या विध की उपमा को हीयो ?
है मोहत ये मानो सारद के ससि को विजुरी परिवेषु कीयो है ६ दोहा चितवनि तेरे लाल की गोरे मुह मु
सकानि लागति लटकि अली गोरे चित्त चटक तिय आनि ७ टीका सर्वानुराग नायक को वेन सषी से ?
है सषी तेरे सुलाव करि के चितवनि तिका ओरि गोरे मुह कु मुसकानि और लटकि दै के सषी के गरे ला
गि के ति को मेरे चित्त में आनि के निसान करति है ७ कवित्त तेरे सुजाव चितौनि तैसे मुह गोरे मु प्रत्ता
सका हट के है और जे लाल जुरी मन रात न पै न न पै न न पै अटके है लागति आली गरे लट काति सी
पान सुजाव ति ही मट के है ऐसे चरित्र लषे नित आय अबे चित में षटके है ७ दोहा इह है मोती ही सुगु ×विवृ
थ लै न थगर ब निसांक जिहि पहरे जगु द्रिग ग्रसति लसति हसति सी नांक ८ टीका मद हाव सषी
को वेन नायक सों हे राधे तें एहे मोती नथन के विषे सुगुंथ कर के निसांक गरव करि सो क्यों कि जिन न

थके पहरे तें संसारी के नेत्र भ्रमति करहतां पकरीया जातु है औरह सतिसी सो नायमां ननाकरै ६
कवित्त आई मनोहर मोतीलसै जुग और सुगुथसमूह वसै है नैनथंगा र्व करो निरसंक सें आ
हित्राति नन आगी जसै है लोचन नै सगरे जग के सब आइ अचानक लेत ग्रसै है मापहि रैजगकी जुवती
नको नाक सुनो कमनीय रसै है ८ दोहा हरिछबि जल जब तें परे तब तें छिन बिसरैं न भरउभर
उझकत तिरत रहत घरी लौं नैंन ९ टीका साक्षात दरसन सखीको वेन सखीसों हे सखी देषि तो राधिका
के नैंन श्री हरिजू की छबि तिनरूपी पानी तिनके विषे तब तें परे है तब ते छिनु कबिहु रते नांहीं है भरुत
ट ५ रत रत है ऊबत है तिरत है सो ऐसी घरी की पर के रहै है ९ कवित्त एकसमै हरिकी छबि सों जल आपनी
उलमही विपरे है ताछिन मैं छिन येक कहीं बिछुरै न सखी इहनां तिर है है आइ घरी कुनरे बकुरो ढ
रिनी के तिरै अरु बूडव रेहै रैनदिवा इहि नांतिर है कबु नैनू घरी समघाट घरे है ९ दोहा मारसुमा
रकरी षरी मरी मरी हि नमारि सीच गुलाब घरी घरी अरी बहिन बार १० टीका प्रोषितपतिका
नायका को वेन सखीसों हे सखी आगे तो मोकुं सुमार नें मार के षरी कीवी है अरु अब रूबली मू
रीसी परी है क्यों मारत है जो गुलाब को पानी घरी घरी सींचति के बलीसो तो कुं अब नीको लगत
है १० कवित्त सीच गुलाब घरी न घरीन मैं वाही को क्यों न ही यो परजारे मारसुमार करी अलिका ५४

मिनी ऐसो वियोग भयो सरतारे तातें मरी औ मरी बझरु सुनि ताही मरी न कों कैसौं अब मारें अंक
रिझो रिकरु विनती सुनि वेदन लायब री हनबारें १० दोहा क्यों हो सो बात न लगै थाके भेद उप
इ द्रव दिव गढ गुढ वे सु चलि लीजे सुरंग लगाइ ११ टीका अन्योक्त मान मोचन भेद उपाय सखी
को वेन नायक सौं हो कान्ह या गढ लेवे कें हेत भेद के उपाय करिकै थाके पै क्यों हू कीये वा तांऊ
लागै नहीं यातें जो द्रवी लो दिढ गढ कैनो लागढ गोढे आपु चालि कै अरु नलौं रंग सुरंग लाइ कै
लीजे एमनाइ कै लीजे ११ कवित्त क्यों हू नहीं प्रद्रवा वैं त लगै अरु भेद उपाय थके कहा कीजै
कोटि जतन्न कीये न रह्यो आव तहा पसवैं आप तवीजे गाढ घनो द्रव सो इमहा फिरढ गगढ मक
बूनपती जे तौउ ममा वेरै धन बांहि चलो अबलाइ सुरंग लगाइ कै लीजै ११ दोहा ताही कों छुटि
मान गो देषत ही ब्रजराज रहो घरिकलों मानु सी मान की ये की लाज १२ टीका सहज मान मा
ने सखी को वेन नायका सौं हे राधे श्री ब्रजराज तिन कों देषतें ही तेरो मान छूटि गयो पै यों जो
घरीकलों मान राष्यो सो मान कीये की लाज के वास्तै १२ कवित्त तेरें ही यें ते गयो छुटि मान औ
स्यान पकी सब बात कही है और रहसी सी नों हम नो हर देषत ही ब्रजराज लही है मान सी येक
घरीकलों आपने मान सम्हा फि षरी उमही है रास समद उनायद यो फुनि मान करे न की लाज

55

बिहारी

७५

रहीहै १२ दोहा सखिसोहतिगोपालकैं उरगुंजनकीमाल बाहरलसतिमनोपियें दावानलकी

ज्वाल १२ टीका सिंगारमालासोंना सखीकोंवेंनसखीसों हेसखीश्रीगोपालजूकेंउरकेंविषेयाबि

रमीतिनकीमालसोहततहै सोकैसीहैकि मानोंदावानलजुअगनिकोंपानकीयोहै सोताकीज्वालाअ

हीयाबाहरसोहतहै १२ कवित्त हेसखीगुंजनकीवरमालवनीनंदलालहीयेअतिजोहै सोह

तहैअतिसुंदरलालउनिहारतहीरमनीमनमोहै ऐसीअनोपमओपविराजतयाजगमेंउपमा

ताकहिकोहै मानुंपीयोपहिलैजुविसालदवानलज्वालसीबाहिरसोहै १२ दोहा गहिलीग

रवनकीजीयै समैसुहागहिपाइ जियकीजीवनजेठसो माहनछांहसुहाइ १४ टीका सखीक

र्मसिष्या सखीकोंवेंननायकासों हेराधेगहिलीयासमैसुहागपाइकेगरबकीजीयैंनहीसोकों

किजोगायाहैसोजेठकेंमासजियकीजीवनहोतिहै पैमाहकेमासमेंसुहातनांहीहै १४ कवि

त्त हेगहिलीसुनिकीजीयेगर्वनयानवकीगतिकोनेंलहीहै पाइसुहागसमैपरजामिनीनोंति

नजोसबतेंताहिकहीहै रीविधिकीगतिजातकछूनहीजनकीमखवातरहीहै जीवनहैजीयकी

यहजेठसुमाहमेंछांहसुहातनहीहै १४ दोहा हमिरसाइउरलाइउवि कहिनरूषहैवेन न

कितघाकितकैतकिरहो तकतितितिलौवेंन १५ टीका सखीकर्मविनय सखीकोंवेंन ७५

55A

नायकासौं हे राधे अब तौ रूषो है वेन नायक सों कहि मति नां उविह सिह साइ के उर लै लगाइ ले
कै मो क्यों कि देष तौ जक्या थका के के तिलों बैनें नां सों तकि रहे है १५ कवित्त उहै सिऔर उनै
लैह माइ ही ये कहि लाय रहे उजुज के है क्यों न करै सषी मेरी गुसाइ नवे नह मारे सिषाइ थके है कैक =३=
रि मोही सी नोंह रूषी रूषवा कऊ वाऊ अनेक बके है आपने चित्त चकित्त में होइ है तेरे तिलो वसा
नै न तके है १५ दोहा तीज परब सौतन सकै भूषन वसन सरीर सबै मरगजे मुकरी उहीं मर
गजी चीर १६ टीका अन्यसंयोगिदुषिता सषी कौ वेन सषी सौं हे सषी राधिका का की सौतानी
ज के परब विषै भूषन अरु वसन करि के सरीर आपनौ सज्यौ अरु राधिकां उही कुमसल्यौ सर १ *चीरतिनसों
र सज्यौ सो सोतां सब ही वाकों देष ते ही मैलो सो मुह करयौ १६ कवित्त सावन तीज सखे सब सौ
तिन भूषन नामिनी आपनौ बानौ बास सुवास धरे अपनै तन और सिंगार की यो मन मांनौ
एक सु आप की यो परिरंभन चौसर चीर उयो कुमिलांनौ मरगजी आंनन औ पस बेकरी
ताके मरगजी चीर न जांनौ १७ दोहा गढ रचना वरनी अलक [illegible] चितवनि भौंह कमांन अ र
घवकाई है बढै तरुन तुरंगम तांन १७ टीका गढ की रचना वरनी की रचना अलक को की र
चना चितवन की रचना भौंहन की रचना कमांन की रचना तरुन की रचना तुरंगम की र

बना जोवांकपनाको आवत है १८ कवित्त गौरहक मांननई तरुनी गह औरसुनौ वरनीमनमोहै नी
कीअलिकचितोनीउरंगमतोनरुमांनबदावतिजोहै आयबढैईनहीकुंवकाई तेअई निकाईक
होअबनोहै जाकोबनावकीयोकरताररसोओरजगतमेंरूसरोकोहै १८ दोहा इतआवतचलि
जातउत चलबिसातकेहाथ चढीहीफोरैसरहै लगीउसासनुसाथ १९ टीका प्रोषितपति
का ग्रामांतरविरह सषीकोवेननायकसों होकांन्हआजराधाबिसातकरायचलैतोइतकोचली
आवतहै अरुबसातकसषउतकोंचलीजातहै ऐसीहीफोरेचढीकीपरेउसासकेसाथला
गीरहतिहै औरअर्थः परकीयाप्रोषितपतिका सषीकोवेनसषीसों हेसषीराधिकाजान्यों
कि नाइकइतकोंचलेआवतुहैकि उतकोचलेजातहै सोनाइकरलेकेबसातकहाथउतकोच
लेतबसोनायकाहीफेरेचढीकीसीपरेउसासकेसाथलागीरहतहै १९ कवित्त आवतहैइत
जातचलीउतसावरेसुंदररूपलगीहै औरसुनोअबवाकीदसाचलिजातबसातकहाथल
षगीहै फूलैचढीसीरहैसगरोदिनषातनहीकबूनूषलगीहै नैननीरफरैअबलाककुंरे
हउसासनसाथलगीहै १९ दोहा करनहरैंनीदनपरैं हरैनकालविपाक बिनजुबाकुउ
बकेंफिरि षरौविषमबविपाक २० टीका प्रोषितपतिका नयविस्त्रमविरह नायकाको

56A

सौंनवहे है अरु गुननैतें औरन की कौ मन न. तिनसौं तिनकै मैं अति सैं मन लवे हैं २ अरु मोह कीनो
रित है तिनतें गुननतें तो मीन र है अरु औगुननतें तो मन बनीह सो बन कहि मन तिनकै मो अति मन २
मकै है २१ कवित्त हे मेरे लालन नवा कु लखी मन ज्ञान तें तो गम गुनमान न चहे है नाहके औगुन मान
हरे सुनि औरन तिनकै गुन सौ न वहे है तुव तो मन न मान न येदाकु को मन मा तिनकै तिनके होनि
गुहे है जो तुम ने गिच लै तो मन नाइ सो बाही के देह में मान म है है २१ दोहा सो लोपन सोई रहै
को सो पियन अघाइ सुगुन समान न लवकी नु रचे पविषा व पाइ २२ टीका [illegible] न
ना यकाको वैन सखी सों हे सखी सो पों मैं रचव अघाइ कै पिय हुहै सो लोपन में ईर रहे है [illegible]
यक के सु पुने मन तो [illegible] की आ जो [illegible] ही है २२ कवित्त सो लोपो अघाइ पीये ते [illegible]
हरि से [illegible] मान न नेह पीय न रहे है कहा कहुं कित [illegible] सुनि मोह गमो हे को कैसे मन वहे है हे सु
गुनो आम सरूनो तो [illegible] जीय तो जीय [illegible] रहै है [illegible] गको होत्रिया न बुझै सुनि रे न दिवा तिन
नीर वहै है २२ दोहा अरु नवर नवल कनी चरन अगुरी अति सुकुमार सुवति सु रंग रंग सौ मेनो व
पवि वियनु के नार २३ टीका पद अंगुलीनो ना मखी को वैन सखी सो हे काह अंध का के च थ
को रामो वरन है ना की को अंगुरी अति सुकुमार है तातें अवे वेन न यो है सुंदर तन न वनी

दुरजोधन जो जात १७ टीका प्रस्ताव दसा सषी को वैन नायक सौं हो कान्ह राधा जे से कहतु है
कि मेरे हिय रूपी तलाव के विषै विरह विथा रूपी जल उपर्यो से विना जाल उछरि रहतु है तो देषीयत है
कहु कछु दुरजोधन की परे जल मैन की विधि जानतु है १७ कवित्त मेरे वियोग को दुसह दुष रूप है
जल उपरस्यो विना जु वसो है मानीय तलाव विसाल सुनो अब नीके विराजन आपलसो है जो न
होजालषे न तनकी विथता में डरै तो कित निकसो है राजमहा दुरजोधन जो हरि ऐसे चरित्र की
ये तेरे सो है १८ दोहा रूपरूषी मिस रोष मुष कहति रुषो है वैन रूषके सेहो तये नेह चीकने
नैन ३० टीका सषी को विनय सषी को वैन नायका सौं हे राधे तेरे रोष के मिस करि के रुष को रू
षी करी है अरु मुष लेरूरूषो है वैन कहति है पै नेह करि के चीकने नैन करै मो रूषके से वकहि
जातहै सो अचर्य है ३० कवित्त रूठ रहीमन रोर मुकुमारि रोष मसि सुकरि उपरुषाई साधि कहे रू
षे वैन है लानि नको यह रहे तु प्रीति रीके धरे तनु के से उडरावा के बुइन मो डरै नर है हरि केस नेह सानी
के से कोर हति गानी कहै देति प्रगट छवी लीन हवि जैन है रूषो संग करि रूषी वानि जानि वैवी परिरूषे
के से होत नेह चीकने ऐने नैन है २० दोहा पति रिति ओ गुन गुन बदल मान मार को सीत जानि कवि
न मति के पदो मनी मनन वनीत २१ टीका प्रस्ताव कवि विरषी कहतु है पति के ओ गुन लेतो

57A

वेनसषीसों हेसषीसोनाइकृकोबविरूपीबाकहेसोपरोविषमहै क्योंकि याकीबाकपलटी
फिरिउबकतिनाहीहै सोनातोमोकुंमरटरखुहै औरमोकुंनातोनीदपरखुहै औरनातोमोकुं
विपाककालहैसोहरखुहै ॥० कवित्त नैकमरेफरनोहिनमीदपरेनरहेकालिकालविपाके
कामोकहेगहकोनसुनैअबयाविधिपीरनईतननाके बाकहिनेकनहीउबकेफिरिहरन
ईसबदेहहमांके नैननिहारनहीउपजैमरयेविषमाईमरीबविबाके ॥० दोहा रमनकह्यो
हमिरमनसो रतिविपरीतिविलास चितईकरिलोचनसमतर सजलसरोषसहास ॥० टी
ऊर
कामितहाव विरसवर्णनं सषीकोवेनसषीसों हेसषीरमनकहीयेहुरूपरमनिसोंहमिकै
विपरीतिरतिकोविलासकरियोकह्यो तबरमनिनैलाजसहित अरुरोषसहित अरुहास
सहतनेत्रनिकोंबांकोकरिकेचितवनिकरी ॥० कवित्त बैविपीयापीउसेफसमीपमकोरति
रंगकेनेहउगास्यो पेलीयेबेलकीयेंविपरीतिप्रतीतिचितैइहबोलसुधास्यो केहवनोतिअ
नेकनसोंफुनिहुमिआपनेजीयविचाराविचास्यो लोइनवेककीयेचितईसतराहटरोसस
लजनिहास्यो ॥० दोहा ऐंचतिसीचतबनिचितैं नईओटअबलसाइ फिरिउफकनिकों
हगनयन डिगनुलगनियालाइ ॥१ टीका अभिलाषदसा सषीकोवेनसषीसों हेसषी।

बिहारी स
७१
58

मृगनैनी अैंचती सी आंषि सौं देषि कै अरु अलसाई कै औ कै गई सो अब नी छां मृगनैनी उक
कनि की है ति नायक नैन को लगनि लाइ रह्यौ है ७१ कवित्त अैंचति सी अति आबी चिता
ननि देषि कै नारि नवाइ लई है आली की ओट न आतुर होइ रही अलसाइ जंभाइ लई है और
अमैव नरी समक कै रिस कै जुर है मन मोह मई है फेर निहार न मृगलोचनि नैन लगाइ लीयो ॐ
लाइ लई है ७१ दोहा नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोइ जेतौ नीचौ ह्वै चलै तेतौ ऊं
चौ होइ ७२ टीका प्रस्ताविक कवि विहारी दास कहत है आदमी की और नल की एक तिजा
यल ऊं सो कैसे कि जितनो नीचो के के चालै तितनो ऊंचो होजाइ ७२ कवित्त हेत अति सुंदर ल
छिन रूप विधि छिन जाति विसेष गुनी मैं त्यागी महा अनुरागी वतो वकता गीस राइ वेद धुनी उ
मैं या नर को नल को अरु नीर को एक ही रीति असेष सुनी मैं ऐसो ताई ह्वै चलै नीचो सुनो सब ऊं
चो तितौ फिरि होइ गुनी मैं ७२ दोहा भूषन भार संभार है क्यौं इह तन सुकुमार सूधे पाइ न ध
रपरै सोभा ही कै भार ७३ टीका विछित हाव सषी कौ वैन नायक सौं सो कोन्ह जु या को सु
कमार तनु है सो या भूषन को भार क्यौं संभाय सकैगी देषो न ही कि सोभा ही के भार करि कै ध
रती ऊपर सूधे पाइ परस कत नांही है ७३ कवित्त भूषन भार संभार है क्यौं सुकुमार सरीर कै र ७१

58 ति

गरु ऐसे ते लोकन की परिजात पनीउ रमैं कछु नारन यो उनये तैं सखे न पाय धरे परें नारी सों
सौ न अकेली के नारन ये तें काजर नार निटी को निलारन औ रमहावर पाइ दये तें २३ दो
हा मुंछ मिग सहत नी कने नों है सरल सुनाइ तऊ परे आदर परै लिनु रही या सं काइ २४
टीका सादरा धीरा सखी को वैन सखी सों हे सखी नायका के मुंछ सों मीठी वातें निकसति है
और नेत्र की [illegible] ने है और लों ही पाधरे सुनाव मे है और रजित नो परो आदर करत है तऊ नायक
को परो सो षितु षितु के विषे ही या सं काय मान हो उ है २४ कवित्त ऊषमयूष पीयूष सी आनन आ
य मिवा सर ही बक तेरी नों ह सुधाई समेत सुनाइ न चीकनी नों तिन लोयन हेरी ऐसो परो आति
आदर है तऊ चित्त नई अब सेक पनेरी आपने जी य की तो हिक छु सुनि ने कनिरार तने हसनेरी २४
दोहा जदपि नाहि नाही नही वदन लगी जक जाति तदपि भौंह हांसी न रउ हांसी ये व हराति २५
टीका मुग्धा सुरत वर्ननं सखी को वैन सखी सों हे सखी राधिका के वदन करि कै नांही नाही सो नाही
ऐसी जक लागी जाति है तो पिन नौहैं हांसी करि कै नरितु है सो वा नांही की वात नायक हांसी मे ठहरि
रात उ है २५ कवित्त नाहि नहीं वकरो अति नाहि नै जदपि आनन रीति जगी है ऐसी अनेक नई
नक जदपि जीय मै प्रीति प्रनीति पगी है बैन रुखाई उरो सुघराई सखीन सुहाइ अनेंग रगी है हांसी

नरीन्ह गुटी त्रिगुटी न कहा सी दीयें वट्टरां न लगी है २५ दोहा छुटन पैयत छिनकु वस नेह नगर यह
हचाल मारयो फिरत न मारीयत इ हनी फिर उ शुस्माल २६ टीका नायका को वेन सषी सों हे सषी
या नेह रूपी नगर है ताकी ऐसी चाल है कुवस पन्हा पांछे विनु कहीं छुट्यो पायइ उ नांहीं है और नी
मारयो को तो नी मारीयतु है और हनी जो है सो शुस्माली सो फिरत है २६ कवित्त छूटन दैयतु ने
ह कुपन्न नुया विध के उपदेस करै है चाहिइ है सगरै इहवा सकी आपनो न्यायो सबैई करै है नीति
नहीं कछु रीति न जानत प्रीति लगाइ कै आप करै है मारे को मारत है फिर ही फिर हनी घराई शुस्मा
ल फिरै है २६ दोहा चुनरी स्याम सतार नत. मुष ससि की उनिहारि नेह दबावति नींद लों निर
षि नीसा सी नारि २७ टीका साष्यात दरसन नायक को वेन सषी सों हे सषी इहां राधिका के
स्याम चूनरी है सो तो उहां सतारन ठकहत तो तारा सहत आकास है और मुष जो है सो चंद्रमा क
उनिहार है सो ऐसी निसा रूपी नारि निरषि कै नींद जो है ताकी परे नेह दबावे लेतु है २७ कवि
त चूनरी स्याम सतार मनो नरया विधि की उपमा जु लनी है सुंदर आनन तें उपविराजत ज्ञा मसे
की उनहार गनी है नेह दबावत नींद लों आइ कै नैं न निवी च सवाद सनी है और कछु मन मे
नहीं आवत देष निसा सम नारि वनी है २७ दोहा करत सबै वैरी दिये आंक दस गुनो होत ति ७८

५९१ यलिलारवेंदीयनतु अगनितुवहतुउदोत २६ टीका वेंदीसोनां सषीकोंवेननायकसों
हीकांनउनसवहीअसेकहतुहैकि वेंदीओकपरलागे तौवाकौदसगुनो विसतारहै अरुदे
षौतौयाराधिकाकेलिलारकेविषेवेंदीलागीहै ताकरिकेअगनितउद्योतकैरहीहै २७ कवित्त
वेंदीदीयेतेंकहैसबमानुषएकनवीसकोआधपढ्योहै याविधनेसगन्योसबपोषितओरस
कबूअधिकोनचढ्योहै हासविलासविरंचीवनाइकैवाकोसरीरसुधासोमढ्योहै वेंदीलिला १
रलगेतियकेसुषमाकोउदोतअसंषवढ्योहै २७ दोहा तरफरसीऊपरगरी कज्जलजलझलबि
रकाइ पियपातीविनहीलिषी वांचीविरहवलाइ २७ टीका अरुकीपत्री सषीकोंवेना
सषीसों हेसषीराधिकाकीपत्रीजोआई सोनायकजांनीकि तेरैनौहाथकोअगनरी औरऊ
परैकाजरमहितपांनीतातैंबिरकांनोंसाग लगई सोवापानीविनोहीलिषीबांचीजानीकि
विरहरूपीबलाइकौयोविचारहै २८ कवित्त ऊपरहीकोंगिरीजलकज्जलबीटनतैंबिरका १
इगईहै आपनेहाथकेलापतपाइषरीऊरसीतरज्यालमईहै पीतमपातीपवाईपीयापरना
रिनवाइकेंआपलईहै बालनलीविधवाचीलषैविनुऐसीवियोगवलाइनईहै २८ दोहासो
रवें विरहसुकाईदेह नेहकीयाअतिनिहरदो जैसेवरसैमेह जरैजवासोजोजमे २८ टीका

सषीकीपत्रीनायकसौं हौकांहजुउमारेविरहकरिकैराधाजूकीदेहकौंसुकाइदीनीहै अरुनेहकौःह
हमहौकस्यौहै सोकैसेकि जैसेमेहकेवरसनेतेंजवासोजरै अरुजोजकरहतोदोबजमैतैसे ३२० कवित्त
देहसुकाइदई विरहानलसुष्मसमहूहअ नेनवमैहै नेहहस्योईहस्योनितहोतहै याहीमेजीवषप्योहीर
मैहै आगेहीयामअनंगअस्योरहैआपनीओरसैमोहदमैहै मेहझरीमेजवासोजरैजिमओरषरोजब
जोरजमैहै ३२० दोहा देषीसोनुजुहीफिरति सोनजुहीसेअंगु डुतिलपटनुपटुस्वेतहू करतचनोटीरं
गु ३२१ टीका श्रवनदर्शन सखीप्रतु नायकसौं हौकांहसोनुजुहीसारंसेअंगुजफिरतहीसोदे
षीनांही अरुस्वेतजोपटुओढ्योहै ताकेसरीरकीडुतिताकीलपटनकरकै(वेनेकी)फूलचनोटीसोरंगुहोतुहै
सोदेषीनों ३२१ कवित्त सोनुजुहीऐसेअंगफिरैवहदेषतहीसबनैंनहरैहै दीपतिकीलपटैकरिकै
पटसेतकोकेसरंगुकरैहै देषीनसोनुजुही ता कीउमेजकरैनदिवाहियआनिआरैहै वासमओरन
देषीसुनीकहुरूपनिकाईअनोषीधरैहै ३२१ दोहा वढतुउरसंपतिसलिल मनुसरोजवहिजाइ घट
तुरसुनिफिरिघटै वरसुमूलकुमलाइ ३२२ टीका प्रस्तावीक कविविहारीदासकहतुहैं संपतिकेव
ढनेतें अरुसलिलकरहतातलतिनकेवढनेतें मनुओरकमलवढतेजासहै ओरसुनिफिरिजाइस
केघटनेतेंजोवरूकरहतोंहूहरुहैसामूलसहितकुमलातिजातुहै ३२२ कवित्त वाढतवाढतसंपतिनी ७८

ओष्टओरवरूकहतो×

८७

60A रत्नगैसबतीरअनंतत्नसैहै और सुनौकंउवाकौमनपंकजसाथवहैविकसैहै केरिघटैघटतेरसुन
औसीअनेसीयेवांनिवसैहै याकौसुनावलष्योसवनीकैंहीसंगजैरैकमित्तनायनसैहै ३७ दोहा सां
नचलैबलिरावरी चउराईकीचाल सनबहियैषिनुश्नटउ अनउवढावउलाल ३७ टीका षंडिता
नायकाकौवेननायकसौं होकांहसांतोबलैरावरीचउराईकीचालउबलेउमांहीहै सोक्योंकि हियांतो
नषसहितहै अरुषिनषिनमेनटउहै सोमामोयातेअनउवढावउहै ३८ कवित्त सांनचलैबलि
रावरीचातुरीकौनचलावतचालनईसी हेहरिहीयलग्योनषजालनयेहोवेहालअोबुद्धिगईसी आ
इवढावतहोअनषादटदीविलुकावतिलाजलईसी काहेकोंआपअबैनटजातहोवाहीनेजानतमैं र
हईसी ३८ दोहा दीवनपरउसमांनइति कनकउकनकसोगात लषनकरकरकंसलगउ पर
सपिबनेजात ३९ टीका अंगसोंना सषीकौंवेनसषीसौं होकान्हजूराधिकाकेसोनासेगातकौ
औरसोनाकेलषनकीबराबरिजोतिहै सोपहस्यातैंजोनूपरतनांहीहै पैहाबकेपरसनेतेंलषनक
रकसलागतुहै तातेपिबानेजातहै ३९ कवित्त तीविपरैंसमांनलईडुतियाविधकीसुलतांतिनरह
आहपनांनकुमारसुनोउमकंचनकंचनगातधरेहै लषनकर्कसलागतिहैसबकोमिलिताईसुनाव
टेरहै नेदकबूनहीजांन्योंफुनिपांनिबीयेतैंपिबान्योपरेहै ४० दोहा करतिमिलनुआबीबविदि हरत

पवै

बिहारी टी ६० 61

सुसहजविकास अंगराग अंग न लगै ज्यों आरसी उसास ३४ टीका विछिन्निहाव सखीकौ वैन नायका
सौं हे राधे यौ अंगुराग करीयै अरगजो सो सरीरकै लागति है सो सहजै विकासपनौ हरत है अरु आछी
छविकौं मलिन करत है ज्यौं आरसीकौं उसासो लगकै मलीन करत सौं करत है ३५ कवित्त दीपति सुंदर
होति मलीनसी पीतमके अनुराग निरागे के लरहीसग रैतम तो मन आपनो सहज प्रकास न जागे अं
गन अंगन मे अंगरागकी यो ललना रसरंग न पागे याविध नैनन ने हार लगै जो नो आरसी वीच उसास
न लागे ३५ दोहा पहिरन भूषन कनकके कहि आवत इहि हेत दर्पन कैसे मोरचे देह दिषाई देत ३६
विछिन्निहाव सखीकौ वैन नायकासौं हे राधे मेरे हीयै तो सु है न है लातै कहनी आवत है कि सोनेके भूष
न पहिरमति नां सो कैसें कि आरसीके मोरचे सारसे दिषाई देतु है ३६ कवित्त भूषन लूं पहिरै जिन नामि
निकंचन के सुनि वात हमारी ऐसी अनोपम जोति जगै अब जोन्ह की यामिनी यों उरधारी अई अचं सोस
वै कोऊ जानत मान तिहो बकु बुद्धि विचारी मोरचे आरसी मो किलगै जिम देषति है डहडहति हारी ३६
दोहा जदपि चवाइनु चीकनी चलति चिहूं दिसि सैन तऊ न छाडत दुहुनिके हसी रसीले नैन ३७ टी
का परिकीया अनूढा सखीकौ वैन सखीसौं हे सखी जदपि चवाइनु कहीयै चरचा चीकनी होत है अरु
चिहूं दिस सैन चालति है तौऊ दोनुंके रसीले नैन है सो हांसी नां तजत नां हीं है ३७ कवित्त यद्यपि ची ६०

61A

बी

कनीमोतिअनेकचवाइनिवालतिहैविकैऔरै गोकुलनारिनिंतनोषीसीसे नकरैसगरीउहिनौरै तद्यावे
कननेनोंनतयेवहरूंसरसायसुधासमजोरै कोटिउपायकीयेरुदूंननकेनैन रसीलेहसीनहीओरै ३७ दोहा न
येविससियरललषिनए दुरजनदुसहदसुनाइ औटेपरषोनलुहरतु कोटेलोंलगिपाइ ३८ टीका सिषा क
विविहारीदासकहहतुहैं रेदुरजननकोनमीयाऊषिके याकोवेसासनकर कौकि दुरजनकोकवनसुनाव
होतहै ज्योंकांटोआमोपस्योपाइकोलगिकेंप्रानननकौंहरलेततौं ३८ कवित्त याजगवीचवहेषलजे
नरवाहीकोनेकपत्याउनकीजै नूतननजानीयेआपनैजीयमेउसमहरीतिसबैलविलीजे औटेपरैकुनि
षोनहरैवकुलोतिनकैसगरेअंगबीजे कांटेलौअरकेपाइलगेननकोरिउपाइकीयेकहुलीजे ३८
दोहा अनरसकूरसपाईयतु रसिकरसीलीपास जैसेसांवेकीकवनु गांवेनरीमिवास ३९ स्वाधीनपते
का नायकाकोवेनसषीसों हेसषीजोरसिकरसीलीहै ताकेपासअनरसकूकेविषेरसपाईयतुहै सोकै
सीपरैकि जैसीईषकीकविनगांवकेहै तऊमिवासमसोंनरीकैतैसे ३९ कवित्त जोअनपाइलोसीजेमना
इकैऔरकहारसहीननयेतैं पावतहैरसनारिरसीलीनहै रसदायकनेहनयेतैं जोबकेवाकुकुवाकुसु
नोहरिवाहीकोसंगलगाइलयेतैं सांवेकीगांवकविन्नषरीतऊमीठीलगैहै मिवासरयेतें ३९ दोहा
नारीविगुनीनषअरुंन ललासपामठविंदेइ लहतिमुकतिरतिषलकुयह त्रिवेनीसेइ ४० टीका

62

बिहारीसी ८१ ललितहाव सखीकोवेंनसखीसों हेसखीनायकाकेगोरीतौ विहूंअंगुरीहैं ननखलालहै औरश्या
स्यामछलाहै सोएतीनौंत्रिवेनीकोछविदरसौहै नायककेनेत्रयात्रिवेनीकोसेवकेअबफलकेकमें
रतिकोमुगतिलहेंगी ४० कवित्त आछूषनानुकमारिकेआननरूपकीरासिविरचिदईहै वासमओ
रकछुसुखमानलखीनसुनीहीयराजुवईहै गोरीचनीविगुनीनखलालहैस्यामछलाछविदैतनईहै
ऐसीत्रिवेनीकेसेवतहीअहोनैननआइकेमोषदईहै ४० दोहा उरमानिककीउरवसी डटतघट
तुडिगदाग छलकतिवाहरिसनरिमनों पियहियकोअनुराग ४१ टीका उरवसीसोना सखीकोवेंन
नायकसों हेराधेतेरेउरमेंकेविषेमानिकतेंजरी जोउरवसीहैसोयाकेडटनेतेंनेत्रोंकेदागघटतुहै
औरकैसीहै पियकौअनुरागपनोमांनोनेरोहीयोनरिकेबाहिरआंनिछलक्यौहै ४१ कवित्त मांनि
ककीउरमैंजुवसीवहरूषनराजतिहीललकैहै आपकौएनघटैसुनिमाधवनैननिदाघटैचिलकै
है आपनेचित्तविचारतहीउपमाइहिमांतिनतेंकिलकैहै औरतियाहियकौअनुरागनसोमनौं
बाहरिकौछिलकैहै ४१ दोहा सहजसेतपचतोरिया पहरतिअतिछविहोति जलचादरकेदीपलों
जगमगाततनुजोति ४२ टीका अंगसोना सखीकोवेंननायकसों होकांन्हआनुराधिकाजूकीसह
जेहीसेतपचतोलीयाकेपहिरेतेंअतिछविहोतिहै सोकैसाकि जलचदरकेदीवाकीनांई तनकी ६०

जगमगाति जोति ह्वै रही है ॥ ४२ ॥ कवित्त ॥ गोरी गुराई रवी कमला सन हाटक ओ करहाटन गौहै ओर न
कौं कुल से मन देषत सुचि छवी बिन बोरजगे है सेत सुना व तरी पहि सो पचतोरीया वाही तैं नीकी ल
गै है नीर के चादर दीपक लौं फलि कै अपनै तन ज्यौं तिलगे है ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ लहत सुजग सीतल किरन
निसि सब दिन अवगाहि ॥ माह ससी त्रम सूर सौं रहत चकोरी चाहि ॥ ४२ ॥ टीका ॥ सिसिर रित कवि वि
हारीदास कहत है या सिसिर रित के सूर्य की किरन सुजगता मैं सीतल लागत है ता तैं माह मै चंद्रम
के त्रम मिजांन के यों चकोर सूर्य की तरफ देष रहतु है पै राति अरु दिन की विचार ना करतु है ॥ ४२ ॥ क
वित्त ॥ लागति है अति सीतल सुंदर सेत सो हा मनै नेह नहीं है रैन दिवा सुष कौं अवगाहत सादी की
प्रीति प्रतीति लही है नैन चलाचल है हातन रंच कया विधि कीन वरीति गही है माह चकोरी ससी त्रम
तें अहो देषो न सूर सौं चाह रही है ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ तपन तेज तपतातपन अतुल तुलाई मांह सिसिर सी
त कौं क्युं न कटै बिनु लटै तिय नांह ॥ ४४ ॥ टीका ॥ सिसिर रित सषी कों वैन सषी सौं है सषी या सिसिर
रित को सीत है सो तपन को तेज तिन करि कै और तपता के तापनै करि कै और अतुल कहतां नारी तुल
ई तिन करि कै माह के मास मै विग र अस्त्री अरु नरतो लैटै का क्युं सो कटै नही ॥ ४४ ॥ कवित्त ॥ सूरज तेज प्र
ताप नली विध पावक तापन आइ अटै है और सुनो अति आतुर होइ अतुल तुलाई नमैं उपटै है कोर

63

वि. बिहारी टी
६२

उपायकीयेकुलिरंचनकोंउंघटावतिकूंनघटैहै पीनपयोधरऋंनपीयालपटैविनुनाहकोसीतकटै
है ४४ दोहा रहिनसकीसबजगतमे सिसिरसीतकेत्रास गरमनाजिगढमैनई त्रियकुचअचल
मेवास ४५ टीका सिसिररितं कविविहारीदासकहतहै केवागरमीजोकुलीमोसिसिरसीतके
नयकरिकैंमगलैतोसंसारकेविषरहिसकीनोरी पैमोनाजिकैस्त्रीकेकुचजोअचलमेवास
है तिनगढकैंविषैरहतीमई ४५ कवित्त या जगवीचिरहीनसकीअरुवाहिनकाकुनिवास
दयोहै वोहकुदांफरपैअतिआतुरउरहस्सकेसीतकोत्रासनयोहै घामनईनजिआपगढे
मनईइहनोतिनिहिंमौनयोहै नायकाहीयपयोधरपहयअग्रोमेअतोलमिवासलयोहै ४५
दोहा कोरिजतनकोऊकरौ परैनप्रकृतहिवीच नलबलजलऊंचोचदै अंतिनीचकोनीच ४
६ टीका अन्योक्त कविविहारीदासकहतुहै जाकेवीचप्रकृतपरीकैतासोकोरिकजतनकोऊ
करिदेषौमोकैसीपरैकि जोनलकैजोरतेपानीऊंचोचदै पैनिदाननीचेकोनीचो ४६ कवित्त ।
कोऊकरौकुनकोरिउपायनकेकैहयाश्रमहारदयोहै जाकोसुनावनयोप्रकृतश्रवसोनकबूअबटा
स्योगयोहै मोईउवैसंगआतुरचाहतयाहीनैऐसोअदिष्टवयोहै ऊंचोचदैनलकेबलयद्यपितो
जलनीचकोनीचनयोहै ४६ दोहा कूवेजोननसंग्रहै मनुमुकुनिकमेवेन याहीतेंमानकुकियै ६२

63A

वातनकोविधिनेंन ४७ टीका नेत्रउगन सषीकोवेंनसषीसों हेसषीमेंऐसेंजांन्योकिं मुकतेजो
वेंननिकरें सोफूठेसेंजांनिकेंवाकोंसंग्रहनांहींकरतहै औररुहीमांनकुगेंद्नीजुवासतेंविधि
तानेंवा तांकेहेतनेत्रकीयेहै ४७ कवित्त फूठहीजांनिकेंसंग्रहेनांहिंआंननतेंनिकसेजुपरेहै
रस स्वादघनेंऔनलेतेंअतिजीयमेंआंनिकैंआयअरेहै सुंदरसोहैसोचेषरेमहुकुजरेआ
वेपीयूषभरेहै याहीतेंमांनकुमेरीसषीसुनिवातननकोविधिनेनकरेहै ४७ दोहा सुघरसौति
वसपियसुनत दुलहनदुगुनहुलास लषीसषीतनुदीठकें सगरवसलजसहास ४८ टी
का रूपगर्विता सषीकोवेंनसषीसों हेसषीसुघरसौतिकेंवसनरनारकोंसुनतेंहीदुलहनु
कोंविमलोहुलासभयो सोमेवाकोंआंषिनकरकेंदेषीकिं तनुकेविषेसगारवहेसजउहेसहा
सहै ४८ कवित्त जेजेघनीसुघरेंअतिसुंदरसौतिनकेवसपीउभयोहै योंसुनिकेंदुलहीम
नमेंहुलिआदरकेंजुहुलासभयोहै दीवदीयेसषीआंननऔररलीविधिकेंनिहारयोनयोहै ६८
औरकहाकहुंवाजीयकीसुनिलाजसगर्वसहासभयोहै ४८ दोहा लिषिनबेठिजाकीस
वी गहिगहिगरबगरूर भयेनकेतेजगतमें चतुरचितेरेकूर ४९ टीका मुग्धानवलवधूना
यककोंसुनाइकेंसषीकोवेंनसषीसों हेसषीयाराधिकाकीसबीलिषिनवामतेंजोचतुरचितेरे

64

वि

विरी टी ६३ देते सो गरब अनै गरूर गहि गहि के बैठे सो वे संसार के केतेक चितेरे रूर नए नो ही है एरूम
नए सबी कै सकी नही ४८ कवित्त बैठे है आइ के ते त्रेजगन के केते गुनी लिषि वे ठनये है या
की सबी को सुधारन काज घनी गह के गरवाई लये है यातें के तो क केते विदेर रहे जनि वे सी लई
नही हारि गये है आपनी और ते चातुरी बोहि के केते चीतारे न रूर लये है ४८ दोहा तुनि आई
सब टोल में रही जु सोतिक हाइ सु तें अबपो आप सों करी अदेषिल आइ ५० टीका स्वाधीन
पतिका सखी को वेन नायका सों हे नायका वालेरी सोतिम सबरी टोल में तूना गारी कहाइ रही जु तीसे
अब कै और प्यो को आपनी तरफ अचि कै वा को अदेषिलसी करी है ५० कवित्त सोतिन टोल में वु
तुनि हाई सबै का ऊजानन तदोष नशी है ... रीनारि सैं आबी अदेषिल आइ क
री है आप सों अचि के पीतम को सुनि तै नली सोतिन आप अरी है ता को कलंक गयो सगरो अ
हो और न की मति हेर हरी है या नैक हूं न ही वा परी नारिसों आबी अदेषिल आइ करी है ५० दो
डिगन लगत वेध तहियारि विकल करत अंग आंतु ए तेरे सब ते विषम ई ठनती ठन वा तु ५
१ टीका अद्भुत रस सखी को वेन नायका सों हे राधे नैत्रा को तो लागत है ... की अ
री रु ही या को वेधतु है अरु वी जा अंग को विकल करत है सो ए तेरे नैन वान से तीषे सो सब ८३

64A

७१ दोहा उझकति गुझी लषि लालनु की अंगना अंगन माहि बौरी लौं दोरी फिरै जुवति छबी
ली गांहि ७१ टीका सर्वानुराग सषी कौ वेन सषी सौं हे सषी लालन की गुझी अंगना अं
गुने अंगना के विषै उझती देषि कै गहेली की नाई दोरी फिरत है वा गुझी की छबीली गया है ति
न कौं जुवति है ७१ कवित्त लाल की देषि गुझी उझती हिय राषति आनंद सुं हरे रहै ।
अंगन में अंगना अलबेली इकेली ऐंडाति सी अंति रस भरे है बौरी लौं दोरी फिरै पिछि
और ने अैस चरित्र अनेक करे है नैन न नैक निहारि वे लाइ ले मोहि छबीली कौं वृनत है
है ७२ दोहा ऊंचे चितै सराहियतु गिरह कबूतर लेत झलकत हग मुलकित वदन
तन पुलकित कहि हेत ७२ टीका मुदिता मोहाइत हाव सषी कौ वेन नाइका सौं हरा
षै ऊंचे कबूतर जो लेत है तिन कौं देषि कै सराहति है और नेत्र झलकति है अरु वदन
मुलकति है और तन पुलकति है सो कारन कहा है ७२ कवित्त ऊंचे चितै करि ना रिझ
वाय सराहति है अति नेह लयो है नीके रमीले कबूतर के गुन वेग रहै को समझ लयो है
नैन निहारे नयेक लनके अति आनन कौं मुकलाइ दयो है सीकर संग रोमांचन कौ ग
न देह अब कहि हित लयो है ७३ दोहा लागत कुटल कटाछ सर क्यों न होहि वेहाल
कहत जि हियरहि ऊ मारकहि तऊ रहत तिन टसाल ७३ टीका उराह नौ सषी कौ वेन ।

बिहारी॰ टी॰ राधा सों हे राधे तेरे नेत्रों के कटाक्ष रूपी कुरिंग सर तिन के आगे ते बेहाल क्यों न होत हैं १
८८ लाव लाई है रीके सो क्यों कि हीया कों दुसार करि कै काढ़त हैं तऊ न टसमाल से रहतु है ७४
कवित्त लागत हीं अति तीक्षण कटाक्ष है सर दुष्पान दे हृदै है हैं होत न क्यों न हे लाल बिहा
ग्रात री आनन नंसीयात कहै है काढ़त है हियरा सूं दुसाल के और कराल बिसाल उचहै है ऐसे २
उपाय कीये निकसे सुनि रे व तऊ न टसमाल रहैं है ७४ दोहा जनम जलधि पानिप बिमल
भौ जग आघ अपार रहै गुनी है गर पर्यो भले न मुकता हार ७५ टीका अन्योक्ति कवि
बिहारीदास कहतु है अहो तिन के हार तेरो जनम तो जलधि समुद्र तिन के विषै और तेरो
पाणी बिमल है और संसार के विषै पिन आघ घनो भयो है पै अब गुनी कै कि सिक रि गरे प
र्यो रहै सो या तें लो नांहीं है ७५ कवित्त हे जलजात सुनो मेरी बात ... तात ग होत
न ताकी और सुनो कुनि पानिप बिमल तो जग आघ अपार न गी ... गुनी नीकें गरे
रूप रैर है सा ... साच कहार न पागी ... नहीं सुनि या ... बासन ... सीष ४५५
बुमे ... ७५ दोहा ... नै नै कों गुन गरव ... सब मेसार ... उचरै हैं ग
र परै हार ७६ टीका अन्योक्ति कवि बिहारीदास कहतु है यों ... गुन नेगुन को ...
गरब है सा नें ... नै है ... सब री संसार ... गरे ... रहतु है सो ... ८८

65A

रसुत्र आकास वसै है याके निहारत ही डिगको डडषड्डं डघट्यो फच कोर रहसै है औरसु
गौ अधिकाई महा जगमें तम तो मन में से घन सें है नागनहर रवते रहओ है अरर रवचं
द निहार रहसै है ६५ दोहा लरका लैवे कै मिस नु लेंगर मोहि गआइ गयो अचानक अं
गुरी बाती वेलुबुवाय ६६ टीका सब नाइक कौ वेन सबी सों हे सबी लंगर लरका लै
न के मिस मेरे पास आनि कै अचानक ही मेरी बाती सों आंगुरी बुवाइ कै वे लचालतु रह्यो
६६ कवित्त हेंस जनी लरका कहि लेन कूं कै मिस आय हसा यद यो है लंगर मोहि गआ
रयो बुषचाप मो चोर नते तिन यो है कै तो अमर रव आदरि कै मनुहार करी अरु मौंह लु
यो है वेलै अचानक अंगुरी अपनी मै सै ही बाती बुवाइ गयो है ६६ दोहा दीव्यो देवो लतिह
सति ओहि विलास अबाहि त्यों त्यों चलत तन पिय नयन बकुण गाकन वो दि ६७ टीका वेष्टा
सबी कौ वेन सबी सौं हे सबी ज्यों ज्यों बोढा नायका अओढा के विलास ही व्रोदे वो लन हा
सि के करत है सो त्यों त्यों नायक के नेत्र नवोढा की ठाक करि कै बके हैं सो चलाय मान है
तनो ही है ६७ कवित्त दीव्यो देवो लन तौ और हमै विलसै अपने जीय ही तिन है है ओहि विला
स करैपे अपोढ है जानत नाहि न रीति नई है त्यों त्यों चलेन ही पीतम [illegible] नेन रहे षक के जां नु
बाकि दई है नाति नवोढ की बात सनो [illegible] ६८ दोहा र [illegible] गंगचरा

बिहारीसतसई
२१
66

चलीकरतुदांनमधुनीर मंदआवतुचल्यो कुंजरकुंजसमीर ८८ टीका बसंतपवन जो रंग
चोलतहैसोतोघंटाबाजिरनतुहै औरमकरंदनीरहै सोदांनकरतुहै औरहौरेआवतुहै सोयोंकुं
जरकेविषेपवनरूपहाथीआवतुहै ८८ कवित्त गुंजतभ्रंगघंटावलीगाजतमत्तमहाबलसो
भतिराजै.दांनवहैमकरंदनीरकरैसंगयाविधिकीसुखसाजनसाजै मंदहीमंदचल्योकुसुमित्र १
चतयाकेलतेंगदनरहैसाजै देखिसखीइहरीलिसदागनिकुंजरकुंजसमीरसमाजै ८८ दोहा
रहीरुकीक्योंहूसुचलि आधिकरातिपधारि हरतितापसबद्यौसको उरलगियारिबयारि
८९ टीका प्रश्नउत्तरं राजाजेसारदूलब्यौकि आधिकरातिकेआवनकेसमैजोसुचलि
रु.तीसोरुकीसीक्योंकेरही नबविहारीदासउत्तरदयोकि ...सुनोबयाररूपीतिनकेउ
रसौंलागिकेसबदिनकोतापदूरिकरतहैधन्ना ८९ कवित्त केतीयेयेररहीरुकेभरु। के
कौकुंचलीमनरंगरलीहै आधिकरातिपधारिरलीविसिफूलसुगंधसुदेहमलीहै ता
पहरयौसबद्यौसदिनकोअतिफूलरसीतीयकंजकलीहै आपनीजीयकीनावतीचारुभी
उरयारबयारभलीहै ८० दोहा चुवतस्वेदमकरंदकनु तरुतरबिरमा..य आव
तुदच्छिनतेंचल्योथक्योबटोहीवाइ ९० टीका बसंतपौनसोता मकरंदकेकनहैसोतो
परसेदसुवतुहै अरुहृष्टकेतरैबिलंबतुहै सोजानपवनरूपीबटोहीथाकोथकौदथ्य २१

66A

नदिमैतचलैमावतु है ८० कवित्त स्वेदश्रेवैमकरंदनकेकनयाविधकैवनवागविहारैसो
नोति नचलोसबसोधनिकेनरबांहनसुवरस्योआनिहारैसो आवत है दिसिदछिननैसुचलाक
रूयौचलतैपथहारैसो याविधदेषकोकोकक्योकबुद्दिकबरोटीसोकाइनिहारैसो ८० दो
हा लपटीपुहपपरागपट सनीस्वेतमकरंद आवतिनारिनवोढलौं दुषदवायगतिमंद ८१
वसंतपौनसोला परागज्योलपटीहै सोतापटुहैसनीकेमकरंदहै सोपरसेवहै सोयोसुषदपवननव
वोढाम्बीलौंमंदगतिलीयेआवतुहै ८१ कवित्त हैलपटीअतिफूलपरागनलपटसोंसुनवेषधरी
है संगसुगंधमनोहरलाजतसेदसबैमकरंदसनीहै हैसुषदानवजोसपानवरीअवदातसुहा
नधनीहै आवतहैगतिमंदचलौकिधौनारिनवोढवयारचनीहै ८ दोहा जेजनसदनैनआ
ररहे चलिसनेहसोपागि तनककचाईहैतउष सरनलौंमुहलागि ८२ टीका चितादसाना
यककोवनसषीसौं हेसषीलालनकेसलोनेनैनहै अरुनीसनेहसोपागकैरहेहै पैअरुरहेहैसोसर
यासुरंगतिननेंसुचहेहै औरसुनोअधिकेरसदायकश्रेसनेहसोंपागरहेहै योकछूइनवी
चकचाईरहीननकोडुषैदेउहैहै सरनलौंमुहलागिपुरीविधआपनीयौरनेंनामकहेहै ८२

67

विहारी टी. ९२

दोहा विषमवृषादिनकी तृषा रहे सबै जल सोषि मरुधर पाइ मतीरही मारू कहत पयोधि ९३
टीका अन्योक्ति कविविहारीदास कहतु है विषम वृषा के दिन कै विषै तृषा लागी सो सगरेई
पानी सोषि के रहे अरु एते में मरुधर के मतीरे टीपाए तब मारू के सो कु पयोधि पायो है ९३
कवित्त आतुर होइ बरी सगरे अति वेकु व्रजादि तकी गति जानी सोध रहे जल ज्यौं रसजै नैय
ऊ सो निघनी पल रही पल न वांनी ऐसी तृषा चित लागी कताऊ महा मरुदेस असेष विरानी पाइ
मतीर कु मारू कहै अहो या समनो हि पयोधि को पानी ९३ दोहा प्यास दुपहर जेठ के जिये म
नीर लु सोषि अमितु अपार अगाध जल मारयौ मूड पयोधि ९४ टीका अन्योक्ति कवि विहारी
दास कहतु है जेठ की जो दुपहर तिनके विषे प्यास मरते मतीरे लाखि कै जीए तो जो अमितु क
ही ये थनो है अपार है अगाध है ऐसो जल सो न स्यो पयोधि रे सो माथे मारयौ ९४ कवित्त कौन
काज जगत में तासकी वडाई जाई जातें गरजसरे न काहू पन में वोरेही तें आपनो सफल होइ
काज तो पै वाकी परंतर और कों न त्रिभुवन में जाके पान हा रुन निदाघ की त्रिषा में वा मतीरे
पाइ बचै सियराई लई तन में ताके आगे कहो को ऊ सागर की बात ज्यों डी सदितु अपार कै मैं
आवे वाके मन में ९४ दोहा न करन हर सब ज्ञान कहत कर्तादिन कालजात सों हैं की जै ९२

67A

कवित्त आगैज्यों कै ऊं रुहीविध हो उं गोहरि आपनी चालि [illegible] येरी मो सें गनागिरधारी रे ऊ

रेव बुरे न रहीकरि उपायकी येरी गोदेनन कुंदुरवनें दऊ मार मो [illegible] है कविनाई [illegible] येरी मो

विषकाविषमाइघरे न मिटै मन कवी पुरला बदी येरी २८ दोहा करो कुवत [illegible] मेला

तजो नहीं नदयाल दुषीहोऊगे परलहीय वस त्रिभंगीलाल २८ टीका [illegible] कवि

बिहारीदास कहतु हैं हे दीनदयाल मेरी मैं सार कुवत कहत लों निंद्या करो [illegible] है

सो बाह नहीं सो क्यों कि त्रिभंगीलाल मेरे तन मैं वसो हो सो [illegible] री

सो याते २९ कवित्त यावतकुवात करो मगरी लषि आपनी चालि बुटें [illegible] कुटिल

इयनी [illegible] नग लद्धि नैं आगे सब को तै आप तो दीनदयाल ऊवि [illegible] हो जो नै हो

ऊगे दुषित लाल त्रिभंगी निवाम हो येस रलाई कहोत २९ दोहा मोहि तुमैबाढी [illegible] जी नै थऊ

राज अपने रविरुद की उरु निवाहन लाज ३० नतिजव कवि बिहारीदास [illegible] सेवक [illegible] मेर

अहतु मारे अब वह सिवढी है सो देषी यै कि को नजा लै सो क्यों कि दोनो को अपने विरुद की लाज

निवाहनी है ३० कवित्त मो हि तिहारे वह सवढी अति जीत औ हारि लिषो [illegible] राई ऊकुनिकुंद वरे ३ वे

स व रा वरीरीति सबै सुषदाई आपनी २ औ रविरुद की दोउ मन केहियलाज सुहाई या विधि को निर

वाहकरी उ मनमें कं करी अवरी [illegible] राई ३० दोहा निज करनी मे कुचेरि कित संकुमावत इहवा

नाहि

=मेरी कुकनि बुरी करी पेव तकहत [illegible] और [illegible] र मन कहत [illegible] कुटिल [illegible] त्रिभंगी [illegible] नाही पुक=४

लो मोकुं सेनित विमुष रसों सनमुष रहि गोपाल ॥ ३१ ॥ टीका ॥ नकिजन कवि विहारीदास कहतु
हैं हो श्रीगोपाल आपनी करनी तातें क्यों संकुचत हो औ मारग कों संकुचावत हो जो मो सा
मो नित्त विमुष है तिनकी तरफ सनमुष क्वै कै रहो ॥ ३१ ॥ कवित्त ॥ आपनी करनी सुकदेव कहत
जतो आपनी चाल धरो हो औ रत्न अनेक अधम उधारत पापपजार क्वै बारक को रोत मो से विमु
ख की ओर सनमुष रहे मन रंचक संक न राहे चाल वहे सुकचावत हे हमेरी तक उमहु दुख करे
॥ ३१ ॥ दोहा ॥ तो अनेक औगुन भरी चाहै याहि बलाइ जो पति संपति हूं विना जदुपति राषे
जाइ ॥ ३२ ॥ टीका ॥ प्रस्तावीक कवि विहारीदास कहतु हैं जो पति या माया विना आप जदुपति राषे
जो या तो माया तन अनेक औगुन करि कै भरी है या संपति को बलाइ चाहत है ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ सील
संतोष समा विसरावत लोभ मिटे न विषयारस चावे काहू को आप समान न जांनत वेन गरूर
भरे मुह नावे या विध औगुन लाष भरी कहु वाहि बलाय घरी अति लावे आपने जानि कै
या रव को पति संपति हूं विन जो पति राषे ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ हरि कत जन गुन पीडिदे गुन विस्तारन का
ल परगट निरगुन निपट रहि चंग रंग गोपाल ॥ ३३ ॥ टीका ॥ प्रस्तावीक कवि विहारीदास कहतु
हैं यो प्रगट पनै जानै जब गुन कौं विस्तार कों काल कै तब आप मे अन्तै तें हरि तजै हे औ ह नि
गुन के तब नैरो आंनि कै प्रगट होतु है चंग गुनी के से रंग जो गोपाल है सो ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ या विरीयां

१००

68A

छिमता रक्षै पुनि आछे पर छिद्र राजन माझे हरि रहै आपनो बलि कै प्रभु कों ध्यावै २९३ एक मैं पीव दीन
जे निर्गुन होइ अग्राहर है दिगचंग के रंग रमा पति राखे ऐसो सुभाव सदा समसो हत या विधि की ।
कहि तिम मन लीजे २९ दोहा कहै य है शास्त्र स्मृति यहै समयानो लोग तीनि दबाव नि निकसही
पान करा जारोग २९४ टीका प्रस्तावीक कवि बिहारीदास कहतु है शास्त्र के विषे और पुरानन के
विषै ऐसे कहतु है और सयाने लोग हू ऐसी कहत है कि पावक अरु राजा अरु रोग एनी ते
समत न या को दबाव करतु है पुनः पावक तो लकरी को बाले अरु राजा तो मीया द बावतु है ।
अरु रोग आदमी कुं दबावतु है २९४ कवित्त और कहै है सुमेध सुश्रुत लोक सयाने सबै ईक
है है या विधि की रचना रचि कै विध आपनी और न दोष लहे हैं मीन दबाव तिहै निरसंक कुं
नहीं जो महत आगि गहै है राजा और रोग की ये कुनि पावक राजा पाव पर दुव दे हद है है २९४ दोहा
औ सिर धर महिमा महा लहीय ति राजा राइ दरगट जरत न आपनिये मुकट पेखि यति पाइ २९५
टीका मान मोचन मत नडपाय सखी को वैन सखी नायक सों होकाहै जो या मुकट तें राजा रा
व सिर धर के विषै महिमा पावै सो या मुकट को पाय तें पै रायत है सो या तुरसारी मूरषताई है
२९५ कवित्त या के धरे ते लहि महिमा अति राव मत धरनी पति जो है सो सबि राजत है तबि ।

69

बिहारीदासस०

१०१

सुंदर देषत ही जग के मन मोरै आपनी ये प्रगटावलि है नदलाल गारी मिष है अब कोइ सो पगमे पह
सो पर तस्व करी टगवार लषी सुनि सोहै २४ दोहा को कहि सकै बडे न सौं लषे बडीयो भूल दीने
दई गुलाब की इन मारन ये फूल २५ टीका अन्योक्ति कवि बिहारीदास कहतु है ओ बडो के तिन
सो को न कहि सकै बडाई ऊची दृष्टि कै एन कहि सकै सो कितने ईश्वर ने कि दई है इन गुलाब की न री
नि को ऐसे फूल दीने है २६ काकी चले अरु को न कहै सबक ऐसे बडे नन को मोर मचै है नीकी लषै है
वनी इन्द्र कलि यह कलिउ मास लये है रूप रसीले सो राम ने है हडु आर षरेक मनी वनए है
आपर दई है गुलाब न की इन मारन को व रफूल दये है २६ दोहा समै समै सुंदर सबै रूप कुरूप कोइ
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होइ २७ टीका प्रस्तावीक कवि बिहारीदास कहतु है
स्त्री करूप को अनेक रूप को कारन कोई नही या सब समै को मन कहलो विचार है जितने कम
न की रुचि जेती रुचि जिती सोहै २७ कवित्त आपनी आपनी ये विरीयां कहु सुंदर लागति है
सब ही के ये आने रूप मनोहर है अरु ओ कुउ कंचीर विरूप है फीके या विश्वकी नयरी चितै अंतर
रूप कुरूप सबै अति नीके सा को जितै अचिना ष चले कुनिति नीति तितै रुचि है मन ही के २७ दो
हो या तव पारावार को उलंघि पार को जाइ तियछवि छायाग्राहिनी गहै बीचि हीं आइ २८ १०१

69A जातुहै तिसोंन्मानकहतो मरमार्दवोलकहतोंनवीकरिकै तिनतुंडिदकैतोजातुहै ५७ कं
कािनजेतीकरैतटकीन्यानिआवतिनीरनयोजवनेरो चाटतहैरसकोसरितासवन्नोतनतुंग
तरंगनिघेरी दहमेडगैकोंछीनकरैफुनिचाहिगवैकरतानदिहैरो बालहीयेपरयेममहीरहते
रोमरोमहिदहोतघनेरो ५७ दोहा रातिदोंसमहोसंरहै कोंहतविककवहराइ जैतेऔगुनढूंढिये
गुनतुलाथपरिजाइ ५८ टीका मानमोचन सषीकोवेंननायकासौं हराधेतेरेमिलनेकोराति
अरुदिनचाहनांहीरहतीहै अरुजेतेऔगुनहैसोहाथपरिगुनतेजातुहै पैकोंहोवीकवहरहुनो
हीहै औरसषीकोवेंननायकसोंहोकोंन्हराधिकाकेअबमांनथोकंवहरतिनांहीहै रातिअरु
दिनमिलनेकोहोंमहीरहतिहै मोकेसेजांनीयेकि तुम्हारेजेतेऔगुनढूंढतिहै सोहाथपरिगु
नपरजातेहै ५८ कवित्त रातिऔद्योसरहैहियहोसकहाकरीइहनोंतिविहारै गीकनमांनक ८
कूवहरायननेकरिमायहाहाकरिहारै चातुरीवाकीकहाकहीयेसषिपायपरोकरिजोरतिहा
रे औगुनढूंढीयेजेतोवतिनराथगुनेपरिजायनिहारै ५८ दोहा मनुनमनावनकोंकरैद
तरुवाहरहवाइ कोतिगलाम्योप्योपिया प्रिजरूरिऊवलजाइ ५८ टीका चेष्टा सषीकोवेंनसषी
सौंहैसषीनायकनायकाकोमनावो मनुकहतोजांनिकरिकेनांहीकरतुहै सामोरुवाइरुवा
इहतहै कोहतेक



है ५८ कवित्त वाकोंम

नावनकोंमनहोइनऐसैहीनावनहैमनहीकोंहेतरूपयायप्यारीयारिकेकैचरित्रसबेउमहीकोंके
लिगलागरहेपियआपपियाबिजनमैंरिझावनलीकों प्रीतिकीरीतिकहीनपरैकहुओंनिक्स
चैतौनयोसबहीकों ५७ दोहा बिरहबिपतिदिनपरतहीतजेसुषनसबअंग रहिअबलोंबिर
हबानहऐ चलेहजियसंग ६० टीका प्रोषितपतिका सषीकोंवेननायकसौं होकोंहजेतुम्ह
रेबिरहकीबिथातिनकरिदुपहीतोपरतेषे अरुअंगकोसंगलैहीसुषपैजोहे सोअबबिनां
दुषलएरहेगोकि तुमपत्नोलेबाकोजीवलसाथिलेगो ६० कवित्त नायककेबिछुरेतेबियो
गबिपतकेबासरआनिपरेहैं आनंदबिहिउसासबहैंअतिदुषसबैअंगअंगपरेहैं आन
कोंचैननहीपलएकमोप्याबिषकेदिनमाननहेरहै आजलोंज्योंसौरहेअबदुरकनयेहालि
बोसंगजीवकरेहै ६० दोहा नयोबिरहबढतीबिथा परीबिकलजियबाल बिलषीदेष
रावलेंसोंहरषहसीतिहिकाल ६१ टीका प्रोषितपतिका सषीकोंवेनसषासों हेसषीराधि
काकेनबोहीबिरहहैतिनसोंबिथाबढतिजातहै सोजीयकेबिषैबालषरीहीबिकलहै पैपरोस
निकोंबिलषीदेषिकेंहरषिकेहसीतिनसमै ६१ कवित्त नूतनआयनयोहैबियोगपरी
श्रीज जीयव्यथाजुनईहै कैगईबावरीलैलैउसासनअंगसबैसुषनूलिगईहै बालकेलाल
कहेनपरेसुनियाबिधकीकछुरीतिनईहै देषिपरीबिलषीसीपरोसनिहहसीतिहिका 

70A

उज्जेरेहू पतिहि हरनि वसनरतिकाज रही लपटतन कौ बदन नैंकौ छुटीनलाज ६६ टीका
सुरति सषीकौ वैन सषी सौं" हे सषी दीवा के उजियारे ही पति रति कै काज वस्त्र हरने लागे सो
वदनु करतलों दीनलै ही तिनकौ सी ढ विलीयै नायक सुलपटि कै जोर री सो नैंक हीलाज छुटी नो
ही ६६ कवित्त दीपक के उजियारे पिया पीउ औरमनोरथ कौ गति छूटी कै अधरामृत पान
परस्पर आपस मैर समेटन छूटी औ विलयै रतिकाज परे रहनायक नें सबबास बछूटी सो
ऊ बदा नर ही लपटाइ कै संचन वाल की लाज न छूटी ६६ दोहा लषि दोरत पियकर कटक
वास वृंदावन काज वरनी वन गाहे डिग नु रही गुहैक रिलाज ६७ टीका विद्रुराव. सा
षी कौ वैन सषी सौं" हे सषी नायका कौ वस्त्र वृंदावन के वासले पियकै कर रूपी कटक कौं राध
का दोरत लषै सो वरनी रूप वन तिन के विषै नेत्र जो गाहे तामै लाज गुहे कौ करिकै रही है ६७
कवित्त नाथ के हाथ चमू चय दौरत देषत ही अति नीनिगरी है वासवृंदावन कानन कै अ सचो
नक आप लै या विधि रीति लही है नाथ लिहै सुष लौं हि नरी तउ आपने जी यषरी उलरी है जा
इ दुरी वरनी वन गाहन नैन गुहे करि लाजरही है ६७ दोहा मुकुरव सुरति आरंभ नही विद्रु
रीलाज लजाइ दुरकि द्वार रदरि दिगरई हीवहि हि दिगो ईआइ ६८ टीका सुरतांत सषीकौ
वैन सषी सौं" हे सषी सुरत विषे आरंभ तै लोनेलो सी कै रही ऊतौ अस नायक सौं विद्रुरै तें

लाजलोहीलारीकोंलाज आई सोहीवकीहिवोहीजानिकैजोदुरकनैदालऊलीतिनमैंदरथै
विषैआनिहिगनैनोनई ६८ कवित्त पीतमसुरतेआरंनेसकोचधरेअकुलाइग ई है लाज
जलजाइ घनीविलसोइकितेनसुहाइवियोगवेई है वोरनहीजिलेजाइरहे तबहारिहरीहि
गहंगनई है आपनेजीयविचारलजीविधदीवनआइहिगाइल ई है ६८ दोहा सकुचि
सरकिपीयनिकटतै मुलकिकछुकतननोरि करआंचरकीओटकरि जमुहानीमुहमोरि
६९ टीका चेष्टा सखीकोवेनसखीसों हेसखीराधिकापीयकेनिकटतैंसकुचिकैसरकी
अरूकरतैआंचराकीओटदैकैकछुकतनकोमरोरिमुलकिमुंहमरोडिकैउवासीकरी है।
६९ कवित्त देषतहीसकुचैसरकै अलिपीतमकेउरतेंदरनहीहै आननसुंमुलकीक
छुनूतनकैतनमोरिसमीपगहीहै औरकरीउरअंचरकोफुनियाविधकीछुलहीउलही
है आननमोरमरोरिकनैननिमोनसकोंतरसाइरहीहै ६९ दोहा देह लग्योढिगगेहप
ति तऊनेहनिरवाह नीचीअंखियनुहीइतै गईकनिखियांचाह ७० क्रियाविदग्धा सखी
कोवेनसखीसों हेसखीजासोंहदलाग्योहैताकेढिगभरतारबैठोजांनिकैतासोंतऊनेहको
निवाहलाग्योकियो सोकैसैकि नीचीहीआंखियासोंइतकोंकनिखियांकरिचाहिकैग
ई ७० कवित्त देहलग्योढिगगेहकोनायकनाइकाआकुलअंगनईहै कौनलखीये

81 80A

सौं

रूपै तैं विनकूं उरकूं नेहतकूं निरखाहि लईहैं नीचीयेनैंननहीकै इसैइवलनायक कि
हिदई है याविधकी चतुराई कीयेकबु कोनकै इहलिवारगईहै ७० दोहा इ
लैपरे छूटै वहैहनार कितेनऔगुनजागकरे नैवचदतीवार ७१ टीका यहैं वा
विविहारीदासकहतुहैं यामैंहजारेकलौचदलैपस्यानीजतहै अमहजोग्यकोरि
हाजातहै सोयामें अरूवैवचदतीवारजगतिकैविषैकेतेऔगुननकरएकरे तोजोरी
जरहेनवतैंसिषलोइकयाविधकेडपरेहरहरेहे कीवककलेकलऊस्योसगरेहे मीता
हिलैंनपरैहै चूटेहैकेसहजारकहाकऊं आनकरोरवहेनऔरेहै नैअरूवेहे हेम
नकिनेजगऔगुनकोनकरेहै ७१ दोहा मास्योमनुहारननरी गास्योंपकोदिनधा
असिअनषाहहो मुसकाहटविनुनोहि ७२ स्वाधीनपति को सखीकैयोगनितो कमाव
सखीनायकानायककोमास्योमातोमनुहारकरीहै अरुगारीदतहैमतेरसोईकै
है अरूवाजोअतिअनषावतिहै सोमुसकावनविनोऔरनोहीहै पकसौं होकों
रीमनुहारनसुंअतिषीजतसुंमनरीझिजईहै गारिमिवासषरीश्रुति जगरमगारडसि
अंगरनईहै जोआपमांनसबैमनमांनकरैजबमोहनसीषदईहै ।

लीलिन मैं रसकै
रै सो बिना मुसकाइ हसनौं हिलई है ७२ दोहा नाच अचानक ही उठे ि न ई है जा
जांनत हौं नंदित करी इह दिस नंदकिसोर ७३ टीका नायका कें बहारि इरी हि
धी आज बिना पावस बन कै विषै मोर अचानक ही नाचि कै उठे हैं सो हो सकुचि
मि की नंदकिसोर नैं नंदित करी लों सराहना करी है ७३ कवित्त नाचि उठे ी मुरमोरि
चांनक आप तैं नीकें उसे है और सकनौ रव राजत हैं आलि पंचव धइ हराइ क सरकी
जीय उमंग तै जांनत ही हरत हियरां निहसे है सुंदर सूरति मैं नकी मूर करी है।
किसोर वसे है ७३ दोहा मैं यह तो ही मैं लषी जगत अझरव बात ज हि न की क
तनु कदंब की माल ७४ टीका स्वाधीनपतिका सखी कों वैन नायका सैं उलही
अझरव जगति तैरे ही विषे लषी सो क्यों कि तेरी जो तना रूमाला पाइ कै गे हप
कौ तन कदंब फूल की सी माला नयो है ७४ कवित्त मैं हिय ढूंढ़ हजांनि उर्ष स सखी
अझरव बालठ नई है तेरे चरित्र कै तेक कहे कोउ आपनी और तै मौन लई है म नस्को
सा इको पाइ कैं अंगनि रफूलिगई है और कहा उपमा करी ये कदंब कदंब कैन
ई है ७४ दोहा बंस नास... की मुरलीधरी लुकाइ सौंह करै मों हनु हाथे

81A

पनिसमाज मनकूं वियोगिनुकैं कीयौ मरपंजरस्तुिराज ८० उद्देगदसा नायकाकौ वेन सषीसौं
हे सषी याउपवनअरु विपनके समाकै विषे दिसोदिसकुसुमजो देषिकैं २९ उहे सोमानकुं कि
वियोगिनकै वास्ते रितुराजनै मरपंजर कीयो है ८० कवित्त हे सजनी अबवा ......
......तनकदं कवुकौं सुनो नायकाकौ हीयो है देषतिहौं दमरूं दिसि सुंदर फूलअरु फूलनि लियो है वा
गनदामम ......वनमैं कछु नोति तत्तीन समाज हीयौ है मांनौ वियोगिनकौ सरपंजर रावयेकौ रि
तुराजकीयो है ८० दोहा मीतनतीतगतीतके ऊधनधरीवैझैर॥ पायेपरचैतोजुरे तोजोरी
येकरारि ८१ प्रस्तावीक कवि विहारी दोहा सकल ९० उहै नोधनजोरिकैं धरी येतो ओगुनके मीत
कोऊनहै औरनीतगनीतनकै अरु जो पाते परचै तैजुरै तोकोरि कजोरीये ८१ कवित्त हे स
जनी नहीं मीतकहुं जुगतीतकै सुंम सुनावबनावै उद्यमकैं धरियै धनजोरि षरे मनकौ हिनषा
वे कै सतकार उजातिन सौं अरु चैपरवे अरु पनपावे जोजुरै या विध नागसंयोगनितौ
घरवीच करोरिजुरावे ८२ दोहा टरकी ओईओ वती चटकीली मुषजोति रुसतिरसोईकै
वगर जगर मगरडति होति ८२ टीका ललितहाव मिलाइवो सषीकौ वेंन नायकसौं हे कां
रा ......टरकी वस्तुकी ओई सोओवती पहिरी है औरचटकीली मुषकी जोति है सो जगरमगरडति

82

विहारीसतसई
११२

नएरसोई देवगारका तोवारमें नोमेमनतिहै ॥ ५१ ॥ कवित्त सुंदरीआवतीथी कोई नवीनीतरुकी स
बेसेतसुरंगलई है आंननजोतिमेंगीतदकोलीहरीमलकीनामिहारीनई है पाकवमाइनलीवि
धसुंफुनिहारिरसोई केआइवईहै हाजनतिहै रमनीचरनआसमनहेहजगमगजोतिलईहै ॥ ५२ ॥
दोहा सोई धोतीसी तुमे कनककवरनतनकाल मारदवारदवीजुरी नारस्कीजतिलाल ॥ ५३ ॥
अर्थ मिलाइवौ सषीकोवेनलायककौ होलालवाबालाकेसब्रवरनमैतोधोतीसोलगतिहै
अरुकनककेवरनलगनहै सोकैसीकिसोनेहै सरदकेवादरविषैवीजुरीकैताकीनाकहत्तो
सोताकोंरस्करतिहै ॥ ५३ ॥ कवित्त धोवतसेतमेंसुंदरसोहतनायकाएकचात्रनपषरीहै हाट
करंगरंगीलीलनेह्रबिब्रोगअंगतरंगतरी है देषतहीकुलस्पोहियराफुनिओपमजोयमे
आनमरीहै लालसुनोतुमसारदवारिदवीजुरीकीरदजोतिकरीहै ॥ ५३ ॥ दोहा वहुधनले
तुअसांनकै पारोदेतसराहि वेदवधूहमिनेदसों रहीनारसुदचाहि ॥ ५४ ॥ टीका वैदसोंमआ
ष कविबिहारीकहतुहै वैदकारस्कोंपारोसराहिकैदेतहै सोअसांनसोंधनवहुलेतहै सो
वैदआपनामर्दहै सोवैदकीस्त्रीहसिकैवैदसों नारकेमुडकोदेषिरही ॥ ५४ ॥ जैधनवारिम्लेवा
कजोतिनसुंदरवांनीसुधासीकहीहै औरसुनोअहिसोंमनकोपारदेदेतसराहिगरूरगहीहै ११२

८९भी

देरकरै दिट्ठ कोउ बैठे अति सेज नैकी अगरसी निलरही है वे ढूंढ हसि इन आवते नेंद सौं नारह को आ
नन बाहिर रही है ८७ दोहा रहो गुही बेनी ताके गुरि वेकी मैंनार आवनी रचु वानजे नीवसु
आयबार ८५ सात्त्विकभाव मनी कौ बेननायक सौं हो कौंर रहो गुथनके वासे आली सो आ
ऐसो लैबे बुम बेनी गुही है जो आगे वे खुलनो बारा आया हो सो ला नी ठसै सुकाया है ८५ कबित्त
बाल की बेनी गुही रुचि नारपरीट कलायके मोहिर ह्योरे नारि नम्यो गुरुदेव कहिके कोन स
नो वर न्ना [illegible] विचार लन सो है याविध नारा जुवान जे नीर तु मोंह रूक के मुंह लेन कसो है नी वि
सुकाइ नीय हमवार रही न सनार ख वार ह वसो है ८५ दोहा डरे न निघर घट्यो [illegible] ए रावरी
[illegible] चिसुसी [illegible] लहै बुरी हसी खिसी की नाल ८६ अधीरा नायका को बेननायक सौं
[illegible] रिया रावरी [illegible] बोल [illegible] है सो निघर घट्यो कह लों निघर बारो [illegible] दिये डरति नो [illegible] है [illegible] खि
[illegible] नीच [illegible] रहै सावि व सार सो बुरी सील [illegible] गति है ८६ कवित्त [illegible] चर [illegible] हदी ये न हरै
कहु नर की री लिन ई मेह मेरी नवरी ढूंढ़ि न रही नेह [illegible] कुचा [illegible] कर करो आपसु [illegible] को
[illegible] लुहै [illegible] अति चेरन चेरी [illegible] नितिमोहि बुरी निरसनी कहु रासी [illegible]
सी कहि नाल [illegible] री [illegible] दोहा गनि परचे के दर तु मकै नराध बुवाइ [illegible] कति ही ये गुलाब

८३

बिहारीदससई
११२

कों कंबाकपियातुपाद ०० पदनोनो नायककोवेनमसीसैं हे मधीराधिकाके पायके वीले
परनते नयनै रमहोसुनमादकतिनोरहीहै कैधोंकिगुलाबकेफोबानेपाइकबियनरे ना :चिर
हीमेरीयाकेविषेफूलकेनरे ०० कवित्त हेसुकमारघनेरोमेरीरमहामृदुकेमेपेयामेमनो
ही आलेपरेमतियासरमों कबुराधहूपायमकेनहीजोरी ऐ उजारनकोचमवनाहिगा।
मालिनकेहियरहहरोनी हेरनहीसमगरीतुमसंकुगुलाबकवानसोपाइकबाही ००
दोहा तियतरसोहैमनुकीये करिसरसोहेमेह धापरसोहेकेरही फरवरसोहमेह ०० व
र्गीनि कविविहारीदासकहतुहैं यौंफरकरिकेमेहवरषतहे सोइतनोवोमाकरतहै।
जोबिरहनहैतिनकेमनतरसोहकीयेहै अरुमेयोगिनहैतिनकेनेरकीसरसाईकीनीहै
औरसबलोगनिहेहियाकीसीतलतिकैरहीहै ०० कवित्त हेतियनेतरसोंहैकीयेमनआले
अनेकपयनआपनदेहै नेहसमेलत्रसेनपरेकरियारउमासदयेहै कौहैईहायरहेनगतीय मेरोनायास।
रधेनिषपराकिहेंऔरवयेहै नागरिहोकरधारवहैनेहमेहघनेवरसेहैजरहै ०० दोहा
पावसघनअंधियारमेरह्योभेदुनहीआनु रातिद्योसजानोपरतु लषिचकवीचकवो
हे ००८ वर्षाविर्ते ऐसेपावसकैघनककवादरतिनकीगेधीरीमेंओरआनपतीकोकाकहै ११२

83A क्यों होत रहै है ऐसे छिपावत गात अघात न लाज अलोक सदेह दलै है लाल न यों मन ना
वति तैन न की छिन छोह छिपाय चलै है ३१ दोहा लहलहाति तनु तरुनई लचि लग लौं ल
कि जाइ लगे लोक लोयन नरी लोइन लेति लगाइ ३२ अंगमोना सखी कों वैन सखी सों होकां त्या
तरुनई को तन न लहलहात मोहै है अरुल चिलग करहतां वैन की परैल फि जात है और याकी कटि
लोइन कहतां रूप का स्निरी लगी है सो नैनों को लगाये लेत है ३३ कवित्त नीकी लसै तरुनीं
की तन नवु वितारुन की तरुनाई समै है वार कों नार से वार समरह सों पीन पयोधर स्नार नये है कौं
चलि है सुकुमार घरी लहि कै लग लो फिर कै लखि जै है लागी सी लोक अलोयन नारी है लोय
न कों चाल गाय कैल है ३४ दोहा रही अचल सी कै मनो लिखी चित्र की आहि तजै लाज डर लो
क को कहो विलोकित काहि ३५ अभिलाष रसा सखी कों वैन नायका सों देराख लै आजु मां
न मांडी चित्राम की सी स्तरी कीपरे अचल सी कै कै रही है और तें अपनी लाज अरु लोक को ड
र तजि कै कहो कौन कों विलोकति है ३६ कवित्त होइ रही है पहार सी निश्चल नैं चलचालि
लैं बहि गई है आहि मनों चित्र की स्तली औ सो वियोग व्यथा उन ही है बांधि कै लाज औ लो
लघीx क नि कों डर आपनी और गरूर नई है मेरो सो मेरी उराव करो जन काहि कहे न विलोक गई
है ३७ दोहा पलन चलै जक सी रही थकि सी रही उसास अब ही तन रितयो कहो मनुपव

यौकिहिपास २४ अतिलोचदसा सखीकोवेंननायकासौं हेराधेतेरेपलकोचलतीनहैं औ
रजकसीकैरहीहै औरउसासलेनेतेथकिसीरहीहै सोइतनेहीमनकान्हकेपासमिलकेत
नकेरितादकहतांघालीदीयौकहतिहैं २४ कवित्त जादिनलालचलेमथुराकोजकीसीर
हीकहुनेंनविकासें औरसुनोंदुवियोगव्यथाकुनिश्वांननलेतघरेईउसासै औसीउदास सवि x
भईअबहीननकीरतियोंकहुंहोतहैंआसें रहतिहैं सोरहकीयेमनतेपगयोसजनीकि
हिपासै २४ दोहा मैंलैदयोलयोसुकर छुवतछिनकिगोनीर लालतुम्हारोअरगजाउ
रछैलग्योअबीर २५ व्याधिदसा सखीकोवेंननायकसौं होलालमैलैकेदियोसोउसिरहा
थमेलियौसोलैतीहीजोमांहिनीरह्वैकेतेसोछनकगयो सोतुम्हारोजोअरगजासाकेउरा
केविषेअबीरह्वैकेलग्योहै २५ कवित्त वेविहीबाहषलोनेरूलीनिसमेंदरमैवरजायर
योहै देषतहीसोलयोअपनेकरयाविधकोविरहाउनयोहै ताकीततांईकहाकहीयेक
हुनीरहुवेछिनकाइगयोहै लालतिहारोअरगजाबालकेहीयलगैतेअबीरव्हयोहै २५
दोहा चलेचलेछुटिजाइगो हठुरावरेसकोच षरेचढाएहैतिअब आएलोचनलोच २६
सखीकोमिलाइबौ सखीकोवेंननायकसौं होकांन्हचलेचलरावलेसंकोचतेंहठछूटिजाइ
गो जोवसैंचढाएहैतऊनेत्रांमेंअवलोचकहतांनरमाईआयोहै २६ कवित्त वेविरहेकह

84A

वेगचलेोपैचलेबुरिजाइगोमहमसुनाई रातेरस्यांमसंकोचनहेयाकेसबेहवंक्योवहरांईक्ता
जरेकारेदरारेमहारसनारेनिहारहीयेदहरांई मांनमरोरिबरेईचढायेहैतेअबलोचनश्रां
ई २६ दोहा कहेंजुवचनवियोगिनी विरहविकलअकुलाइ कीयेनकोअसुवासहित बो
लबोलसुनाइ २७ नायकाकोकरुनाविरह सबीकोवेनसबीसों हेसबीजेवचनविरह
कीविकुलोंनीयकीवियोगिनीअकुलाइकैकहेसोबातनिकेबोलसुनाइकैइननायक
कोअसुवांसहतकोकियहे २७ कवित्त जेजेवियोगनिवेनकहेअतितेलेउसासषईकमी
नेनाहवियोगतेबावरीहैगईसारनहीकछुअर्थविहीने औरसुनौविकलाइरहेअरुदीन
घनेकरुनारसलीने कोंनकीयेअसुवांनसमेतसुबातिसुबोलसुनाइनबीने २७ दोहा
छिप्योछबीलोमुषकलसे नीलेअंबरचीर मनोंकलानिधिफलमले कालिंदीकेनीर २८ मुष
सोतां सषीकोवेननायकसों होकोन्हराधिकाकोछबीलोमुषनीलांबीरकेआंचलाके
विषेछिप्योसोभतहे किमनोंकालिंदीकनदीकेनीरविषेकलानिधिसोफिलमतहे २८
कवित्त चीरनीलेबरमेंजुछिप्योमुषआवेछबीलोलखेहीहस्योहे ऐसोअनोपमजेषांतिज
तेमुनिहारवेकोंजियजायअसोहे तेजकोपुंजपरोतरफेफलकेलरकेसबसोतलस्योहे
सरसुतामनोंरंगतरंगनितीरकेनीरमयंकपस्योहे २८ दोहा छुटेनलाजनलालचों प्यो

बिहारीदास
१२३
85

लषिनेहरंगेहू सटपटातलोचनषरे नरेसकोचसनेहू ॥ १७ ॥ मध्यानायका सषीकौवेंनसषीसौं
हे सषीराधिकाकेनेत्रतरनारकोंदेषिकेनेहसौंरंगेहै सोइनकोंलालचैवोअजेलाजबूटतनां
हीहै औरसंकोचअरुनैसनेहकरिकैंत्रैरहेहै तातेंषरेहीसटपटातहै ॥ १७ ॥ कवित्त माइकेंगम
नआवनकोंलषिप्यारीनिसंकह्वैदेषिसकैनां देषवेकोंतरसैहियरादिषसाधलगीचितुचैंनुल
हैनां बूटैनलाजअरूटैनलालचलोककीलीकउलंघपरैनां तातेंसकोचसनेहतेंरअकुलात
ज्यौंतषरेजलजातसेनैनां ॥ १८ ॥ दोहा ॥ मानुतमासोकरिरही विवसवारुनीसेइ ॥ झुकतिह
तिहसि२झुकित झुकि२हसि२देइ ॥ १८ ॥ चेष्टा ॥ सषीवेंनसषीसौं हे सषीराधिकावारुनीसेव
कैविवसलईहै सोतमासोकरिरहीहै सोकैसीकिपरैविजनलहै औरहसि२केंतोझुकतिहै औ
रझुकि२केंहसि२देतहै ॥ कवित्तं ॥ मानतैंअबोतमासोकरैअतितातेंकबुसुषमामनऔहै
होइरहीवसिवारुनीसेइकेमत्तमनोहरनैनझुकैहै औरसुनोझुकिजातहैसेअरुफेरिझुकें
उरकेविहसैहै औरषरीझुकिकेंझुकिफूनतिनीकीहसावतिदेहसिदेहै ॥ सदन२केफिर
नकी सधनछुटैहरिराइ रुचैतितैविहरतिफिरौ कतविहरतिउरआइ ॥ १९ ॥ अधीरा नायका
कोवेंननायकसौं हेहरिरायतुमारेतांईसदन२केफिरनेकीसाधिलागीहैसोछूटतनांहीहै सो
तोकहतिहौं जोंकिरुचैतवैविचरतातेंचीतफिरौ इहांआनिकेंउरकेंविषैक्योंविहरतहो ॥ १२३

85A

कवित्त गौरज्यों जोंन निजोंन न मैं किरवे की ऊटे व घनेरी धरो हो देह रिराधा बुटे न ब्रिने क मेंघेर घनौ
चिक्रं औरक रो हो आपजिते रुचि होइ त्ति ले विरहो नि रसं का किरो न न रो हो और के रंग रंगे ही यरा फु
नि आय अवे मन कै। विहरो हो ४२ दोहा विरह विकल नखि तु ही लखी पाती दई पठाइ आंक बिहू
नी यो सुनि ति स्नेवाचतु जाइ ४२ परवास विरह सखी की पत्री मखी सों हे सखी उन ने राधिका विरह
से विकल नई विन ही लिखी पाती समेट कैं। पठाइ दीवी है सो इत नाइक मे वै सैई चित की ये जो आं
क बिहूनी पाती वाचतु जाते सुने है ४२ कवित्त हो इ रही है वियोग ते व्याकुल सावरी बुद्धि थरी गलि री
नी पाती लेष लिखु ही जु पठाइ दई अकुलाइ महा रसनी नी लै अपने कर सी मचलाइ लगाय ही ये अंषी
यां सरकीनी सनै चित ते अति ओक विहीनी ये आपने आंनन ही पढि लीनी ४२ दोहा करै चाह सो चटु
कि के परे उन्हो हमै न लाजन वाएत रफरन करत भ्रुट सी नैन ४२ चेष्टा सखी को वैन सखी सों हे स
खी राधा के नेत्रों को मैं ननैं पेरे ही उन्हो हे करे है सो चाह सों सन्ना व से उ नहो करत है पै एरू सकत ने नहीं
है अरु हद सी करत है सो लाज निवारन कै लिये ४२ कवित्त चाह सो लै चट काय करे फुनि उरक
विषा अटकाय अरी है मारन मार षरे नर पाइ महा दुषदाइ करी तिधरी है लोलन वा ये घने तरफे।
अकुलाइ उवे नय नन्ह तिनरी है होइ रहे अन पाइ अवां न क छुटसी नारि के नैन करी है ४२ दोहा ।
ज्यों ज्यों आवत निकट निसि त्यों त्यों षरी उताल ऊमकि ऊमकि टहलें करति लगी रहत वे ताल ४४ के

86

बिहारीदास

१२४

आति निसअंबरमे

ल्हैहानायकाा सषीकोवेनसषीसों हे सषी व्रावाल्हररह्वरहे लागी षकी ज्यों ज्यों राति नेरी आवतु त्यों त्यों
षरी उतावली है के मिलाबरघरकों कांमकरतहे ४४ कवित्त ज्यों निकटें आवतहे अरु
नाइ लगी है त्यों त्यों षरी यें उताल धरे कछु अंग अनंग रसा तुम गीहै के ऊमकारऊ माछिकरें टहले अ
पैमन न ऐम पगी है लें ने चलेकों अबेर करें रहई बालवधू रहचहलगी है ४४ दोहा ब्रजवासिनको
उचितधनु जो धनुरुचितन होइ सुचित न आयो सुचितई कहो कहां तें होइ ४५ टीका जनं कवि बि
हारीदास कहतु हैं ब्रजके वासिनको उचितधन एश्री भगवान जो हैं सो कोऊ को नावत न हे एसबकें र
नावतु है अरु जो चित्तकै विषैकाहूकेन आयो तौ वाकौ सुचित करतौ निरपाय पनौ चितमें कहो क
हांतेहेहै ४५ कवित्त हैं ब्रजवासिन को धन उचितसुंदर श्री नंदनंदन जो है आपने जी य विचारधरौ
कछु सोधनसों चितजो जनको है सो चितमें कछु नहिं आवत कारही बार कह्यु अवतो है काम मरो
रउं जीर उर्मो सुचितता ईकहांतें कहौ कतरो है ४५ दोहा अपने अमत लगे वादिमचावत सोर ज्यों
त्यों सबकों सइवो एकहिनंदकिसोर ४६ टीका जनं कवि बिहारीदास कहतु हैं अपने अमत के ला
गि नलइ षके रपा वाद अनैसोरमचावत हैं सो ज्यों त्यों परकार करकै सेवो सो एक हीनंद किसोर कों सेइ
वो है ४६ कवित्त आपने २ लागिरहे मतको ऊन काहू को मर्म लहे है वादकै कै कछु सोर मचावत
कर्मविचार केवें नकहे है एककहे हरिईसमसिवा अरु औरु अलषत्रानं नचहे है सोंसबकोइतसे १२५

ववोएकहीज्यों अनुनंदकिसोरवरैहै ४६ दोहा गुननरनसों तुव गुनकनक पच्यो कपटकुचा
ल क्योंधोंदासों लौंहीयो दरकतुनांहिंगुलाल ४७ सषीनोउराहनो सषीकोवेननायकसों दो
लालराधाकोहीयोतुमारे गुनकेकनतिनकरिकेतोसुवरनस्योहै औरतुमहीकोकपटाईअरु
कुचालु [illegible] आपनी [illegible] करिकेपाकोतोअबदासोंकोपरैपातुक्योंधोंनांहीहै एफाटैहीजु ४७ क
वित्त नारीनसोंकनतोगुनरासिषेरेअविनाससच्योमनमान्यो कै[illegible]कपटैपचयोहै कुचालन
आपनीऔरसबैनयसान्यो लोलमृषादितकेकरनापितदेषतहीसगरीविधिगयो कैंधोंहीयो
इहदारिमज्योंदरकेनहीलाललघनोगदरान्यो ४७ दोहा चितुदैदेषिचकोरत्यो तीजीजलैनरूप चि
नगीचुगैअंगारकी पियेकिचंद्रमयूष ४८ आन्योक्त कविविहारीदासकहतुहै रेचकोरतें आपनेसि
तकेविषेविचारकेंदेषिकेंतेरीरूपअंगारकीचिनगीचु[illegible]गैसैनाजैगीकिचंद्रमाकीकिरनपीयेतें
नाजैगी पैऔरतीजीनातनैनाजैगीनांही ४८ कवित्त आपनोचित्तदैदेषिनलीविधिचाकचको
रनत्योंसुषपैहै औमोसुनावललग्योइनकोंदिगइजेधकारनलषनजेहै चाहिअंगारकीचिनगी
चुगिऔरकबूहीयरानधरैहै सुंदरसीतपीयूषनरेआतिकेमुष[illegible]चंद्रमयूषचुगैहै
४८ दोहा हैंहैंकरतिहोआवरो समुफलिसबैसयांनु लषिमोहनजोमनरहै तौमनुराख्यो
मांनु ४९ सषीकोमनाइतौ सषीकोवेननायकसों हेराधेतूंमोसोंकहतहै किमैंआवुरीहोंतेसग

लेमयोंतुसमफतिहों पैजोमोहनजूकोंदेषलैनेरोमनुवोररहेगो लोयारेमानुराषोमनोंकरतांजानो ए
मेरहीकहेलैतउविचालो ४९ कवित्त लोइकुआपनेतातैकऊंफुनिरहेरोमनुसबेसमफैहै स्यांम
[स्फति] कोसुंदररूपनिहारतनेनसबैतजिकोंउरफैहै आपनेजोवननवादिलषैकाइमनोवाचिजोथिरेहै
तोमनराषहोमांनत्रमांनकैयुंहीकीयेतेहयाक्रमकैरै ४९ दोहा धुरवाहोइनिअलिनुठे धुवाधर
नाचिऊंकोध जारतआवतजगतकों पावसप्रथमपयोधि ५० प्रोषितपतिकानायकाकोवेंनसषी
सों हेअलिधुरवनकैविषेक्करवासोहोइनेवऊंकोदमेएधूवाधरनउठेहैसोजगतकोंजारतआवउहैसो
कोंनकिपावसरितकैविषेपहिलोपयोध पैयोंपयोधनरैयोंहीजहै ५० कवित्त नोहिनएक्करयाहम
जोनतओंबरओरचलेबऊंधारे एधरनीचिऊंकोदधंआअलिआयउठेसुविसेषविहारे देषतही
फरपेजियराअतिमारतहैअबलोफरमारे पावसकैपहिलैईपयोधरआवतहीविरहीजनमारे ५०
दोहा नषरुचिचूरनडारिकै ढगिवगायनिजसाथ रह्योराषिहठलैगए हथाहथीमनहाथ ५१ चितल
गन नायकाकोवेंनसषीसों हेसषीउनढगनेनषकेरुचिरूपीचूरनमेरपरडारिकै अरुअपनेसाथि
लगायकैजोरह्योहैसोराषिकेअरुजोरावरीसोंहथाहथीमेरामनहाथकरिकैलेगयो ५१ कवित्त
चुटकैसैमहिदीकेसुरंगउहीअरुनाई केरंगरचेकैं रेषवसीकरमंत्रदिषाइकेसाथलगाइलियोअपने
कैं चारुनषद्युतिचूरनडारिअधीनकियोबऊंनोतितुरैकै लोचनलोलउसोंहुरह्योसमुझैराषि

४७७

रूपैनरहोमनहाबहवारधीहाधगयोमनलैकै ५१ दोहा चलनदेतश्रानारुसुनि उहीपरोसश्रा
नारह लसेतमासेकोडिगनु हांसीश्रांसुचनमांह ५२ श्रवतसनर्दकां सषीकोवेंन सषीसों हैसषीरा
धिकाश्रपनेनारहकोचलनुकेसमेपरोसनिसुतेंश्रनारुदेतसुन्यो सोवासमेंश्रांसूचनकेमोहिरस
के श्रांषितमासकौलसोहै ५३ कवित्त देतश्रनारसुनेजबशीतमबालतिहीपरदेसनवीने वाहि
परोसनिकोंश्रतिश्रादरकैसबसीषदईरसभीने श्रापनीनारिलसीहेवरीश्रनषाइनमासनके
डिमकीने बोलिसषीनकहाकहेश्राकुलहांसिनमेंश्रंसुवानरलीने ५४ दोहा सुरंनलालनतो
नकी उधोनसुरवहरायय एरीरागुविगारगो बोरीबोलसुनाइ ५५ सात्विकभाव सषीकोवेंनसष
षीसों हैसषीराधिकाकेलालनकेंनकीश्ररुतांनकीसुरतिहीनोंही श्ररुजोउधोधोसोसुरवहस्य
नहीपेएरीवैरीजोपपीहेबोलसुनाइकेरागुविगारिगयोहै ५६ कवित्त लालनकीश्ररुतांनकी
नैकनबुंदिसबैमनन्नलिउयोहै श्रौरउधोवहरायनहीसुरयाविधकोश्रनुरागभयोहै एकही
वेरसवैबुहिगोकबुहेरनकोहियराउभयोहै बोलसुनायश्ररीकोऊवेरीसोंरागविगारगयोहै । चातक४
५७ दोहा ब्रजस्योश्रागवियोगकी बसोबिलोचननीर श्रावोजामरहैहीयो उमोउसाससमीर
५८ पत्नीनायकवते सषीकोवेंननायकसों होकांन्हराधिकाकेहीयामेंजोनीरऊतोसोनेनोंक
रिनीरवहिगयो श्रौरजोवियोगकीश्रागिकरिकैबसोसोश्रबश्रावोजोमहीयाउसासकेसमी

रमायउम्योरहेहै ५४ कवित्त आगवियोगनिकी पजसों अति याविधिकी बकुपी रहैहै तापरि
नेहहूसा डुषदायन और विलोचननी रवहैहै सुरकमबेतनबोफिट यौपैं कलेवरबोगनजीउबहै
है आवहोज्ञामहीयोनितनूलउसासस मीरउम्योईरहैहै ५४ दोहा उरउरम्यो चितचोरसों गुरु
गुरजनकीलाज चढेहीमोरैंसेहियै कीयैबनतयहकाज ५५ चित्तलगनं सषीकोंवेनसषीसों है
सषीयाकोंउरनै चितकोंचोरसों उरझ्योहै अरु सगुरुअनै गुरुजनतिनकीलाजहै सोहीमोरेच
ढीकीपरेहीयाकेविषैरहतुहै अरु घरकौकामरूं कियैबनतहै ५५ कवित्त आपनोआइबरोउ
रझ्योउरचित्तकैचोरसुअंम्योनयोहै लाजगुरुहै गुरुजनकी अति लोनिललीसबलोकनिनेहै कै
लोकहौसमझाइ रलीविधिनैककुकाकुकीसंकगनेहै हीयहिमोरचढ्योसोरहैलकगेहकोकाज
कीयोहीबनैहे ५५ दोहा पटसोंपौंछिपरीकरौ सषीनबानकलेष नागिनसीलागीहगनु नागबे
लिरसरेष ५६ वंछिता नायकाकौंवेननायकसों होकोंन्ह्याबरेसेनयोनकलेषलियेजोनागरवे
लिकैरसकीरेषहैसोपटसों [illegible] पौंछिकैपरीकरो यामेरेनै औंकोंनागनिसारसीलागतिहै ५६ कं०
पौंछिकैन्हरिकरोपटसुंहरिनायकलागिरहीजुअसेषै जीयडरैअकुलाइघनीअचरावरीसोंन्ह
योनकलेषै मेरेकहीकौअलीतिनआवतआयहीआरसीलैकरदेषे नागिनहोइकैलागतिहैहिग
नागरबेलिकैरंगकीरेषै ५६ दोहा लोऊषिमोमनुजोलही सोगतिकहीनजाति वोझीगाझगमो १२६

४४A

तऊ उघौरहैदिनराति ५३ नायककीपत्री हेराधेतोकोंलषिकेमेरेमनजोगतिलीनीहै सोगति
कहीजातिनहै पैतेरीजोगोमीताकीषामतिनकेविषेमेरोमनगयोहै तऊदिनअनेंरातिउघोरी
रहतुहै ५४ कवित्त तोदिलषेअपनैमनजोमईसोहमजानतओरलहेहै सोगतिनांहिनजात
कहीकछुअंगअनंगवयारवहैहै लागिरहीअतिआतुरतासुरतारतिवादतिदेहदहैहै यौ
फिनगाफगमयो घनगादतउदिनरेंनउघोईरहैहै ५३ दोहासोरठा मेतलनारीग्यांन करिराषो
निरधारयह वहईरोगनिदांन वहैवैदओषदवहै ५८ व्याधिकोमिलननसषीकोवेंननाय
कसौं हेकांन्हमेराधिकाकीनारीलषिकैयोग्यांनकहतोविचारनिरधारकियोकि इनरोग
कोयाहीनिदांनहैकिवोहीजुवेंदअनेओहीजुओषदहैतातेंउमहचलौ ५८ कवित्त आपनेजी
यविचारकैसुंदरनारिलषीपरिग्यांनयहैहै चीनतबिनसबैतनकेकछुयाविधकोनिरधारर
हैहै पीरपिरातलषीसगरीवहई[illegible]कमनरोगनिदांनकहैहै सुंदरस्यामरतिवेदवहैकुनिउन
मईओषधसोईवहैहै ५८ दोहा जोतियउमजियनावती राषीहीयेवसाइ मोहिकुकीवतिदिग
नए वहईउफकतिआइ ५७ उक्तिता नायकाकोवेंननायकसौं होकांन्हजोतुम्हारेजीयकी
नावतीस्रीहीहैसोतुमआपनेहियाकेविषेवसाइकैराषीहै सोएनेत्रमोकुंफुकावतिहे तोसं
[illegible]उवाहीजंआंतिकैउफकातिहै [illegible] जीयकीनावतीजांतिअनेक

बिहारीदास
१२७
89

कीयेवरमावे राषतिहोहियमैंजुवमाइसदासुषपाइउमैंअतिआवे रूपसुलछनबाइरहीसववाउ
लेनाअबकोअतिपावे मोहिंफुकावतिआइअचानकनैंनक्रैजुवईउफकावे ५८९ दोहा दोऊं-
अधिकाईभरे एकेगोगहराइ कोनमनावैकोमनै नांमेमनवहराइ ॥ टी० मानवर्ननं सषीकोवेन
सषीसों हे सषीए दोनुंजनां अधिकाईतेभरीयाषकाएकेगोंकेविषेवहरायाहै सो ॥ कोनतोम
नावे अरुकोनमनें तातेमांनहीकोमतिवहरतिहै ॥ टी० कवित्त दोऊंषरेअधिकाईभरेअरुदोउं
सयांनसमांनलहैहै कोयहिवाधिलबोइनमेकहुएकहीगुनगहराइगहेंहै कोनमनावेरूमांन
तकोइलगाटगरूरनवेंनकहैहै रीतियहैउनकीहिमहेरतिमांनेहीयेवहराइरहैहै ॥ टी० दोहा
उरुलीनेअतिचटपटी सुनिमुरलीधुनिधाइ होंनिकसीकुलअसीसुनी गोकुलसीहियलाइ ॥ १
सवनायकं नायकाकोवेंनसषीसों मुरलीकीधुनिसुनिकेमेरेउर ॥ मेंअतिचटपटीलियेघकेंदो
उकेहोंहरषवेंनलईनिकससकें ॥ सुनोंषीनायकआघेकेकेहीयासोंलाइकेगो ॥ कवित्त आतु
रताकअचेनसबेउरदेहहदसाइहरीतिधरेहै कोनसुनीमुरलीधुनिधाइधरीवृजबालउबाहक
रेहै तेनचलेकतवेकुलसीअतिबाहिरहीनिकसीनकरेहै आइअचांनकहीवरकेवहगोकुल
सीहियलाहरेहै ॥ दोहा रहीपैजुकीनीजुमें दीनीउमेमिलाइ राषोचंपकमाललों लालहीयेल
पटाइ ॥ महेलीकेघरकोमिलनं सषीकोवेननायकसों होलालजोमोसोंपेजकरीकंतोमोर १२७

89A

हो मैं तुम कों आंनि कै मिल इही नीरै सो अब या कों चंपा की माल लों हीया सों लपटाइ कै राषो ६१ कवि
त्त रावरे आगे जु पेज करी ह रही अब वे मसु धारम चाषो ऐसी न कों उलषी ब्रजमंडल नारि निहारि तकों
नही जाषो मैं जु मिलाइ दई तुम कों [illegible] वह रूप उजेरसि कै छुप जाषो चंपकमाल लों बाल नलीहि
य लाल हीयै लपटाइ कै राषो ६१ दोहा हवन रचीली कर सकें यह पावस रितु पाय आंन गांव जो घर
रत सो मांन गांठि बिछुरि जाय ६२ वर्षा रित कवि बिहारी दास कहतु है या पावस रितु ऐसी है कि ता
कों पाइ कै जो स्त्री रंगीली कैसो ई हकरि सकै नोही यामैं ज्यों और गांठि घुले है सो मांन गांठि बिछुरि
जाति है ६२ कवित्त नेक रंगीली करै न सकै ह व आपते आप कुला सते औरै घेर घटा धि कें और घ
ने घन घोष घरी क न मैं करले है पाइ कै पावस काल विसाल रहै न सें जाल जली मरपे है आनि सबै
घुलि जात ज्यों गांठि त्यों मांन की गांठि बिरी छूटि जैहै ६२ दोहा वेई चिरंजीवी अमर निधरक फिरो
कहाइ छिनु बिछुरे जाकें नहीं पावस आउ सिराइ ६२ प्रवत्स्यत्पतिका नायका कों वेन सषी सों
हसषी वे जे मनुष्य निधरक फिरि न या जो चिरंजीवी अमर है यत तानि चिंत कहावत ना फिरै सो कों न कि
जिन के पावस रितु के विषे छिनु ही बिछुरे तें आउ की सिराइ न कहै है मे ६३ कवित्त वे उर है या जग वीचि
बरे चिरजीवी अनाद की ज्यों हीन ये है होइ रहे अमर जु कहाय कै और अस ष अनंत लये है गाफि
धरक फिरो निधरक यने जु गजीवन कौं उनये है नेक वियोगन तें जिनकी कबु पावस आइ कै सिरा
इनये है ६३ दोहा ने छवव नतन तावतो चितरमत आसिष्या रहै [illegible] घर सिलगाइ रउरु न

रा दी
१२८
70

षनवमनरह्यार ६४ दोहा सषी कौ वैन सषी सौं हे सषी मन कौ नावंतो आयो है सो रटत वनत नां होरै
अरु अतिप्यार है तातें चित मिलवे कौ तरसत है सो नायक के दूषन वमनरह्यार है सो राधा ते गोपन
उरते लगाइ रके धरति है ६४ कवित्त नेरत नां हि वनेमन नावन नावतो रैन दिवा जी [illegible] अरे है प्यारत
चित्तै परोतरसकुनि देह दसा दरसाइ दरै है ऐगन त्यों विरहा नरउतै तब या विधि के उपचार करे है लूप
नवा मरह्यार सब उरवी विलगाइ धरै है ६४ दोहा वाही निसि तैं नां मिट्यो मनु कलहद कोमल नलेप
धारपाकुन के गुनहर को फूल ६५ सषी को कुकिवो नायक सौं हाकां रउन के उरतैं जो मानु कलह को
मूल है सो तो वारा तैं ना मिट्यो है हो ना ही अरु नी गुडहर के फूल से वनि के नल पाकुने व [illegible] धारे हो ६५
कवित्त वाही निमाते मिट्यो नहीं मान मारावरनै न अैनन नवाये हे अति म्रलक [illegible] सको जानन का है
किरा मन ने रलगाये जान तहो तु मदीन वूयान तक्यो नकरो अव नेमन नाये सो रहै अवे ज्यों मया करि
माधव जास के फूलके [illegible] पाकुने आये ६५ दोहा मोहि लजावत निलजो ये फूल से मिले सवगात नो
न उहै कौ तुम लो मा न न जानत जान ६६ मदहे मान मोचन नायका कौ वैन सषी सौं हे सषी मेरो सव
गात आप चित ने फूल से कैमिलत [illegible] है सो ए निलज मो को लजावत है सो तो नु उहै की मेरो मानु जो न्या जो न ततनो
होरै ६६ कवित्त मोहि लजावत आप निलज्जे ये या विधि के अतिमान अरे है औसे फूल से तें जाय मिले सम
व गात कवहू हरात है रहै सो हमरो मध्य पान के सुंदर आपने जीय कलोन धरै है [illegible] रा जदिने मउ
ए करऔ म लौ मान न जानव रहै ६६ सोरठा तोतन [illegible] रूप लग्यो मन [illegible] गन को माडि १२८

90A

गलागरूप लगनलगी अति चटपटी ९७ मयंकमनिकां नायककौ नायका सौं हे राधे तेरे तनकी कोऊ अ
नूपम अवधि है कि जाके विषै सब ही संसार को रूप लागो है सो मेरे नैन जके ते रोरूप लगत ही अति चटपटी।
लागी है ९७ कवित्त तेरो सरीर सबै अति उत्तम औधि अनूप परी उमगी है वाको लग सगरे जग रूप सो जोत
न राबुसी जाय जगी है मोडि गजायल गेवह रूप को आपनी रीति सों प्रीति पगी है और सुनो इतने परि जोत
न मोडि गको अकुलोनि लगी है ९७ दोहा रहे निगोडे नैन नहि गहे न चेतन चेत हा कसु के रिस के करो
पनि सिंघ हासि देत ९८ सहज मान मोचनं नायका को वैन सखी सों हे सखी ए मेरे नैन निगोडे सके के रहे है
कछु चेतन अचेतन गहे तो ही है हिगर रहे है जोइन कों हा कसक करि है री सक करने कै रोतो पनि सि धंदा सिदेत है
९८ कवित्त नैन निगोडे रहे गहि कै सुनि देखत ही अनुराग तिरहे चेत अचेत न है कछू न गहे अब आपने ना
थे परे बिलसे है तोर टरै न नहीं अब मेलन ग फुनि वाहि रचना कित सकु चै है हा कि सक रिसके न करो तक थ
नि दुरनि बसहासि देहै ९८ दोहा मेरे रूप लागे गर रे लागी जी ना जोहि नोहि सो ईलै उरलाई ये लाल लाग
य तु पाई ९९ मध्य मानं नायका को वैन नायक सों हे लाल तुम मेरे गररे लागे रूप तुमारी जोन जिनके नाम के
लागी है सो मैं तुमार पाइ लागति हो कि सो जिन ही को लैके उर लगाइ लीजीये ९९ कवित्त हे हरि मोरू
सों बात लागे कछू बैन तो वा ही के बस भये है जी न लगी जिह नोहि मन बचन नैन ही वा ही के बस भये है और बरे
अंग सों हसे लोग तरे न दिवाउन संग जगे है सो इन्हें उर लाईये सुंदरि लाल लिहारे ब पाइ लगे है ९
९ दोहा नोउक सरस लोइ के तिलिक तरु निदलता क पावक रूर सीक मकि कै गई नेकौ काक १०

बिहारी टी
१२७
91

प्रलापदसा सषीकोवेननायकासों हेराधेकांन्हमेरेनांईं भ्रमोकियातहनिपावककहत्समारसीताकीकमक
सोंउकक्कासोंजाकिकेगईओरतिलोकइतकोंताककरीसोनावदकेसरलायेहै ७० कवित्त नाकेवकेमार
सीजुनिहारनत्र्पाइतिउकतनाईनहै ताकिइतेतहनीकनकछविनोंहानिकेंअविछमेदलईहै ओनेनतउप
कत्नानिधिव्याजनअंवरकोंफुनि ओरदईहै पावककीकरसीकमकेकरिकेंजुफरोषनिजाविगईहै ७०
दोहा सुषसोंबीतीसवनिसा मनुसोंएइकसाथ्रि मूकामेलिगएसुविनु हाथनिभोहेलाथ ७१ स्वप्नदर्शन
नायकाकोवेनसषीसों हेसषीमनुनायकमेस्वाथएकवेकैकेसोएऊतेतातेंसवनिसासुषसोंबीती सोअव
होमरोहाथसोंछांदिकेंमोकुंअकेलीमेलगईहै सोविनुकहूंई ७१ कवित्त बीतीनिसासगरीसुषसोंसुनिकें
सकीयवसिकामनिगोहें जोंननयोंमिलिसोअहेसोघघ्रियान्नोथ्थरेडिगजोहें वेनकहेहरवेईहरेआरूयावि
धकजुविलासनलेहोहें मलिगयोछिनमूकांऊऊंतनआपनेलषतेंलषनभोहें ७१ दोहा बांमबाहुफुरकसि
मिले जोहरिजीवनमूरि तोतोहीसोंभेंटिहों राषिदाहिनीदूरि ७२ प्रोषितपतिका सषीकोवेनसषीसों हेस
षीआजुराधिकाअपसोकहसोंकिरेवांमवाहूजोमेरेफुरकनेतैंआहरिजूजीवनकेमूलहेसोमिलेतोंमेंपहि
लीदाहिनीवाहहूरिराषिकेंतोहीकरिकेंभेटिहों ७२ कवित्त हेसजनीवहकोनघरीजुमनोरथलाषनिकेंअ
भिलाषुं जोहरिजीवनमूलवहेछिननैननकेंजुसुधारसचाषुं वामभुजाफुरकेतेमिलेहकहूंपीतमप्रेमसों
आनवेननभाषुं तोमकमितोहिहोंतेटिकेंसुंदरआपनेंदाहिनीहरिकेंराषुं ७२ दोहा बुटेहुटावैजगतमें
सटकारेसुकुमार मनुबंधनवेनीबंधे नीलछबीलेवार ७२ कच्चमोत्नादर्शनानुराग नायककोवेननसषीसों ॥ १२७

९१७ हेसषीराधिकाकेसटकारसुकुमारजोवारहैसोबूलाधकामेरेतोईसंसारमेंतेबुराइदेतहै औरजबबारनी
लबबीलेकीवेंनीबांधतहै तबमेरेमनकोंबांधतिहै ७३ कवित्त देषेतेंबूरेहूलाबेमहालबमागरतेंइहबांन
स॰ नेहै कारेषरेसटकारेयनेसुकुमारसबेसिरताजगनेहै बेंनीबंधेहठिकेमनबांधतसुंदरसोस
सरूपसनेहै वीकनेचोषसुगंधसबेअतिबेलछबीलेसेवारवनेहै ७३ दोहा इहवसेतनषरीअरी गर
मनसीतलवात करिकोंफलकेदेषियत उलकपसीजेगात ७४ अन्यसंयोगदुषिता नायकाकोवेंन
अन्यस्त्रीसों हेअस्त्रीअबारतोवसंतरितनहै औरगरमीनहै अरीयातोसीतलवातहै सोतेरेगातकैवि
षेउलकोंपसीनाफलक्यादेषियतहै सोकुहिकों ७४ कवित्त एतोवसंतमहारितसुंदरतातीषरीनष
रीसीयरीहे यांविधमंदसमीरचलेचिकुंअपारसुगंधभरीहैकोंउरकेंफलकेंउलकेतनदेषतहीयउम
गकरीहै कोंनकहोसजनीउमवातमोंकोंहतेगातपसीजधरीहै ७४ दोहा चितपितमारकजोगगनि
नयोनयेंसुतसोग फिरअतिफूलसोजोइसी समुझोजारकजोग ७५ जोसीमजाकं कविविहारी
दासकहतुहे जोइसीकेपितमारकजोगजानकेपुत्रनयेतेंसोगनयो पैतीजोयसीकोमनजारक
जोगसमुझकेफूलसो ७५ कवित्त चित्तवितेपितमारकयोगषरोअकुलायउसासलयोहे सोगुन
याहेनयेसुतदुसहदेषकहोविलजायगयोहे वारअनेकविचारलख्योतबफेरउमंगषरोउनयोहे
जोयसीजीयसचतलयोसमुझोइहजारकजोगनयोहे ७५ दोहा चमचमातचंचलनयन विचघुंघट
पटझीन मनकुसरसरिताविमल जलउछलतजुगमीन ७६ ललितहाव सषीकोवेंनसषीसों हेकों
न्हराअजूकेचंचलनेत्र [illegible] पैचंचलकैविषेचमचमातफिरहैहै सोकैसेहै मनकुसुरसरिताके

हलें गंगा नदी तिनके विषे निर्मल जल के विषे मीन को जो फिलो उछलति है ७६ कवित्त नायका नैनन लषे
चमके फमके अति चंचल ज्योति नरे है घूंघट वीच षरे पट फीन के देषत ही टीयरा न हरे है फेरफु के
अफके लल जात कछू व हरात न पे जकरे है देवत रंग नी निर्मल नीर मनों जुग मीन नये उछरे है ७६ दोहा
रहे मुकुफेरि कहेरियत हितु समुहो चितु नारि डीठि परस उठि पीठि के पुलके कहे पुकारि ७७ सषी
को मिलाइवो सषी को वेन नायक सो हो कांन्ह या नो मुकु फेरि के रही दाबियत है पे या के चित के विषे
जो हितु है सो तुम्हारे सां मन है सो कैसे कि तुम ही डीठि करि के परसो कि जो पीठि के पुलकांउ वे हे सो पु
कारे कहतु है ७७ कवित्त या विधि की लषी लाल मनोहर आंन करो रिकहै रिरहै यो समुहो हीय में है
सिहे अति नारि नवोढ फुलास लहे है डीठि ते डीठि हुये उठि पीठ के जीय उमंग बरी उमहे है कहा हतें नेन कुरा
व करे सषी ये पुलके ई पुकारि कहे है ७७ दोहा विछुरे जिय संकोच इह बोलत बनत न वेन दोउं दोरि ल
ये हिये कियमजां हं नैन ७८ विहनताव सषी को वेन सषी सो हे सषी इन दोनु के विछुरने को जीय में
संकोच है याते कछु बोल बोल ते बनत नहे सो दोनु ही आपने नैनन लजो है सकरि के ही याते ला गिर
है ७८ कवित्त नीके रहे है वियोग ते जीवन ते दंपती जीव संकोच नीये है बोलत ही बोल वनैन हिय रा
आपने चित्त हुराव दीये है दोरि के दोउं लगे हियरा सीयरात घने सुष पीयूष पीये है देह के ताप टरे सा
गर रंग हु देषति नैनन लजो है कीये है ७८ दोहा मो स्यों कित कत बावरी करये दुराव दुरैन कहे देत रं
ग राति के रंग नि चुरत सेनन ७९ सुरति गोपिका सषी को वेन नायक सों हे राधे तें मेरे तांई बावरी कहा
करति है याको दुराव कीये तें पे दुरति न है ए जो रंग के निचुरत ने सेनत्र हे सो राति को रंग कहे देतु है 

92A ७८ कवित्त बावरी मोहि करो कत भामिनी कामिनी को हकैं जीय मैं रोस गहै है नैंक डराव को यें नडरै सु
नि तेरी हि ह्निं सब बये ई चहै है बैन षगे अलि के विधुरी सुघरी सुषमा सब अंग लहै है कामिनी जामिनी के
रति रंग न रंग चुचात मैं नैन कहै है ७८ दोहा छिपे छिपाकर छिति बचै तमु समिट रनु मैं नारि हसति श
चलि मसि मुषी मुषते अंचल नारि ७० सषी को मिलाइबो सषी को बैन नायका सौं हसि सिमुषी छिपाक
र वे इमा मानो छिपानो है और सगली छिति कहत्तौ धरती तिन के विषेत मुनयो है सो अब निधी तिमुष तें
अंचर नारि हसति श समिट रनु कहत्तौ राह सं नारि के चलहो ७० कवित्त आधे कपोल छिपे हे छिपाकर
आयबु ये छिति मैं तमकारे मैं रोक ह्नौ करि नेक रूरे मति रोइ इनि संकरसे क्यों न संवारे औषधिनाथ मुषी
मुसकात चलो चलि चाल न षरे उजियारे आनंद सुधा सिमार करो अपने मुष तें अति अंचर [illegible] रनारे ७०
दोहा हेउ चाह न रेकरु चाहत कह्यौ कहें न नहि जाचक सुनि सुमले बाहिर निकसत वेन ७१ चितह
ताव सषी को बैन सषी सौं हे सषी एहा तु नरे चाह मौं कह्यौ चाहत है पै कहतै नाही है सो कैसी परै कि ज्यों जा
चक सबद कों देषि कै बाहिर बैन न निकसत न हीं त्यौं ७१ कवित्त नंदकुमार औ राधिका सुंदरि दोऊ जन
र अनिचाह [illegible] रसे है चाहे कह्यौ पै कहे न सकैं चतें नैन निमांकि षरे विहसे है कै के कटाक्ष कृपा सब रैक
[illegible] आप समें हियरा न बसे है जाचक कों सुनि सुमले रंक बाहिर बैन न हीं निकसै है ७१ दोहा सू
ने घर लहि कर गहत दिषादिषी कीई छि गहौ रुचि तनौ ही करति करि लाल चौही डीठि ७२ सूनै घर कै
मिलन सषी को बैन सषी सौं हे सषी राधिका अरु कान्ह के आगे दिषादिषी कीई अब कहत्तौ मित्राई कीती सो
राधा कों सूने घर मैं लहि कै कर गहे उहे सो लल चौहीं सीदी विकरि कै चित्त कै विषै गड़ी धकी सी नाकारो करत

बेहारी टी० है ८१ कवित्त पाइ कै मंदिर स्यौ अचानक सुंदर जोबन रूप भरी है ताकों जबै गहि आपनो पानि सु बांहि
१३१ मे कोच उमंग धरी है ईछदिषा दिष की समुझी मन ताहि न की जीय मै जो अरी है चित्त गही लउ नो
93 रिक रै अति ही ललचौंहीं सी दीपिक री है ८२ दोहा पिय कै ध्यांन गही गही रही वही कै नारि आपु आ
पुही आरसी लषि रीझत रिझवारि ८२ चेष्टा लीला हाव सषी कों वचन सषी सों हे सषी वही राधा नरता
र के ध्यांन मे गहगही है अही वह राधा नारि ह्वै के रही है सो आपु आपुन कौं आरसी देष कै रीझत है
आरूरी झवति है ८३ कवित्त नेह घनो पैव सेप रहे मतलबे इह बुद्धि वितर्क वढावे ध्यांन तें पीतम कौं
गहि कै x गहि कै क्रम वीचि चलि धिक लावे नारि षरी वह होइ रहै तन का यम नो वचरी सुष पावै आपही आ
रसी मे लषि आपने मोंन मको रिझवार रिझावे ८३ दोहा बुरौ बुराई जो तजै जो जिय षरो हरात ज्यों नि
कलंक मयंक लषि गनै लोग उतपात ८४ अधीरा नायका कौ वचन नायक सों कहे सषी सों हे सषी जो करे
बुरो मनुष्य अपनी बुराई कौ हे तो पिण लोग चित के बिषै षरो सो हरत है सो क्यों कि वाकी परतीति
आवे न ही जो न कि को ऊ बुरो विचार रहे है सो कैसे कि जो चंद्रमा कौं निकलंक पनो तब तौ लोक कों
ऊउतपात जांने ८४ कवित्त होइ रहै अति दुःष कैत्यो कलंक दशरा निहुकार नने है जो कबु रैव कोजो गबु
रो जन तो हि बुराई रुआई सने है तो निरधार षुराई अवे चक औ रसे विन हरात घने है ज्यों निकलंक मयंक
निहारत लोग दुष रोउतपात गने है ८४ दोहा मरिबे कौ साहस कके बढी विरह की पीर दौरति हैं समुहीं स
सी सुरसज सुरभि समीर ८५ मरनें दसा सषी कौ वचन नायक सों हे कांन्ह राधिका के विरह की पीर बढी है १३१
ता तै मरिबा कौ विचार करत है कि साहस करि कै चंद्रमा के अरु सुरसज के अरु सुरभि समीर कै साहमी कै

93A

केदोरतिहै ८४ कवित्त होहरहैअतिक्रमहैवाऊंनलवेद पीरवहीहीवियोगनीदेहमेंआवोंहीजामसहाउबपा
वैवैननहीपरउएकअधीरजवातसुहात।ननींदनआवे मारसकैमरिवेकहिंकाजबरीअरुनायकचितकै
बढावे दोहतिकैसमुहीससिकोअरुकंजसुगंधसमीरनुधावे ८५ दोहा कदहीध्यानलगीलषो वहअरु
लगिहैकाहि धरीयवउतरंगीकीटलों मनिवरईकैजाइ ८६ अभिलाषदसा सषीकोवेनसषीसों हेमषी
मेंकरहीकीध्यानसोंलागीहैसोलषतिहैकि याकेसरीरकोकहालाग्योहै यातेंतरंगीअरुकोटकीपरेकहीयत
हैकि कदाचितवहहीकैजातनहीं ८६ कवित्त ध्यानलागीकवकीनटरें कहुयाविधरेंनदिवावरिमावे अ।
अवनायरलाग [illegible]काहिनजानीपरमोकहूंउहिनावे कीटज्योंभ्रंगिदसाअपनीछिनमेंनरतोंनमरीके
जावे देहदसालषिकैसगरीवहईजिनहोइइहिंजीयआवे ८६ दोहा विलषीलषेवरीवरी नरीअनष
वेराग मृगनैनीसैननिनिनजे लषिवैनीकेदाग ८७ मुग्धाषंडिता सषीकोवेनसषीसोंतथानायकसों हो
कोरूअनषअनेवेरागसोंनरीविलषीकैषरीषरीदेषतहै अरुमृगनेनीसेंननजनिनांहीहै. सोतुमारेषा
वैनीकेदागदेषिकै ८७ कवित्त होइरहीविलषीअरुनायकलषेषेषरीषरी [illegible]पासनआवे नारीवे
रागनरीअनषाहटरोसतेंरातेंसनेनचावे सैननिवारमृगनैनीनजेनहीजोहसराहिकैसोंहनिषावे
वारहीवारअबोलनीरहेअरुवैनीकेदागलषेदुषपावे ८७ दोहा अनीयारेदीरघनयन कितीनतरुनि
समान वहचितवनिऔरेकछू जिहिवसहोतसुजान ८८ अनुकूल नायिका सषीकोवेनराधिकामें र
हेराधअे सेअनीयारअरुदीरघनेत्रकरिकेऔरेकितिहीकीअषीतेससमाननहै. वहैवेजासोंसुजा
नवकनेरहीवसकैरहेहैसोऔदेषनोऔरहीहै ८८ कवित्त दीरघकारेषरेअनीयारसुनैननुकजा।

केअपातश्रमांने याअनुहारिविलोकितहीसबकेती ननायकाहोतसमांने सोइनिहारिवोओरकूरु
निवाकोविलोकिनकोवहरांने कायमनोंवचितागिरहेजीयचाहिलषेवसिहोतसुजाने ८८ दोहा रूपि
शरूपकोहैपलनु फिरिफिरिजुरिजमुहाइ वीदपियागमनीदमिसि दीसबअलीउठाय ८९ क्रियावि
दग्धा सषीकोवेंनसषीसों हमषीसुनिरासिकापलनकोतोमितावरूपकोहकिये ओसरीजीजुरिके
उवासीलेतहे सोकोंकिनरनारकोआगमजांनिकेअसोमिसिकरिसबअलीकोंउठाइदीवीहे ८९
कवित्त केरूपकोरवनीवरनीकुकिकेशरूमकेजुलईहे करहीकेरइंगनअचांनकअांननमेजुमुराइ
गईहे जांनीजबैपीयआवहिगोइतआगमतेंइहलीतलईहे नींदयनीमोहिआ वनिदैमिसवेअव
आलीउवाइदईहे ८८ दोहा उभैवहनमकेसके नेपोसनरकेगोंन दीरघहोहिननैकहू फारिनिहारे
नेन ८० प्रस्तावीक जोवेटाआदमीकेसोवहाके सकेनोहीतावेसतारमेंगोनकैकरिदेषी साके
सहष्टांतकि जोनेत्रफारिकेकेतोकुदवो पेदीरघनेकुहूकैसकेनही ८०० जोजगतओंवहेनहोसे
सकेकोटिउपाइकरोवहवैसे क्योंनलगोअतिवेकवकेगेननजांकोवनावरचैवोविधिजेसे अजनत
आंजिअन्पारेकरोकोकमांज्योफूलेलपेअसकेअसे नेकुनहोइनहीसबजानतफारिनिहारेतेनैनन
वहेसे ८० दोहा गह्योअवोलोवोलिप्पों आपएठेवसीठि दीठिचुराईदुहूंनकी लपिसकुचोंहीदी
ठि ८१ मांनमोचन सामउपाय सषीकोवेंनसषीसों हराधेजोवसीठपवे कैतेमोपोंआएहै सोइत
नेकहनेतेंदोनूंकीनिजरसंकुचोंहीसीदीवीसषीदीठवचुराईदीनी ८१ कवित्त पीयकोलालअबैयअबो
लोगहेोअरुआपनेजीयाकुलासलईहे आछोपठाइवसीठअचानकदेहहदसांकहूओरलईहे वार १३२

१५१

हीवारविचारकरैरपबिनतातनघनीमनमोहमईहै देखिमैंकोचनरीआंखियांनडहूंनकीमीविधुराइगईहै
॥ दोहा डपघाइनचरवानरी आंननआंनननआंन लगीफिरैहकादीये कांननरकांन ॥ अवन
दर्शन सषीकोवंनसषीसों हसषीजोडपदाइनचरवाहै ताकीनेरीथकीआंनिकेआंननतेओरवि
ना वाहीजुवुरवासुननकेहेतनिकांननर्इकांननईकाननकोविषेकोनाकरिकेनेरीहियेलागीरहत
है हूंककहतोसांदकेसांदवीरदीयेलारलागीफिरै ॥ कवित्त हवियओलांगहेनहीवोलतयावि
धकेजुविद्योगवसायें ओननरआंननईकबुरेरअनोंषीसीपीरपिरायें दुंकादीयेफिरैआंगनमेघर
मैंअंगनमेंबिनआये नैकनहीकलहोइरहीवलउकांननरकांनलगाये ॥ दोहा द्विजकरिउमद
वयोंलगो नाविकनाकोवाइ टलैतपतितनकीनक चलैपसीनान्हाइ ॥ व्याख्रिदसों सषीकोवेन
सेषीनायकसों हाकांनजोतुमहितकरिकैविफनोपवयो ताकीवावकेलागनेतेतपतिटलैहै तक
पसीनामेनावनेसोवलउहै ॥ कवित्त केहितआपपवायदयो तुम ताविकुओरगुलावकली
है वाविजनाकीवयारलगीजिहगंधसमूहलुनाइअलीहै अंगअनंगवथासरसातसुयाविधको
हाषकांनलजीहे हरिलईतनकीअतितापतऊतीयस्वेदअनायचलीहे ॥ दोहा आंनआंनहि
गषांनपति रहतिमुदितदिनराति पलक कंपतिपुलकनिपलक पलकुपसीजतिजात ॥ अ
लता सषीकोवंनसषीसों हसषीराधिकाआपनेप्रांनपतिकेहिगवैठीहे वेआंनआंनकोहसोकें
सेकि दिनअरुरातिमुदितकल्लोहरषतकरिरहतहे अरुपलकमेतोकोपतिहे पनकुमेउ

पुनिः

विहारी टी
१२२
95

लकति है अरूप लषमेपसी जलि जाति है ॥ अथ कवित्त ॥ पीतम ध्यांनतें आंनि समीप सो आपने नैननि दे
रि लये है आप बरी सुद पाइ रहे है दिनराति समबेदन तबौं दिदये है कंपति है पल मै पुलकै फुनि औरप ले
क उसासल ये है फेर मिहारत और दसापनमै नोपसीजन गात लये है ॥ अथ दोहा ॥ बालबबीली ति
यन में बैठी आतु छिपाइ अरगट सी पांनूस मे परगट होति लषाइ ॥ अथ अंगसो ज्यों सबी कोवेन सषी
सौं हे सषी वा बालबबीली है जो तीयन के विषे आपको आपो छिपाइ के बैठी है सो अरगट के हलौं दीव
टि मार सी फानूस के विषे परतक्ष लषाव होति है ॥ अथ कवित्त ॥ आली वृषभांनकी लाडली वालबबीली
सषे तीयके मनभावे आप छिपाइ के बैठ रही जिहां गोपी घनी गुन गोविंद गावे देहकी दीपति दीव सिष १
समप्ये बर ओट कहलौं दुरावे होइ रही अरगट बरी फुनि पांनुस सी प्रगटे लषि आवे ॥ अथ दोहा ॥ एरी
यह तेरी दई क्यों हूं प्रकृति न जाइ नेह नरे हिय राषिये हे रूषीये लषाइ ॥ अथ उराहनौ मानमोचन
सषी को वैन नायका सौं हे राधे तेरी प्रकृति क्यों हूं जात न है जो तैरे तांई दई नेहते नस्ये हीयामें राषत
है तौऊ तैं रूषीये ही देषीये है ॥ अथ कवित्त ॥ एरी सुनो इह तेरी दई सु जपले कहूं कहुं जो नीन जाये हरिन
हे इपरी प्रकृति बकुस्यों जकरा को ऊ को रिझ पाये आदर नारी के कें मनुहार करे गिरधार कीय मन ले जाये
राषीये × नेहन रे हीये सुंदरि ए रीत करूष रूषी लगाये ॥ अथ दोहा ॥ इहि कांटे मो पाइ गडि लीनी मरत जिवाइ
प्रीति जनावत नीत सौं मीत जु काद्यौ आइ ॥ अथ प्रेमगर्विता नायका को वैन सषी सौं हे सषी इन कां
टे मेरे पाइ के विषे गडि के मरनी कों जीवाइ के लीनी है सो क्यों करि के जु मीत आइ के जो काद्यो सो नी १२२

म

९५A लकहतोंम रषोंहि कै प्रीति कोजेनाव कीयो या तें ९७ कवित्त देसतनीइ दि कोरे षरो अब मो पग मेग म
काम कीयो है मो रिझिवाइ लई मरतै सुनि आपनै जीय मां निली यो है प्रीति जनावति नीति सुरंषक
नैन निहारपी य षपी यो है चाहि रहौ अक लांन अचानक पीतम आइ कै कार दीयो है ९७ दोहा ना
क वदे सीवी करे जितै ववी लै वेल फिरि फूल वहे गरे पो ककरी लीगेल ९८ दंपति अलिमारि
का सषी कौ वेन सषी सों हे सषी जिन जाइ गावरी ली वेल जो राधिका ना कंच दाइ कै सी वी कहता सि
मकोरो करे है सोन रतार कों सुहाई लगे है तातें वाकी ललि जांनि के वा सें पोवारी जुकों करी वाली
गे लगइ वहे ९८ कवित्त नाकं चहाइ कै सीवी करे अति नो हमरो रिकै दे रिरहै है वेल ववी ली जिते जी
यत नावति मोलोहो रीये अधिके रेव है है ओर सषी कसि के नसि कें चलि वे न रसाल कहे है लीलि के पी
तम वेर हो वे रव हे क करे ली य गेल गहे है ९८ दोहा नटि नसी ससी वतन ई लुटी सुषन को मोट चु
लुरहियै चारी करत मारी नरी सलोट ९९ अन्य संयोग दुषिता नायका कौ वेन सषी सों हे सषी चु
लुरहो नटि मति नां लै रैसी सपरि मारी सलोंट सों नरी है सो तेरी चारी करत है कि तै सुष की मोट कह
तो अधिकाई लूटी सो मावत नई है ९९ कवित्त कौं नट जात सुनो अब नामिनी मा बितसी ख
मारी तिहारे नई है मो टि लुटी सगरे सुष की तुम औलन जोपन ई उन ई है वात चली कव ना वहे होक
त होइ रहे सुषदी कर ई है मारी षरे जुस रोट परी यंतातें सबै सषी जांनि गई है ९९ दोहा जिहितां म
नि लूषन रक्षा वर नम हा वरनाल उहीमनो मषीयो रंगी ओवन के रंग नोल १०० वंदिता नाय

कीकोवैंननायकसौं हेकांन्हमैंजांनतहोंकिइनसौतेरेंलालकेविषेचरनकेमहावरकोलषनवनायोहै तोतिन
हीजुआपनेउवनकेलालरंगतेंमनोंउमारीअंषियारंगीहैं ६०० कवित्त हेनंदलालसुनोंतुमकोजिहिनामिनिरु
षनलेषरच्योहै आसनपाइनकोंजुमहावररावरेलालसमहसच्योहै सोंहेंकरोइतनैपरआइकेंसोधिनसोंस
वंदेहपच्योहै जांनतिहोंउहिउवनकेरंगनैंनरंगेकवूरंगनांहिवच्योहै ६०० दोहा हेमोहनमनगडिरही १
गाढीगडनिगुपाल उवैसदानटसालसो सोतिनकेउरसाल १ मांनमोचन सांमउपाय सषीकोवेंननायका
सौं हेगुवालहेमोहनजूकेमनकेविषेगाढीगडनिकेगडिरहीहेसोतेरीसौतिनकेउरकेविषेनटसालसाल
केसोसालतहै १ कवित्त मोहनकेमनमांझिरहीगडितेरोकह्योसबलालनपाले गाढीगडोननिदेषतिहो
रीहाहाकरिंरेनदिवाडुषसाले काहूसोंमेटिनजाइदईगतिश्चरवकेरुतआपनेलाले संततज्योंनटसाल
उवैसुनिसोउरसोतिनकेअरसाले १ दोहा लाजलगामनमांनही नेनोमोवसिनांहि एमुंहजोरतुरंगपलें
अैंचतिहूचलेजांहि २ नेत्रलगन नायककोवेंनसषीसौं हेसषीएतेरेनेत्रवसिनांहीहे जोलाजरूपील
गांमहेसोतोमांनतिनांहीहेएमुंहजोरतुरंगकीपरैअैंचहीचलेजातेहैं, २ कवित्त देषतनागरनागरकीछ
विफांदपरैहेहरकेनरहांही लोचनलोलतुरीमुहजोरसुलाजलगांमकोंमांनतनांही अैंचितहोंअपनैइतकों
वलिएवलिकेउतहीचलिजांही कैसीकरोंनहिमोवसमएकलकोंनिकेचाबुकतेंनडरांही २ दोहा छिगतिा
पानिगिलजातिगरि लषिसबअंजवेहाल कंपकिसोरीदरसके षरेलजाएलाल ३ कसनारस कविविहारी
दासकहतुहैं इंद्रजूकेकोपायमांनहोनेतैंपांनकहतोपगतिनसौंछिगतोमोगअैसेंसगलेब्रजकोवेहालदे 

96A
देष्यौ औरकिसोरीजोराधिकातिनकौंकंपतीदेषिकैषरेजजानैहैलालजू ३ कवित्त कोपजयोमघवाउरच्यो
नरवाकुरमेघमहामंडिआये पौनिकवृदिगतेंगिरलातपहारनिहारसबैसकलाये गोपीगोपालजगेहै
विहालरहीनसंनालषरेहहराये कंपितसीवृषनोनकिसो [illegible]रिनिदेहदेषाइकैलाजलजाये ३ दोहा क
रसुंदरीकीआरसी प्रतिबिंबितप्योपाइ पीठिदीयेनिधरकलषै इकटगदीठलगाइ ४ क्रियाविदग्धा स
षीकोवैनसषीसों हेसषीराधिकाकरकीमुंदरीतिनकेकाचमेंप्योकोप्रतिबिंबितपाइकैपीठदियेंएकटगनि
जरलगाइकैनिधरकलईदेषितहै ४ कवित्त वैविकृतीव्रजकीजुवतीसबलांतिअनेकसिंगारबनाये ला
मधिराधिकाराजतिसुंदरषेलनकोंहरकंइतआये पौनिअंगूठनिआरसीअंतर प्रीतमकौप्रतिबिंबि
तपाये पीठदियेनिरसंकबिलोकितएकटगीकरिदीठलगाये ४ दोहा इतेगीरकूंभेदकें किलहीकेइत
आइ किरिदीठिजुरिमीठिसों सबकीमीठिबचाइ ५ ऊट नायककोवैनसषीसों हेसषीयाकीमीठिइत
गीजोरभेदकैअरुकिलहीकै इतकोंआंनिकैअरुसबकीमीठिबिवचाइकैमेरीमीठिसोंजुरिफिरिजातहै ५
दोहा भेदिकैऐतीवमीअतिगीरनआतुरताउरआंनिपरेहै आइइतेकितकूंहुाइहैरकेलाजाफेरायपैना
हिफिरेहै दंपतिचाहनैरमनव्याकुलेलागिरेहै औरसबैनकीमीठिबिवचाइकैंदीठिसोंमीठिजुराइफिरे
है ५ दोहा ल्याईलालबिलोकीये जियकीजीवनमूलि रहीजौंनकेकोनमें सोनजुहीसीफूलि ६ सषीको
मिलाइवो सषीकोवैननायकसों हेलालमैंल्याईहूं तुमारजीवकीजीवनमूलतिनकोंदेषियेकिजो
नकेकोन[illegible]मेंसोनजुहीमारिसीफूलिकेरहीहेतिनकों ६ कवित्त ल्याईहेलालबिलोकियेसुंदरकायम
नोवविपेमनहीहै याकोसदाजुमनचाहत[illegible]हीहै बंचलनैननसुषमामुषवेनउ

अंचानकआनगिरे

वीलेकन
राजन अंशोफल मैं मो लगरही है जौंनके कौंन मैं अंग अनोपम सोन जुही सम फूल रही है ६ दोहा ओवउ वेरहो
मो भरत छिगनिहनकी चाल सो मन कहीन पी जीयो पियततमाश ताल ७ चेष्टा नायकाको वेन सषी
सों हे सषी ओवतो ऊं वैकी ये ओर हांसी नैनंकी अरुनेंहकी चाल किये जो लालने ब्याधपी वत है सो कोहो
मेरो मन पीयो नहीं एम बपीयो पीयो ७ कवित्त ओवउ चाइ कैहांसी नरीमुहना रिउ वाइ उसास लीयो है
चोंहन चाइन वाइ कै नैनन ओर अनेक चरित्र कीयो है वैचकै वार अनेक सुजांन धयांन आकाम उफ
यदीयो है पीवत होजु तमा हर समा उकहा नही मो मन लालची यो है ७ दोहा जेत बहेत दिषादिषी लई
अमीइक आंक दगै तिरीछीदीठि अबके बीबीके नांक ८ नायकाको वेन सषी सों हे सषी जिन तेतब देषा
देषी लई जब एक आंक अमीकुई अरु अबबीबीके नांक की परे तरीछी दीठि कैं लगत है कहतां चला व
तिहै ८ कवित्त दोउनकों जब हेत दिषादिषी या तें अनेत अनंग जगे है जेइक आंक लई है अमी सम
आपनी ओर तें पीलपगै है दंपतिके मन दूरि परे विलु लाय गए दुष दहलगै है सो अबकी छिति री
छीनिहारत बिबीके नांकं सी होइ दगै है ८ दोहा नैकको ऊन जुदी करी हरषि जुदी उमनलाल उरुते बास गदीयो नही
वामनु रेकं मालन ८ प्रेमवर्णन प्रेम दोहा लालन तुम जोर रषिके माननादी कंती सो जब लग तो दासनार हीतब लो ऊ
नेक हीरा था जुदी करीनहीं सो तो बन आवेरे पैं अबकूं मालतें वासना छुटी है त ऊ उरुनै मालाको वासबट
तन है ८ पुनः सनायकसों हे लालउमनोहर रषिकेमाला दीवी है तिनकी वासना छुटी है न ऊनैकु ही जुदीक
रीनाहीं है अरुवाके उरुतें वासछुट्यो नाहीं है ८ कवित्त नेककूं नाहि जुदीकरी माधव याके परे सुषमो हिजुदी
है वाही कों हरषि तें होइ जुदी उमजांनत है इह चौनकुटी है फूलनि केरस बसो तिनके संगया विधकी अतिनेह जु 

97A

दीहै देषतिहैं फिरहीकि स्वाहसुवासबुरैहूंनमानबुरीहै ९ दोहा विहसिबुलाइविलोकियत औदलिया
रसक्रूम उनकपसीजतनहतकौ पितचूम्योमुकचूमि १० सषीकौवेंनसषीसौं हेसषीस्तनकौंविलोकिविहस
अरुबुलाइकेजोदोहस्नीतिनकोरसकीरुमकरतोचाहनातिनघलकसीनईं ज केस्तनकोमुकपियचूम्यो
तितहीचूम्यो १० कवित्त केऔलिहासबुलायविलोकउतेरसमांडिगरूपपीयोरे औदवियारसघूमितलो
चननेतिअनेककटाछिकीयोहै होहरहीपुलकावलीओपपसीजतहीयरुजासदीयोहै स्तनकोआनन
चूमिनलीविधपीयकोद्रपिउमासलीयोरे १० दोहा देष्योअनदेष्याकियो अंगअंगसबेदिषाइ पैवतिसी
तनमैंसुङ्कवि वैठीविलैलजाइ ११ चेष्टा नायककौवेंनसषीसौं हेसषीआतुराधिकाचितकेविषेउजाइ
मांनकैकेअरुतनमैंलोसीपरसंकुचिपैवानिकैबेवीसोमेरतोईअंगप्रतिअंगसबकोदिषाइकेदेष्योअनदे
ष्योसोकियो ११ कवित्त देष्योसबेअनदेष्योकीयोकहुनेतिअनेकअमेवनिअैवी आपनेसिरआप
नेतेअंगअंगदिषाइघरीअषीयोन अमैवी वारहीवारविचारविचारकस्योफुनिवारीकेदेहसंकोचमी
पैठीवावरीहोइगईनरहीसुधिआपनेचितलजाइकेवैठी ११ दोहा पटुपांषेनषुकांकरे सपरपरेईसं
ग सुषीपरेवाजुहविमें एकैतुहीविहंग १२ प्रस्तावीक कविविहारीदासकरहुरै रेपारेवापटुवस्त्रतोपां
षाहै औरत्नषकेकोकांकराहै औरसपरषकीपरेवीसाथिहै तातेयाजुहविकेविषेविहंगमैंएकहीतुसुषी
है १२ कवित्त आपनीपांषवेईपटसुंदरकांकरएरपकायपुषीहै संगपरेईरहेसुपरैअतियाहीतेझी
वनरंचडपीहै सेतवनाइदीयोहेविरंचनऔरअनेकनमांझिसुषीहै जानतिहारेयारेवाविहंगमत्रे

बिहारी स
१८६
96

केरंहीउरवीमेसुषीहै १२ दोहा औरेपरेषौकोकरे उहीविलोकिविचार किहिनरकिहिसरराषीये षरै
वढेपरिवार १२ प्रस्तावीक कविविहारीरामकहतुहै औरइंहोविचारकैदेषकि याकोपरेषोकोइक
रिसकेजोषरैयपरिवारकरिके वढेतोकिहिनोतिनरकौंअरुकिहिलोंतिसरकोंराषीये १३ कवित्त को
नेकरेकोंपरेषोऔरेसुनिकोउसेनासिकैंनऔरते दषिविचारिइंहीआपनेमननेकरहेनउपाइक
रेतें लोननेहोनरऔसरएकहिराषीये याचिह्निलौ कटेरेते कोहिसयोनपकोमनआवतअंतषरे
परयारपरेते १३ दोहा चाहनरीअतिरसनरी विरहनरीसबवात कोरसंदेसदुहूनके चलेपौरिलोंः
जाइंत १४ प्रस्तावीकवासविरह सषीकोवेदनसषीसों हसषीनायकपौरितोईजाएतवनकचाहते
नरी अतिरसतेनरीअरुविरहतेनरीजोवाततिनकेकोरिकसंदेसदुहूनकेंआवलजातघरीनघरी
है पौरिलोंजातप्रमानरसोनहीयाविधकीवकबुद्धिहरीहै १४ दोहा सुनिपगध्वनिचितईइते न्हातिं
दीयेहीपीठ चकीझुकीसकुचीडरी हसीलजीलीसीदीठि १५ कविकिं तेहाव सषीकोवेनसषीसों है
सषी राधिकाश्रवी नईन्हातिहुतीसोनायककेपगनुकीध्वनिसुनिकेंइतनेवानिकोन्हे चकी
औरझुकीकहतांषीजीअरुसकुचीनीओरडरीअहनीहसीओरलजीलीसीऔषिकरीहै १५ कवित्त
आपनेकोनेसुनीपगकीध्वनिदेषिइतेजोयसंकधरीहै न्हातिहीपीठदीयेसुनिसुंदरिबोलवे
लेअरुलायटरीहै आपनेजीयचकीऔझुकीकहुऔरषरीसकुचायडरीहै औननरोसलरीइ
तरातसीनेकलजीलीसीदीठिकरीहै १५ दोहा लोकमोरिनाहीकहै नारिनिहोरेलेइ छुवतिओंचवि
×चले १४ चाहअनेकनरीआपनेचितऔरनरीरसवातिषरीहै गातअसेषवियोगनरेअतिकारअनेकअमंगधरीहै कोरहीकोरसंदेसदुहूनके × रुटमी

चिः

१

१८६

१३५ पत्रांगरितु बीरीबदनप्योदइ १६ चेष्टा सषीकोवेनसषीसों हेसंपीत्उरत्नारकसरीत्र्रांगुरीनसों
त्रियाकेत्र्योवयुइदैवदनकेविषेवीरीदईहे सोनाकमोरिकेनांहीकरतिहे त्र्यरुनिहारेतुंलेतहे
१६ कवित्त नांकमरोरिकेनांहिकरैत्र्यरुनैननवाइसंकोचमईहे नारित्र्यनेकनिहारनितेतषरे
हीयमेंहेतसचेतनईहे त्र्योवबुयेबलसोंवीयत्र्रंगुरीत्र्यापनीकोहत्र्योमेकलईहे सोहत्र्यनेककी
येजवपीतमत्र्यानननमेंबीयरीज्युदईहे १६ दोहा गिरकंपकबुरहे करपसीज्युलपटाइ लियोजु
मुंगिगुलबुन्नरि बुरातमुनीकेजाइ १७ सात्विकनाव सषीकोवेनसषीसों हेसषीकोंहिकतोकं
पनेतेगिरजातहै त्र्यारकोंहिकनोरहेहे सोकरकेपसीजनेतेलपटाइजातिहै सोराधिकागुलाल
तेमूंठिनरिलीयोहेपेबूटतेफूटीकेजातिहै १७ कवित्त कंपनयेतेकबुकगिरयोत्र्योकबुकरह्यो
त्र्यतिरंगारयोहे पानिपसोजननतेलपट्योकबुसात्विकनावनिनीयगयोहे नोतिरुलीसवि
लासविलेंउतषेलनफागुगुलालरहयोहे तारलत्र्याननपीतमकेफुनिमूविबुटीतबफूटिनयो
हे १७ दोहा देषतकबुकोतगइते देषोनेकनिहार ककोइकटकटिरही टरियात्र्रंगुरिफार १८
साष्यातदर्सन सषीकोवेननायकसों होकान्हजूउमंकनेककनिजरकरिकेदेष्योत्र्यरुमंतोइलकों
तुककबककदेषनतहांकबटीकीत्र्यांगुरीसोंटटीफारिकेएकेटककियेनटिकहतोदेषरहीहे १८ कं
देषतिहेजूइतेकबकोतकत्र्यापनेत्र्याननमोनगरीहे नेकनिहारकेदेषोनईविधनायकसोंत्र्यति
नेहनईहे केतीयविरिलगाइटगीटुकवाहीकेजीयउमंगलहीहे घूंघटमेत्र्रंषियांनटिकेटटीयां
त्र्रंगुरीनसोंफारिरहीहे १८ दोहा करलेचूमचढाइसिर उरलगाइनुजनेटि लहिपातीपियकी

लिषिति बांचत धरत समेटि १९ प्रेमगर्विता सषीको वेन सषीसों हे सषी नरनार की लिषी पत्री अपने
कर लै कै चूमी सिर चढाई उर सौं लगाई नु जतौं नेरी बांची और समेटि धरति है १९ कवित्त आपने हाथ
लै चूमि फूलि मन मैं सकुचाइ कै नैनन नरि है नैंक निहारि कै छाती लगावत नेरि सुजानि लियो गहरे है
पीतम की लहि पाती अचानक वार ही वार स्वैरि कै करे है लै लै उसासन ठेष अरु बांचति के मनु नारस मा
मेटि धरे है १९ दोहा बकी जकी सी ह्वै रही बूझे बोलति नीठि कहूं डीठि लगी लगी कै काहू की डीठि
२० आषिदसा सषीको वैन नायक सौं हो कांन्ह राधिका की कहूं तांच कित मोन और जकी कहूं तांवी
सी ऐसी सी ह्वै रही है बूझै तें नीठि बोलत है सोमे रे जांने तो कहूं निजर लागी है कै
और काहू की निजर लागी है २० कवित्त होइ रही है चकी सी जकी अति और बकाम नयेम पगी है बो
लति बोलत नीठ कहा कहुं जोनन तहूं लीयका झावगी है लागी है डीठि कहूं जे धरे धरको प्रमनो पमढ़
रि लगी है ढीक कछु गहरायरही ऐन हि ईठन काहू की डीठि लगी है २० दोहा लावर मन लावर नरी क
री का रिबक वादु अपनी रसनीति कौ छूटैन सहज सवादु २१ अधीरा श्री राधाजू को वैन सषी सौं
हो कान्ह और को झूठे चीकौ रिहै कहु वकवाद करो सो लावर कहतां नेनी सो नाकरि कै नरो लावा अन
लावर कहतो बुरी सो नाकरि कै नरो पैंजो अपनी रसनीति को सहज सुवादु है सो छूटत नाही है २१
कवित्त लावर जो अन लावरको झूठ नरो करि हिहि तन काम जुटे हैं कान्ह को कोरि करो बकवाद विरं
चि वनावन नेक हु कै है याको सुभावपरो अपने संग सो नहीं टेन षपायो जुटे है आपनी रसनीति
सहित जको स्वेन नाहि सवाद छूटे है २१ दोहा इस्त्यो पर समीप को लेत मांन [illegible] मन मोद होत

उक्तनकेछिनतही वतरसहावविनोद २२ विलासहाव सषीकोवेंन सषीसों हे सषीइनकेसमीप
कौ वांनकषबेरमनुषतिनमेंश्रृंगारेकहतालग्यौहै तातेमनहीतेमोदमांनलेकेदोनांकेनेत्रहीतेरसीलीवाते
औरहास्यविनोदकेरह्यौहै २२ कवित्त हरोषरोईसमीपकोनेरहस्यौईहस्योकैचिठ्ठकोदै दोऊउमंग
नेरविलसेंअतिमानहीतेतपनेमनमोदै नेकऊटारेटरेनहीदंपतिनिरेनदिवाओरयोअहनोदै हो॰
तैनेनकेनेनहीमेंवतीयांरसओकलहासविनोदै २२ दोहा मुषिउघारपिउललमि रहत गह्यौनसो मि
मिसैन फुरकैउठउठैपुलकि गए उघरिजुरेनेने २३ सहजैमांनमोचनं सषीकोवेंन सषीसों हेस
षीश्रीराधिकाकोमुषउघारिकेदेषतेहै सोराधिकासोंकृस्नकेमिसरह्योगयोनही औठलोफुरकने
लागेहे औरपुलककौआवनेलागी औरनेननउघरकेजुरगएहे पुनःराधिकाकोमुष नरनारउघार
केउबिरहेतवराधीजूकेआवफुरकेअरुपुलकेउठी सोरहसौयोनही तबमेंनकेमिसिनेनहीउघर
केजुरगए २३ कवित्त पीतमआइउघारिकेआंननजोंताचांनकहेरिरहेहै नेकरह्योनगयोमिसिसे
नलषसबअंगनचिह्नगहेहै औषरफुरकेपुलकावलगातउठीदहनोतिलहेहै नेनजुरेतेंगए
उघरेकबुआपसमेंअनुरागचहेहै २३ दोहा पियमनसचि[illegible]कवित तनुरुचिहोउसिंगार लो
षकरेआंणनवटे वदेवढायेवार २४ सषीकोवेंननायकासों सषीसिष्या हेराधेइनलालकोमनुरु
चि[illegible]करनोकठनुहै तावेजोलोलनकेरुचेसोश्रृंगारकरो औरलोषकविचा
रकरो पेंआंषिवढेनही अरुमोटोवढायेतेवढे २४ कवित्त पीतमकेमनकीरुचि[illegible]होइवोहै
परकोइहपाठप॰हेहै अंगनकीरुचिहोइसिंगारतनूषननोतिन्हनेकमदै लोषकरोईपीयांनवढे

कहुयाकौवनावविरचिगहेहै माधनकौतिज्ञनेकवनावतसुंदरस्वारवहायेवहैहै २४ दोहा मनमोहनसुंमोहक
रि रूंघनस्यामसंनारि कुंजविहारीसौंविहर गिरधारीउरधारि २५ अर्थ जनने कविविहारीदासकहतुहै रेनरजो
तेरमोहकीयोचाहीयेतोश्रीमनमोहनसौंकरिवेमोहिजांनतहे औरजोतूंमनसानाचाहतहैतोघनस्यामकें र
संनारिवेउमंनारतुहे औरजोतूंविचारयाचाहतहै तोकुंजविहारीसौंविहरिवेउविचारिजानतहे औरजो
तूंउरकेविषैधारयौचाहतुहैतौगिरधारीकोंधारिवेउधारिजांनतुहे २५ कवित्त मोहकरोमनमोहनसोंआ
निजीनरहौप्रभुकेगुनजानो रूंघनस्यामसंनारिहारीघरीश्रीव्रजराजकुमार मनचाषो कुंजविहारीना
सोंविहरोरतिसुतजानेविचारनजानो कैसहीकेसहाजांनोरहौगिरधारकोउरमैधरराषो २५ दोहा मे
मिसिहोंसोयोमयुक मुकुचूम्योहगिजाइ हस्योविसानीगलुगह्यो रहीगरेलपटाइ २६ [illegible] रस नायक
कोवैनसषीसौं हसषीमैंतोहांसोमिसजांनकैराधाकेढिगजाइकैमुकुचूम्योआरहमौसौं [illegible] जानीसीकैगरे
परेकीपरेमैरगलैलेलपटाइहीरही २६ कवित्त सोइरहोपियसहोकरिवाणमयौंसमुकैलैकुंजा [illegible] कहीहै वा
ढिगजाइजनीचिबुकआननचूमिचितैनहीवालकहीहै हेरहस्योअतिआतुरहोइपियानीनईकरयौवगही
है कैरसवानकीयोपरिरंजनजावगरैलपटाइरहीहै २६ दोहा नीचिरउविवैविहै कोपारीवरस्नान दो
उनीरहरेरवरे गरैलागिगिरजात २६ सुरतांत सषीकोवैनसषीसौं हेसषीदोउजरतारअनेनीपर
भातिकैसमैनीठरमैउठकैबेठतहे औरघरेसेनीरकेहरेगरेलागिकैगिरजातहै २६ कवित्त जामिनी
व्यारकुंजाभलगेअतिआपसमैहियरानचीरहे नीठहीनीढिषरेउविवैठतलौरह्योअरसमीवारहै कै
रतितिरंगअनेतपीयापिउदोनुंजनेढिगनीरहरेहै घूंमिरहेचकैचिमनोजवलागिगिरेपडकोनगिरहै

२६ दोहा तनकहू बनसवारती कोंनवातपरिजाइ पतिमुषरतिआरंनकी नहिकूवीयेमिवाइ २७
मोनमोचन सषीकोवेननायकासों हेराधकेंनहीवातमेंधोरोमोकूवपरिजाइतोसवाकह्योहेनही
एनाहैपेयापतिकेमुषतेंआंनिआस्त्रीकीरतिके रीकूवीकेतोऊमिवासपावेनही एसोचमोनेनही
२७ कवित्त घोरीयेकूठिघनीनसवारिहिजागतिजीयउवारगईहे जोंनतनांदिनकोंनउंवातन
येंपरिजाइसरोसमईहे तीयकेआंननकीरतिरंगकरीजुआरंनतिदांननईहे वातकहाकहीयेसा
जनीसुनिनोंहिनकूवमिवासनईहे २७ दोहा नहीअन्हाइनहिजाइघर चितचक्योलषितीरप
रसिकुरहरीलाकिरति विहसतिअरतिननीर २८ चेष्टा सषीकोवेनमषीसों हेसषी[illegible]तोअकाति
हेअरुघरनांहीजातहे तलावकीतीरकेविषेदेषिकेचितलाग्योहे सोनीरकुंपरसकेंकुरहरी[illegible]पावीकिरतुहे
अरुहसतहेधनतिनरे २८ कवित्त नांदिकान्हाइनहीघरजाइसोदेषिपरीहीयरानहसेहे कुंजनिहारतही
चिकह्योचितकुंजनमेंविलसेहे वापरसेचकरीलोंफिरेअकुलायत्रेसेहे वावरीज्योंविहसेविनरीविन
ऊऊउसासननीरधसेहे २८ दोहा सटपटातसेससिमुषी मुषघुंघटपटढांकि पावकझरसीझमकिके गई
झोझकाझांकि २९ प्रलापदसा नायकसषीसोंवूझ्योसोसषीकोवेंमनायकासों हेराधेकोंन्हेमेरेतांईवूझ्योकि
ससिमुषीमीसटपटातिमुषपटकेघुंघटसोंढांकिअरुमेहकीपावककीनांईझीझमकिकेंअरुझरोफकासोंझां
किकेंगईसोकोंनकुती २९ कवित्त आंननचंदसमानविराजतआपदरीसटपटनईहे घुंघटकेपटसोंढकिआं
ननआपनेजीजीमेंकोचमईहे पावककीझरसीझमकेकरिदेहदिषाइकेमोंननईहे झायगवाषनिमांफिरु

*कुंजन



उसातेकुरही×

टीका
१३९
101

वेलीनलीविषऔफषकोंबिगईहै १९ दोहा वारोंलोबलिडिगनुपरि अलिषंजनम्रगमीन आधीदीनी
तोनजिहिकीएलालनआधीन २० स्वाधीनपतिका सषीकौंवैननायकासौं हेराधेबलिजाउंतेरेनैनऔपरि
अलिअरुषंजनअरुम्रगअरुमीनएकबारेबारदेषु मोकोंकहतहेजिनकीआधीडीठिदेषनैतेंलालजूकौंवश
किरलीयेहे २० कवित्त तेरेविलोचनरूपरिहे सषीकुंबलिजाउंसुधालोपीयेहे षंजनऔअलिमीन
म्रगरुहेरतिवारहीमारदीयेहै औरसुनैहीहिरनीडिगकोंइनकीउपमाकहिवेलीयेहे आधिकनीवि
विलोनवितेजिनलालषरेईआधीनकीयेहै २० दोहा पेमअमोलअतुलनहो मुकुबोलैअनषाइ चित
उनकीमूरतिवसी चितवनिमांहिलषाइ २१ षंडिता लक्षिता नायकाकौंवेननायकसौं होकान्हऔ
ममेरेदेषतेवासोमुकुकरिकेअनषाइबोलैतौकहायेज्ञाअहोलषेमहमोतुलैनाही सोकेमैंजानियत
हैकि उनकीमूरतितुमारेचितमेवसीहै चितवनिमैंवसीहै। सोचितवनिमैंलषाइजातहै २१ कवित्त पेम
अमोलअतुलैनहोरचकयाविषकेअनुरागभईहै बोलतिहैअनषाइकेआनननारिनईनकीरीतिनईहै मू
रतिआइवसीउनकीचितआंगनमेप्रतिबिंबनईहै कायमनोवचिजीयअमो[illegible]नोकनमांकिलषा
ईदईहै २२ दोहा समैपलटैपलटेप्रकृति कौननतजैनिजचाल नोअमकरकरुनाक[illegible]इहिकृतकालि
काल २२ कविविहारीदासकहतहैं रेज्ञौसमैजबपलटैंतबप्रकृतिनीपलटिजातुहैं औरअपनीचा
लकौतजैनही जोकरुनाकररोम्रानगदोनईहिकृतकलिकालकेविषेअकरननयो तोऔरकी
कहाचलीहै २२ कवित्तं जाकौजबसमयोपलटैतबवाकीसबैप्रकृतीपलटैहै कौननतजैनिजचाल १३९

नर१

लगी संग ताही कौं बार ही बार अटै है सो अक कहूं न करी कर नाउ मयाविधि बुद्धि वितर्क रहै है सो मैं कहत है
घरो कलिकाल ऊ धारत रावरो मांन घटै है ॥ १२ दोहा ॥ बुद्धि अनुमानं श्रुति किएनी बढ़ है राइ लखि मति परख
सकी अलख ... लखी न हि जाइ ॥ १२ ॥ लकिजनं कवि विहारी दास कहतु है मैं अपनी बुधि कै अनुमान कर
अरु शास्त्र कै परमांन करि नीके सबै राइ की ए है जो का ऊपर ब्रह्म है तिन की गति जो अलख है ताही सों लखि जा
त है नांही है ॥ १२ ॥ कवित्त ॥ आपनी २ बुधिन के अनुमान सबै कोऊ बात कहे है ॥ और प्रमान हू है श्रुति के अरथे
ह सुरांनन कौं ले बहै है याविधि नीकि कबहू रात विचार कीये मन मांन गहै है बीन ष... ति आप र ब्रह्म की
लखि मतां ईलखे लेरहे है ॥ १३ ॥ दोहा ॥ बिसे मांन अपराध कूं चलि गव है अचैन ॥ सुरति दीवि तजि रिस खिसी
ह से हु ऊन के नैन ॥ १४ ॥ सहजै मांन मोचन सखी कौ बैन सखी सौं ॥ हे सखी आज ए दोनु ऐसो जान्यो कि जो अप
राध की जे है तो मांन षिच त है अरु जब मांन चलै तब अचैन बढ़े है सो आपनी रिस अनै खिसी बांहि कै
दोनो के नैन हस पर हे ॥ १४ ॥ कवित्त ॥ मांन षि चै अपराध-त यें अति आपस मांझ सरोस वहै है ॥ और सुनो च
लि गे है अचैन वडै अपने घर तैं निकसै है रीस खिसी दोउ बांहि दई सब ही बि सुरी जोय मैलि कसै है मांनन
ज्यां अपने हिय मैं हे रत नैक दुहून के नैन हसे है ॥ १४ ॥ दोहा ॥ रूप सुधा आसव छक्यो आसव पीयत बे
नैन ॥ प्यारे ओठ प्रिया वदन रहे लगायें नैन ॥ १५ ॥ साक्षात दर्शनं सखी कौ बैन सखी सौं ॥ हे सखी नाइका के
अमृत रूप आसव वदन के रूप सौं तिन सौं ओठ रूपी प्याले के नैन लाइ कै छकि रहे है सो अ नै आसव
पीये तै बनत नांही है ॥ १५ ॥ कवित्त ॥ रूपसुधासुचि आसव सौं छकि आपने जीय वितर्क गह्यो है ॥ आसव पीव
त नांहि बनै अब बातन कौ अनुराग लह्यो है ॥ प्याले लगे अति ओठ मनोहर से अंग अनंग सुवास बस्यो है ॥

बिहारी टी०
१४०
102

आपने जीयकी प्यारी के आंनन पीतम नेंन लगाइ रह्यो है २५ दोहा योंदलमलियतु निरदई दई कुसुम से गात कर धरदेषौ धरधरा उरतें अजों न जात २६ सुरतांत सषी कों वेंन नायक सौं हो कान्ह निरदई या कों यों दलि मलियतु है याको तो दई ने कुसुम सार सो गात बनायो सो तुम लंक कर धर कै देषो या के उर तें अजों ही धरधराटी जाति न ही है २६ कवित्त योंदलि के मलीयसु मिलाल ने या बिधि कों डब दहद्यो है तो हि न बोहे दया बितु नायक वाही ने पीर सम्हरलयो है फूल से गात षरी सुकुमार कबन मैं नार उमासस तयो है देषो अबे कर कों धरि कैं उर कों अजहूं धरकों न गयो हैं २६ दोहा कितीन गोकुल कुलवधू काहि निकिहि सिषि दीन कौंने तजो न कुल गली कै मुरली सुर लीन २७ सषी कों वेंन नायका सौं हे राधे मैं कहती हो कि मुरली के सुर तें लीन कैके कौंने आपुनो कुल को मारग तज्यो नो ही है ए सगली न त्यो और कि नहीं का हू को सीषदी ही न कैरे ए दीनी है गोकुल के विषै केती कुल की स्त्री नो ही ही ए ही ए सावतन रही हैं २७ कवित्त गोकुल में कुलती न किती कनिरूपर ही नहीं नेह नये तें का हि न दी सिष रं कहि भामिनि कों नन कों सजि संग गये ते कौंने गली कुल की न तजी अमनाजे उबाय दये ते गेहपती सुलबोंहि चली स गरे मुरली सुरली न नये तें २७ दोहा ललित वचन अध षुलित दृग ललित स्वेद कन जोति अरुन वदन छवि मदन .. द छकी षरी छबीली होति २८ सुरतांत सषी कों वेंन सषी सौं हे सषी राधिका के मुषमें ललित जो बैंन निसरतु है और अध षुले नेत्र है और स्वेद के कन सो मनोहर जोति करि रहे हैं और बदन की अरुन छवि है और मदन करि छकी है सो षरी ही छबीली कै रही है २८ कवि- १३४

किसान ४

बोलत वैन षरे षल लैसें मन आषी भुली हग रूप रई है स्वेद के बुंदन ज्यों तिल से अति सुंदर सो न
नई उनई ये लोल छबी मुष को मकरी सुधरी बिथुरी अलि के जु छई है देषत ही बलि कितो नंद नंदन
या बिधि नारि बिबोली लौ गई है ३८ दोहा बहकि न इह बहिनापुली जब तब बीर बिनासु बचै न व
धी सबी लहू चील्ह यों स्सलामाषु ३९ सषी सिष्या सषी को बैन नायका सौं इ राधे रबहकि मत
न जब तें इह बहिनाकह तो मारग के विषै भुली कहतो चालौ तब ही तें बीर विनास है सो कैसी
परेकि बहो ही सबी लक हतो जतन की ये जू चील्ह के घोसला में मासु बचै न ही त्यों नव चै है ३९
कवित्त रे बहिके जिन एब हिनाउ निजा के मेलाप ते जीव रचै है हा इह गो बीर बिना सब रोजब ही
तब ही हियहरि लचै है केती बहीये सबी लके आपने के उपचार अनेक पचै है आपने विचावि
चार रन चील्ह के घे सुबामांस बचै है ३९ दोहा नहि रति सुष लगियतु हियै लषी लजों ही नी
वि भुलित तन मो मन न भुलि रही यहै अध भुली दीवि ४० हर्षानुराग नायक को बैन सषी सों
हे सषी अध भुली दीवि की ये लजों ही सी रति को सुष लहि कै हीया कै लागति है सो नी वि सी जो नी
परत है सो ना बहि विपे रमन कै विषै भुलि रही है ४० कवित्त पाइ कै सुंदर पीतम सों रति को सुष
राति ही थै लगि कारी नीबिन जों ही लषी अरसोन सी नेक नई मुसकात महारी छूटति नाहि
रही बंधि मो मन नेह जरी सरसात निहारी कंज न कारी अन्यारी दरारी सी आधि भुली बरही बि
निहारी ४० दोहा की यो सयानी सषिन सों न हिसयान बहि नू लि डरै डराई फूल लौं को पि
य आगम फूल ४१ बासकसज्जा सषी को बैन सषी सों सषी सयानी राधा नै आपनी बहिन

बिहारी टी.
१४१
103

लवैहेउमषिनसोंसयांन नीकस्यो हैपैनरनारकैआवनतेंतनकेविषेफूलोनीहैसोफूलसोंइराषेकोंकरिइ
रेहै अथ कवित्त हेसजनीवहकावतिहैकतनेहकेफूलनेतोजीयफूले सोंतिन्हनेकदियेसु [illegible]
[illegible]ते यांनपराघरेहैनहींज्योंलइयुन्हले कीनोसयांनोसषीनकूंआपतेंसोंनसयानसवेवहत्तलै केसेइ
राइडुरैसवजोनतफूलंल्लोपीतमआगमफूलै अथ दोहा आयोमीतविदेसतें काहूंकह्योपुकार सुनिकु
लमीविकसीहंसी देउंडकुंनविहार अथ सुदिता सषीकोवेनसषीसों हेसषीकाहूस्त्रीनेसनुकारिक
रकेकह्यतिहैकि तेरोमीतविदेसतेंआयोहै सोसुनिऊरूदोउंअंचडकुनिनेत्रतेंनिहारकैफुलसीअरुवि
कसीअरुहंसी पुनः काहूपुकारकैकह्योसोसुनिकेहीयामेंकुंसआंनिकैकूचनतेंविकसीऊचुनकोंनिह
रकैदोनूंअंषीयोंहसीसोकंपुकिउमचिकसीहेसोपाहिलेंतोमोमेमिलेगी अथ कवित्त आयोहेमीतविदेस
तेंवाककुंताबिनअंगसवैउलसेहैं काहूपुकारिकह्योकोउनारिसोंनोमनिसोंनश्रतिछकहेहैं सोसुनि
आपपरीकुंलसीविहसीरतिरंगअनंतचहेहैं नेहतेंम्याकुलनेनमिलेकुनिदेउंडकुंनविहाररहेहैं अथ
दोहा जद्दपिसुंदरसुघरपुनि सगुनोदीपकदेह तउप्रकासकरैतितो भरीयेजितोसनेह अथ वा
सकसज्जा सषीकोवेनसषीसों हेसषीजोपनसुंदरहैसुघरहैऔरसगुनहैदीवासीदेहसीकीज्योति
हैतकतितनोसरीरकोप्रकासपनोकरतिहैजितनोमनेहसोंनरहेहै अथ कवित्त रूपसौंसुंदरहैसुघरै
फुनिजद्यपिदेषतहीमनहरैहै हसुगुनोसुन्दरलछनदीपकदेहलषेतमनोमटरैहै याकोसुभावकोयावि
धुनोजगआमसकेकोमअनेकसरैहै सोतोसनेहजबेभरीयेतऊतेतोनिदानप्रकासकरैहै अथ दो १३९
पलनुप्रगटवरुनीवढिनहिंकपोलठहरातिअसुवापरिवतीयांबिनकुबिनबनाइछिपजाति

अथ प्रोषितपतिका ग्रामांतरविरह सखीकौ वचन नायकसौं हे कान्ह राधिका के पलनु तैं परगट है कै आं
रू बरनी तें बहि कै और कपोल परि ठहरस कै न रही सो अंसुवा बतीयां ऊपर आनि कै बनबनात है । कु
बिप जात है ५४ कवित्त नैननके पलतें प्रगट है कु निकी तर और तें बाहिर औरे है आंहु बरुनी [illegible] कै कु
परि नैं क कपोलन ही ठहरै है आंसु वियोग के दुष्प ते दीह अनेक षरे बतीयां न परै है ताहि सपे इह आं
सुअन [illegible] तें बीन बिनै कनमें उपजै है ५४ दोहा किरि सुधि दै सुधि याइ ज्यौ इह निरदई निरास न
ई नई बक्रस्यौं दई दई उसास उसास ५५ जन्हताद सो सखी कौ वचन सखी सौं हे सखी तें इनकौ प्यौ कौं सु
धि दै के सुसा[illegible] वचेत करी दिराइ ऐसे इन निरदई निरास नैं याकौ उसास उरकै साथ बक्रस्यौ नई नई सी व्या
धि दई है ५५ कवित्त हे सुखकारही वार अंसुवान कपीत [illegible]म की सुधि हाइ लई है याविधकी जु अनेक करी
इह निर्दय देष निरास नई है फेरन ई बक्रस्यौ जु दई सु निआप नै जीय विमा मगई है इह मेड प्पदसाद
र मीन बदी ह उसास अलेक दई है ५५ दोहा ज्यों करस्यो चकुटी चलति ज्यौं चेटकी स्यो नारि बचिसौं
गतिसी लेचलति चातुरका तनुहारि ५८ चेष्टा नायक कौ वचन सखी सौं हे सखी या चतुर[illegible]का तनुहारि
तिनके ज्यौं हाथ चातुर तेहैं सो कुकरी ही चालति है और ज्यौं चकुटी चालति है सो नारि ही चालति है सो व
बिमोंगति लीये चालति है ५८ कवित्त ज्यों करत्यो चिकुटी नेचल नावतताइ रवके ओप[illegible] नारी ज्यौ कि x व म
कुटी तिहै नाचि ले अति मारि नई नकी नारि निहारी हे लबबी[illegible]बरी बिव मोंगति सी चलि ले लैम
नोहर हारी नैन नचावत बांह दुलावत सुंदर चातुरका तिन हारी ५६ दोहा पाय्यो सो मसुहाग कौ इ
त बिन ही पियनेह उनदे [illegible] नपतिका सखी कौ वचन स

षीसों हे सषी इन राधिका विनही नरतार सों नेह सुहाग कौ सौ रपा स्यो है सो कैसे कि नायक का के अलसों ही देह कर नैन तें
नायक कौ दोनु ही अंषीयां करि कै देषी सो चितचढी ४७ दोहा देषे वनै न देषिते अनदेषे अकुलाय इन दुषि
यां अंषीयान कौं सुषु सिरज्यो ई नाहि ४८ चिता दसा नायक को वैन सषी सौं हे सषी इन मेरी दुषहारी अं
षियां कुं सुष सिरज्यो नांही है सो कैसे कि जो देषी ये तो देषे वनत नाही है अरु विना देषे ते अकुलावति है
४८ कवित्त हे सषी ए अंषीयान को या विधि कीइ न आंन चनी है नांहि न सुरक कहु सिरज्यो सव वात न आतु
रताई सनी है देषे तें देषि वनै नहीं सुंदरता को हिवार अनेक तनी है याको सुजा वेकसो न परै कहू देषे बि
ना अकुलान घनी है ४९ दोहा लगी अनलगी सी जु विधि करी षरी कटि षीनि कियेमनो वे ही कसरि कु
च नितंब अरु पीनि ४९ मुग्धा ष्यात यौवना सषी को वैन सषी सों हे सषी या की विधि ने ऐसी कटि षरी षी
नि करी है सो है लगी पै अनलगी सी जानियतु है और मनो उनकी कसर लेकै कुच कौं अरु नितंब कौ
अति पीनि कीए है ४९ कवित्त लागीक हु अनलागी सी है अति सों चीक है मन न सो कही ये है छीन ष
री कटि आप करी कमलासन नसर्ग निसर्ग ही ये है वेई निकाल लई कसरें मनु वाहि वहै जु लगाइ दीये है
नाभि नीनू रुनि तेनन कौं अतिनि ओप पयोधर यों न कीये है ४९ दोहा छिन कुउघारति छि नुछुवति
राषति छिनकु छिपाइ सबदिन पिय षंडन अधर दरपनु देषति जाइ ५० चेष्टा सषी को वैन सषी सो हे स
षी राधा के नरतार नैं जो अधर षंडित कीये है सो छिनकु तो उघारति है अरु छिनकु छुवति है और छिनकु
में तो ढांकराषित है सो ऐसी परि सारो दिन आरसी लेकै देषति जाति है ५० कवित्त आपउघारति है छि
न ही छिनवार ही वारक लासनले है राषति है छिनकु मां कि छिपाय के रेचक नागमज्यों चितदे है 

104A

सुनोअपनेकरसोंवहआदरकैकैबिनकवैहै पीतमषंडितआवसवेदिनदर्पनलैकरदेषतनैंहै
दोहा मुकुरपषारिमुषलषिजै सीससजललैकरन्हाइ मोरउचैयंधेनतैनारिसरोवरन्हाइ पर सषीकौ
अनुत्तरनाइकसों होकांत्रपहिरैतैमुषपषारकैमुडलषिजोया औरकरसजलकरिकैसीसकोंन्हायो
अरुअबनारिघूटैतुऊंचेमारिकैसरोवरमेंन्हातिहै पर कवित्त आपपषारिलीविधिओनननसंगअने
कसमानअलीहै औरषरामुकुवारिनल्योफुनिसुदरआचषजोनरलनीहै सीससवैकरन्हाइलिजेत्र
तिमोरउचैहीयरांनदलीहै घुटेनुमनेअजलीनरिदहनुनारिसरोवरन्हाइचलीहै पर दोहा कौरिजतना
कोऊंकरो तनकीतपतिनजाइ ज्योंलोंनीजेचीरल्यो रहैनष्पोलपटाइ पर प्रोषितपतिका सषीकौवेनस
षीसों हैसषीजाकोरिहेकजतनकोऊकरिदेषो पियाकीतनकीतपतिजातिनहै सोजोलोंनीनाचीरकी
परैपोलपटाइरहैनहीतोलों पर कवित्त आपनेजीयकीवातकरोसुनिकायमनोवचदीहहरांनो
कोरिककोउजतनकरोअरुचोतिअनेवलैसाहसवोनो सोषकईइनकोतनतापमिटैनहींरंच
कहूसबजानो नीरनीजेअतिचीरलोंअंगनजोलोंरहैतनप्पोलपटानो पर दोहा औरमनऔरेचलै
न नयोवदनुरंगऔरु योंसकुतेपियचितचढ़ीकहैचढ़ोहैसौरु पर प्रेमगर्विता सषीकौवेननायका
सों हैराधेतेरीओरहीमतिनईहै औरुओरहीवदनकोरंगनयोहै सोकहिनहीएचढ़ोहैसंसोरुकि
येहै सोतोकोंतोदिनेकहीजुनेरतारकेचितचढीकोनयोहै पर कवित्त औरनईगतिओरसयांन
पअंगनईसबरीतिगहेहै आंननरंगनयोअबओरहीनेनवदीचतुराईचहेहै वेंननिन्नातिअने
मीलपीहमनोंहननेदअनंतलहैहैं योंसकतेपीयचित्तचढ़ीकहूल्योरचढैचिकुंओरकहैहै पर

नेहरी स
५८२
105

दोहा अंग अंग प्रतिबिंब परि दर्पन सौं सब गात दुहरे तिहरे चौहरे भूषन जाने जात ५४ अंग सोभा
सषी कौ वचन नायक सौं हो कान्ह राधा की सगरो अंग आरसी सार सो है सो अंग प्रति अंग के विषे प्रति
बिंब परे रह्यो है सो जो भूषन जो पहिर्यो है सो दोवरो तेवरो चौवरो जानि परतु है ५४ कवित्त अंग अंग में प्र
तिबिंब जु होइ परे मणि आनि परे है दर्पन से सब गात बिराजत देषत ही हियरा न हरे है संकर नहीं ये
बड़ी रहे मोंन सु आपने जीय वितर्क धरे है दोहरे और षरे तिहरे कर चौहरे भूषन जानि परे है ५४ दो०
रवि कौ रूषी परत सगमग गई सनेह मन मोहन छवि पर गरी कहे कपानी देह ५५ सुरत गोपिता स
षी कौ वचन नायका सुं हे राधे मेरे रवि तें क्यों रूषी परति है नायक श्री मनमोहन जू सौं नेह करि कै स
गबगही है सो छवि तो पर गरही कंपानी देह कहे देत है ५५ कवित्त रवि तिको सषी रूषी परे आहो
क्यों न कहे मन मोहन है है ने हररी सगबगा गई कुंनि जान न तजीय उवा ह चहे है तो मन मोहन की
अगरी छवि आनन ओप अनोप गहे है क्यों दुरि है चित चाह हरनी सुनि ऐरी कपानी सी देह कहे है
५५ दोहा नाह हुत्रास तिमुकुन दति आषिन सों लपटाति ऐंचि छुड़ावति कर रिझी आगे आवत
जाति ५६ चेष्टा सषी को वचन सषी सौं हे सषी राधिका नाह कर छिके दरावति है और मुकुत करि के
नटति है और आंषिन सों लपट जात है और ऐंची सों हाथ कों ऐंचि के छुड़ावति है पे आगे आव
त जात है ५६ कवित्त नाह ऐन में हसतीत्र मतीक हु बार अनेक न सों अन षे है आनन सुं नट जा
त छिनेक में आंषिन सों लपटाति सी ऐहै ऐचि के आपनो हाथ छुड़ावति नारि अनोंकन सों १३९
आनन है चाह न रही तु तरा चपला सम ऐचे ते आगे ही आवत जै है ५६ दोहा मोहि जुरी सी रीति है

103A

उझकि झांकि इकबार रूप रिझौ वनहार वह ऐंचे ना फिर बार ५७ अधीरा नायका कौ वैन नायक सें
हो कान्ह मेरे तांई इन तुम्हारे नेत्रां कौ नेरो सो ही है कि एक बार के उझकि झांकने तेरी छिब सो कौ वे
[illegible] उन स्त्री कौ रूप तो री झावनि वारो है अरु एउ तुम्हारे नेत्रां री
झनवारे है ५७ कवित्त मोहि नेरो सो पर्यो ई रहे सुनि री झकि है वे जीय आंनि अरे है झांपि नली विधि
रउझ कायके अकहीं बार कलाम न रहे रूप री झावनहार इहै कबु और सबै बेसुध भूल परे है तो हि निदान जितराकं
अब वैनन नंथ्यो री कबार परे है ५७ दोहा रूकेयो मां कैरेंकुं जमग करउझकि झिकरातु मंद मारतु तुरग हरतु आ
वतु जात ५८ बसंत वर्णन पूवनसो ना कवि विहारीदास कहत हैं मारत कहतो पवन तिन रूप तुरग सा
करकें जमें के मारग रूकेयो सबको झांकि कहतो सबद करतु है अरु कुकलावति है और मंद मंद सो शुरी कर
तो आवत जात है ५८ कवित्त मांकरेंकुं जनके मग मांझि रह्यौ रूकि आपते हो निहिरान्यो झांकि कैरेकु
करात घनो तक यार ही बार परो अकुलान्यो फेर कबू पऊ पद्यो रदपको फुनि के उझक झोर नवे वलवां
न्यो मंद ही मंद समीर तुरंग मधुर दतें आवत जान्यो ५८ दोहा जदपि लोगन रूते उझके देन पहिर इक आं
क सदा मे कवढ़िये रहे रहे चढ़ी मीनोक ५९ सखी की सिख्या सखी कौ वैन नायका सों है राधे यद्यपि ते
रे लांई यो लोगना क कै विषे पर्यो रहतु है तऊ इनको इक आंक रूप हिर मलिनो सो क्योंकि इनो नांक
चढ़ी मीर रहति है तातें नायक कौ सदा सांक चढ़ी सी रहतु है ५९ कवित्त यद्यपि लोग पसो लगि ते तऊ सु
दर मोहनी सो लगही है तो हि नैन पहिरे इक आंक नयाकी सबै कवरी तिलही है सं कसदा चढ़ी यें रहे ह्वै
तेतु केती यबार मैं तासुं कही है तातें अबे रज्यों सुनि सुंदर जानति ना क चढ़ी सी रहे है ५९ दोहा वरजे ह

नीरहिये है नोमें कुचैनमकार टूटतिकरिकुमकीमचकि लचकिश्वचिजाइ ६० सखीकीसिख्या सखीकोवे
ननायकासों हेराधेनेमेरवरजैहनीहिमिचहतहै नोमेंकुचितहै अरुनोमेंकातिहै पैयोंयाकटिचिबमो
लचकिजातीहै मोकुमखीकीमचकते टूटी जानतहै ६० कवित्त तोसुजवेवरजेकोकुसुंदरहनीवहेपेना
होमनलोहै नोमकुचैनसंकहढिनेकरीवारकसोसमकेहै टटिपरगीअरीकटिनोमिनकोमनकेकु
मचीअतिलेहै मैवरजोनधरैहोयेस्चकए लचकेरवहिजेहै ६० दोहा करसमेटिकचभुजउलहि
बयेसीसपटनारि काकोमनुबांधेनयह जूराबंधननारि ६१ चेष्टा नायकाकोवेन सखीसों हेसखी
यासीसतेपटुनारकेओरभुजउलटिकैओरकरसोकचसमेटिकैजोजूराकुंबधैकरतोओककेबंधतिहै
सोकाकोमनबांधतिनाहीहै सबकोबांधतहै ६१ कवित्त आपनपानसमेटिकुकचओरभु
जाउलटीकरिनारी सीसबयेपटनारिनलीविधिनेननवोइउवावलिनारी दर्पनलेकरिआननद
पतिसुंदरसानमबेउरधारी काकोनयामनबांधेअचूनककैजूरनबंधननारी ६१ दोहा लाल
लालबेंदीललनअरुतरहेति राजि इंदुकलाकुजमेधसी मनोराहनयलाजि ६२ बेंदीसोभा सखी
कोवेन सखीसो हेसखी लखानायकसोहोकोरलेउनकेलालकेबिबेलालबेंदीहैतिनकेबिबेअरु
तविराजतहै सोकैसेसोभतहैकि मनोराहकेनयलेनाजिके इंदुचंद्रमातिनकी [illegible] लाकुजमंगलके
विषधसीहे ६२ कवित्त लालनलालमेलालवनीबिंदुलीसुनसोरुमनोपर [illegible] नामहिस्रठित
राजितहेअतिहेरतहीहीयरानरसीहै तांहिबिलौविलोकसमं [illegible] मयोम [illegible] माविलसीहै
राहमतानयनाजिकनामसिकीमनोमंगलमोक्रिवसीहे ६२ दोहा अंगअंगछविकीलपटप

कम१
१३७



क

106A

रतिजातिअवेह षरीपातरीउतऊ लगेनरीसीदेह ६३ अंगसोभा सषीकोवेननायकसों होकेदे
राधिकाकेअंगकेविसेषरीदीपातरीहै तऊअंगकीबविताकीउपटअवेर [illegible] कहलोवारेओनु
तजातिहै तोसेनरीसीदेहलागतिहै ६३ कवित्त अंगअनंगनकीछविकी [illegible] विजीयअनंग
जगेहै जातअबेहषरीउपरीअरूहेरतिहीमनपेमवगेहै सुंदरजोतिसमूह [illegible] लिकेलिके
चपचौंधवगेहै पारुरीयहाविनारितऊसुनसोनन देहनरीसीलगेहै ६३ दोहा हगधिरकोहेअध
शुले देहवकोहेहार सुरलिसुषितसीदेषयुत डुबितगरजकेनार ६४ सषीकोवेनसषीसों हेसषी
अधशुलेनेत्रथिरकोहेसेहै ओरदेहकीवकोरीसीहारहे अरूजोसुरतिकेसमेसुषितदेषीहेसो ऽ
अबयागरजकेनारतेंडुबितहै ६४ कवित्त नेनषरेथिरकोहेशुलेअधओननओगुअबेहे ॥ ने ११
ईहे देहवकोईसीहारविराजतअंगअनंगतरंगवईहे होइरहीरतिरंगसुषीसमदेषतदेहउगाह
लईहे निचुलनेकहलेकबूडुबितगर्जकेनारनईहे ६४ दोहा बिहसतिसकुचितसीदिये कुचओ स्सारनग
चरविचिबांह नीजेपटतटकोंचली नारिसरोवरन्हाइ ६५ भलापदसों कानकोवेनसषीसों सो
सषीकोवेननायकासों हराधेकांदसेरेतांईदेषोकि बिहसतिसकुचतिसीकुचअनेअचरविचावे
बांहदीयेनारिसरोवरमेंन्हाइकेनीनेपटतटकोचलीसोनारीकोनहे ६५ कवित्त आपनेहीयहसंस
ऊवेअतिजानतकोऊवनीकोलनीहै वारहीवारदीयेसिसकारविराजतज्योंमनकेनकलीहै पीन
पयोधरअचेरमेंटपिओरमनोहरवांहनलीहै नीजेषरेपटनीरतेंसुंदरन्हाइसरोवरतीरचलीहै ६
५ दोहा सकेसताइनतमविरह निसिदिनसरससनेह रहेतिहैलागीहिगन दीपसिषासीदेह ६
६ माध्यातदरसन सषीकोवेनसषीसों हेसषीयानायककोविरहयोगरूपीतमुसेताइसकतना

हैसोकोंकि राति अरु दिन सरस नेकु है जो दीपसिखासी देह है तहां नेत्र लगे हीर हैं है ६६ कवित्त हे अलि गा
ढ बेरोडु बदाय कमार [illegible] नजीय तु मंगल ई है वाकुं संताप सकै न वियोग महा अंधियार सुरी तिन ई है
रैं न दिवा सर सात सनेह नहीं कछु भेद विसेष दई है नैन नु दीपसिखा सम जान तवाही कु देह सु लो
गि रही है ६६ दोहा विरह जरी लखि जीगननु कह्यौ न उहकै वार अरी आव भजि भीतरहि वरष
त आज अंगार ६७ प्रोषितपतिका सखी कौ वैन नायक सौं सुनायकै सखी सौं हे सखी वह राधा विरह तें
जरी जीगननु कूं लखि आगी यौ तिनकौं देखि के मोकूं के तीवार यौं कह्यौ न ही कि अरी आज के भीतर कौं आव
री आजु अंगार के वरषतु है ६७ कवित्त नायका आगि वियोग जरी लखि जीगन तिन आपने जीव लखे है वा
र अने के कस्यो न कुटी विन कारज बाहिर को वि[illegible]ल सै है भीतर लाजि के आव अरी नभ राति तिरीयो [illegible]
यो सरसै है मेटन कौं नव बाल रमहा नभ आज भरे अंगार वरसै है ६७ दोहा फिर घर कौं नूतन पथक च
ले चकित चित लागि फूल्यो देखि पलास वन समुही समुझि दवागि ६८ मुग्धा हाव सखी कौ वैन [illegible]
सखी सौं हे सखी नूतन पथक पलास वन कै विषे फूल्यौ देखि के चित मोच कित लै के दिवागनि सो मनी स
मुझि के घर कौं फिर जात है ६८ कवित्त नूतन पांथी वियोग तैं आकुल बौर रसाल लखे तुरफो है
नायरि कोकिल के रव कान सुनै अकुलाय घरो मुरस्यो है केरि चल्यो घर कुं चित लागि चकोर सो जो पा
सो थक्यो मुरस्यो है फूल्यो पलास न को वन देषत धाई दवागि री यो समुझ्यो है ६८ दोहा गदा[illegible] कदम की
नीर मैं रही वैठि दपीठ तउ [illegible] कपरि जाति इति स[illegible] जे हमोरी दीठि ६९ ऊढा नायका कौ वैन स
खी सौं हे सखी [illegible] कदम की नीर मैं गडी [illegible] की पीठ दे कै बैठ रही कतीलो [illegible] मोरी सी दीठि कै	१३९
पल कै कमेरी दिसि कौ परि जाति [illegible] ६९ कवित्त नीर मैं जाइ गडी है [illegible] कदम की नेहर माजीर

इ भरी है पीव रूपी ... तन मै बैविरही कुनि आपने हीय मै पीत ... रई है देषि सके न संकोच ते ... दर ... पवेद
... नायधरी है रोकी घनी तो कुनाहि टरी उत्ताज रह मोरी सोमी विपरी है २८ दोहा इसह ... मा ... मा ... नी
107 मसी है तन तिन नाह विचार धरे रूप गुन को गरब फिरे अबेह रउगार ७० रूपगर्विता म... न
सषी सो है सषी जाके इसह मो तिके मो हियामे मा ले है पे या तो नाह जो विचार की यो मोमन तिना हा है
मा का है ते कि जो रूप को गुने रता को गरब धारि कै अबे रउगाह मो फिरत है ७० जोन ति सो ति को सा
... री यक्ष ति इन्म र वाहि को पीर घरे है नाह वियोग नि ने नहीं रैव कमें गल दे लमे जाह हिरे है है
रे है ७० दोहा नांव सुनत तही कै गयो तनु और मन और दवे न ही चित चहर ही कहे चदा ए लोर ७१ म
ध म मां ज वरनन सषी को वेन नायक सो हो कोर इमारे मुकुते ओन स्त्री को नो व सुनत ही राधिका कौ
तन और ही नयो है अरु मन और ही नयो है और चदा एत्यों रा है कियो मोक हि रति है कि चित के विसे
चह रही है पे र बती नो ही है मो ह यो कि च है है त्यों रु कहे दे तरे ७१ कवित्त कोन अचान कनो मसु मो
जब जो यक्ष काम च छो अकू कोरे ओर ही कै गए दे ह सषी सुनि आन न ओ प नई मन ओरे कौ हो रवैन
ही को टिक ला क रि चित्त र ह्यो च कि सो कि रू ओरे मह विपायो विपे न ही नागरि बे च दाइ र ही क
हा सो रे ७१ दोह और सब हरषी हसति गावत नरी उगाह रे हि व क्कु वि लषी फिरे क्यों दवरके व्या
ह ७२ ऊ ल्ल दा मा सकौ वेन व रू सो दे व रू और सग ही ही हरषी है उगाह नरी गावत है अरू रूप
के नी ही दवर के व्याह मै विलषी क्यों फिरउ है ७२ कवित्त और सबे घर की जुवती हरषी मन हरि व
री विहसे है गावत गीत ... उजलन ... और हो ... सो वि ल मे रहे दवरू कौ विलषी जु फिरे सु

वि० टी० निउरक घनेरिन रैंनन सै है देव रम्यार न तो हिकरा नयो मेरी सौं क्यौं अकुलाय त्रसै है ७२ दोहा मिल
१४६ चलि भमि लिश्रु चलउत और गन आंथयो नानु नयो मुकुर तन और को पौरी ग्रघमम मिलो नु ७२ प्रवास
108 विरह सषी को वन सषी सौं हे सषी नायक को चालि श्रकै तै मिलनो और मिलि कै चालनो सो ऐसे जोर
कै चलउतै आंसु नदी मे नीनु आवन्यो सो प्रथम मिलन को मुकुर तन सो रही कोनयो ७३ कवित्त जो
लिनली मिलि कै जुव लै चलि कै वको स्यो मिलि जीउनयो है और षरे मिल कै पीउ चालत वार अनेक
उसास लयो है क्योंकु अघात न पे मनगे कबु सरिज आंगन मे अभयो है तौर कै हाय रसो हि मनहोरता
हर न यो उमिलन नयो है ७३ दोहा करलै संघ मराहि रहे सबै गहि मोन गांधी आंधु गुलाब को ग
वई गाहकु कोन ७४ अन्योक्त कवि विहारी दास कहतु है कि रे गांधी अंध सगंध ले ही करले ही करले
सुंघि सराह करि कै मौन करि कै रहे मोहन गवई विषै गुलाब के अतर कों ऐसे नवारो कोन है ७४ कवि
त संघि सराहि कै आपने हाथ नलौ विधलै सगरे जन न जो है मौन गहे ई रहे न कहे वर सहृदन के जु सिरो
मनि सो है अंध सुगंध कहू मम कै नहीं औरल षे न वपार नयो है जो नननों हिंगवार वसे इहगांव गुला
ब को गाहक को है ७४ दोहा तौ वलि हैं तलिये वनी नागर नंद किसोर जो तुम नीकी कै लषी मो कर
नी की ओर ७५ टलिजन कवि विहारी दास कहतु है कि हे श्री नंद किसोर नागर कुमारी वलिजाउं तो
मे सरलीसी वनी है ज्यौं मेरे करनी को दिमि कों तलीक रि कै तुम जानौगे तौ ७५ कवित्त तौ चलि हैं टलै
जे जुवनी अवपा विध की इहजो यजषे है नागर नंद किसोर सुनो तुम रावरे नैन पीयूष चषे है चंचल
होइ रही चपलाप मनारिन ई न बीरीतिन षे है जो तुम नीश्रकारि कै कबु मो सुकनीन की ओर लषे है क १३०
५ दोहा पचरंग रंग वेंदी [illegible]  चटक चौगुनी होति

सषीको सिंगारदेवो सषीकोवेंननायकासों हे राधे लरैपेचरंगकी वेंदी मुषके विषे दई है तातें लोषन
जोतिकुमिंक वीदै पैयों चितोवीचोरयाहिरैतो चोगुनो मी मुषकी चटक क्है है ७६ कवित्त वेंदी बरी पैंचरं
रंगी अतितिनालकैवीचिअनोपमदैहै कुनि उगीमुषजोति फिगी भगटेषतहीसुषपामत क्है है कामिनी चीरचितोवी
यामुंदर आपने अंगनरीपहिरै है लषननोति अनेकसुमिलिचोगुनीये है ७६ दोहा हमित वनविषिक
रुइचई कियेनिचोहेनेंन षरेअरेपियके पिया लगी वैरी मुषदेन ७७ चेष्टा सषीकोवेंनसषीसों हे सषी
नायक ने हसिकै करविचिनायकाके उवको अैचेसो नायकानिचोहे सनेंन षरेसअरेतब पियके मुष
पिया वीरी देंन लागी ७७ कवित्त जोवनवी विहसीअतिलाजते अंगअनेंगतरंगनमीरे मोनधरे अरुपा
पिया वीरी देंनलागी ७७ कवित्त ओवनवी विहसी अति लाजते अंग अनंगतरंगननीरे मोनधरे अरुपा
नउचाइकेनोहमरोरिकेचाहषगीहै नेंननिचोयकीयअरसानसे आपनेजीयमेंचमपगीहै पीतमआपष
रइअरेजवनारिविरी मुषदेनलगीहै ७७ दोहा जावुमयोतुअयातुके वेवगुकाहिवमेंन कोलनलुचाहि
नलालके लषललवो हेनेंन ७८ नायककीसषीकोउराहनो सषीकोवेंननायकासों हे राधे जिनआगे जो
सयानोकेसोअयानोकेजातितोउवेवगकोउगैनही एगैतोएतेरेलउलवोहेनेंनदेषकेलालकेनेत्रको
ललचावेनहीहै ७८ कवित्त औरनकोजुसयानेअयानकेजातसवेनहीजातसंभारे वेतोषरेवगकाहिव
गेनहीसुंदरमोहनरूपउजारे कोललचाइनलालकेदीरघमांनोसुधाविषवोरिसुधारे ज्योति अरेअनीया
रेषरेललवोहेविलोचनदेषिसुहारे ७८ दोहा लषिरअेषायो अधउलउ अंगमोरिअरसाइ आधिक
उविलेटउलटकु आरसनरीजलाइ ७९ सुरतांत सषीकोवेंनसषीसों हे सषीमेलषीअरुहेंदीयाकीअ
षुललति सी अंषीयां हे अैरअरसात कैसीतवतिहै अरुसता वीसोउटिजा

...प्रिया टी

१८७

109

नरे और अम्मरस नरी जे जाति है ७९ कवित्त देषत देषत री अंषीयां अरु आ बिधु ती मुष नेष नई है अंगमरोरि
बरी अंगुनाइ कै देह सबै दरसाइ दई है आधिक तै अति नेटत मी उरु कै बिधु कै करि रीति नई है जो हनि मोरि
तु जा फिरि जोरि कै नैनन चाइ जे नाइ लई है ७९ दोहा चटक न बोमल पटतकू सहज नेह रंग नीर फीको
परै न बरफटै रंगफो चोर रंग चीर ८० उत्तमा नायका कौ बेन सषी सों हे सषी जो सहज नेह रंग नीर है तिनकौ ने
ह परै चटक बोहै न री मोकै मीपरे कि जो सालकै रंगफो चीर जो फारै तऊ फीकौ परै नांही है सो ८० कवित्त लो
फत नांहि तिननैं कषरी चति कै घटिते कुसरा सरजो नौ सहज नेह रंग नीर सबैरे नकाय मनो वचही सरसानो
फीकौ परै न कटै बरकु वर बैम कौ वैसो लयै लै पुरानौ कौ कु घटै न मिटै जग जानत ते चोल के रंग न चीर रंगा
नौ ८० दोहा दुसह विरह दारुन दसा रहै न और उपाइ जात जात ज्यौं राषीयत प्यौ कौ नाम सुनाइ ८१
प्रोषितपतिका सषी कौ बेन सषी सों हे सषी राधिका के इन दारुन दसा के विषै दुसह विरह तिनकौ और कोउ
रकहू उपाइ रह्यौ नांही याकौ जीव कौं जात जानि कै नरतार कौ नाम सुनाइ के राषीयतु है ८१ कवित्त दा
रुन दुसह दुष वियोग दसा दरसै अति देह दहै है और उपाय कीयै न रहै कबु जीव कलेवर छोड्यो न है है
हरि नई प्रतिन्यां सजनी सुनि वारही वार उसास कहे है नो रीतो यों न रहै छिन एक पै पीतम नाम सुनायेर
है है ८२ दोहा फिरि फिरि दौरे देषियतु निचले नैं कु रहे न एक जगारे कौ नवपर करतु कजाकी नैन ८२ सषी
कौ बेन नायका सों हे राधे तेरे नैं नु फिरि फिरि दौरत ले हौ देषीयतु नैं क कं निचला रहतु नांही है तातें मैं हू फलि
सोकि कजरारे नए एकौं नवपर कजाकी करतु है ८२ कवित्त दौरत है फिर ही पिरथ्यो कु उरे घतहे दरस
अरे है नैं करहै न बचलै न बचै ... है है कौन कुक पर एक जगारे षरे रहनना रे उगाह १८

109A

पंकजन गंजन चंचल चौगुने नैनन नवीन कला के करै है ६२ दोहा कोऊ बूड्यौ इहि जाल परि कत कुरंग अकुलाइ
ज्यों ज्यों सुरझि भज्यौ चहत त्यों त्यों उरझत जाइ ६२ अन्योक्ति कवि बिहारीदास कहत है रे कुरंग
इन जालन के बिषे परि कै को बूड्यौ है रे अकुलात कों है रे देषत न्याही है कि ज्यों ज्यों सुरझि कै भज्यो चाह
त है त्यों त्यों उरझति जातु है प्रान बचत कयाही न ६२ कवित्त कोऊ बूड्यौ इहि जालन मै परि पार न आवत
मोह मयो है कौं अकुलात तकु रंग अजों न त आप विचार कहा उनयो है ज्यों ज्यों चहै सुरझाइ भज्यो
कछु याविध जीय उझाह लयो है त्यों त्यों परो उरझात तहीं जात कहा कहीयै दुष दंद नयो है ६२ दोहा अब
तजनो उउपाइ को आयो पावस मासु षेल न रहिवो षेम सो केसकुसम की वासु ६४ सवईत नायका
वैन नायक सों होकोन्ह अब तौ नैचौल उपाय कौ नाम बोलि दे कू अब पावस को मास आयो है सा केस
को हष्य औरऊ सुमकी वास तहां ते षेम तो अरू षेम सो रहिवो है ६४ कवित्त नाव उपाय अबैन मैयेक
हौ उर उपायन बोलिदये तैं आए है पावस मास महा घन घोर घटान चढाइ लये ले षेम हीकौ तरिवौ सु
षषेम सौं आपनी और कलास न ये तैं और कहा कहीये सुनि मान यकंज के फूल की वास लये तैं
६४ दोहा लसै मुरासा तिय स्रवन यौं मुकतन दुति पाइ मानकु परस कपोल के रहे स्वेद कन छाइ
६५ मुरासा सो ला सषी कौ वैन नायक सौं होकोन्ह राधा के स्रवन के विषे मोती की दुति पाइ कै मुरासा
ऐसे सोभत है कि मानकु कपोल के विष परसनै तैं स्वेद के कन विये छाय रहे है ६५ कवित्त कामिनी
कौन मुरासा लसै अति दृष्वत सो लसमन हरत है है यौं मुकता फल की दुति पाइ कै चढे है गज राज निकेत
नहै है सुंदर गोल पर है अमोल [illegible] मानौ अबे परसे सै कपोल के स्वेद न के



प

...सी टी

१८७

109

नैरे औरचमारसतरीजेनातिहै ७९ कवित्त देषतदेषतहीअंषीयांन्मरुकाभिम्रुठीमुरजेषनईहै अंगमरोरि
षरीअंगुराइकैदेहसवेदरसाइदईहै आधिकतेअतिनेटतमीउककै विठुकैकरिरीतिनईहै जोहनिमोरि
नुजाफिरिजोरिकैनैननवाइजेनाइनईहै ७९ दोहा चटकनछोमलघटततऊ मद्धननेहगंभीर फीको
परैनवरफटै रंगपोचोररंगचीर ८० उत्तमा नायका कोवैन सषीसौं हेसषीजोसज्ञनगंभीरहै तिनकोनै
हघटेवटकछोहेनही माकैसीपरेक्षि जोंचोलकैरंगपोचीरजोफाटैतऊफीकोपरैनांहीहै सौ ८० कवित्त छो
हतेनांहिननैंकषरीचटिकैघटितैऊंमरासरजानौ मद्धननेहगंभीरसबैरि नकायमनोवचहीसरसानौ
फीकोपरैनफटैवरऊंवरवैसेकौवेसोलयेलैपुरानौ क्यौऊंघटैनमिटैजगज्ञाननतचोलकेरंगनचीररंगा
नौ ८० दोहा उसहविरहदाहनदसा रहैनऔरउपाइ जातजातज्यौंराषीयत प्योकोनांमसुनाइ ८१
प्रोषितपतिका सषीकोवैनसषीसौं हेसषीराधिकाकेइनदाहनदसाकेविषैउसहविरहतिनकोऔरकोउ
रकहूउपाइरह्यौनांही याकोजीवकौंजातजातेकौंनरतारकौनांमसुनाइकेराषीयतुहै ८१ कवित्त दा
हनदुसहदुषविदोगदसादरसेअतिदेहदहैहै औरउपायकौयेनरहैकहुजीवकलेवरछोड्योनहैहै
हरिनईश्रतिल्यौसजनीसुनिबारहीयारउसासरहैहै नोरीलोयौंनरहैछिनएकपैपीतमनांमसुनायैर
हैहै ८२ दोहा फिरिफिरिदौरदेषियतु निचलेनैंकुरहैन एककनरारेकोनपर करतुकजाकीनैन ८२ सषी
कौवैननायकासौं हेराधेएतेरेनैंनुफिरिफिरिदौरतेहीदेषीयतुनैंकऊंनिचलारहतुनांहीहै तातैमैंवुऊनि
हेकिकजरारेनए एकोनपरकजाकीकरतुहै ८२ कवित्त दौरतहैफिरहीफिरव्यौंकुऊदेषतहैदरसा १३७
अरैहै नैंकरहैनचलैनचलेसमहेरतिहीहियरानहूरलैहै कोंनकेऊपरएकजगारेषरेरतनारेउछाह

109A

कंजन गंजन चंचल चौगुने नैन नवीन कजा के करै है ८२ दोहा कोबूड्यो इहि जालपरि कत कुरंग अकुलाइ ज्यों ज्यों सुरझि भज्यो चहत्यौ त्यों त्यों उरझत जाइ ८३ अन्योक्ति कवि विहारीदास कहत हैं रे कुरंग इन जालन के बिषपरि के को बूड्यो है रे अकुलात को है रेदेषत न्याही है कि ज्यों ज्यों सुरझि के भज्यो चाहत है त्यों त्यों उरझत जातु है गोन वेत कह्याहीन ८४ कवित्त कोबुड्यो इह जालन में परि पारन आवत मोह मयो है कौं अकुलात कुरंग अजान लखाप विचार कहा उनयो है ज्यों ज्यों चहै सुरझाइ भज्यो कहु या विधजीय उबाह लयो है त्यों त्यों परो उरझात तही जात कहा कही ये दुष दंदनयो है ८५ दोहा अब तज नांउ उपाइ को आयो पावस मास षेलन रहि वो षेमसों केमकुसमकी वास ८६ सवैया नायकाके वेन नायकसों होकोनर अब तौ ने चील उपायको नाम को हिये कुअब पावसको मास आयो है सोकेम को षष और कुसुमकी वास तहां लेषने अरु षेम सों रहिवो है ८७ कवित्त नांव उपाय अवैन जैयेक हीतेर उपायन को हिये ये तें आप रेपावस मास महाघन घोर घटान चगाइलये ले षेमही को तरिवो सु षषेम सों आपनी औरकु नास न येतें औरकहा कहीयेसुनि मानय कंजके फूलकी वासलये तें ८८ दोहा लसै मुरासा तिअ श्रवन योमुकतन दुति पाइ मानकु परस कपोल के रहै स्वेदकन गाइ ८९ सुरासासोरठा सषी कौ वैन नायकसों हो कोनर राधके श्रवनके विषै मोतीकी दुति पाइके मुरासा ऐसे सोभतु है कि मानकु कपोलके विषे परस ने ते स्वेदके कनिये छाय रहे हैं ९० कवित्त कामिनी को नमुरासा लसै अति देषत सो मनमोहत है है योमुकता फलकी दुति पाइ कै च है गजराजनि कैंलत नहै है सुंदर गोलपरे है अमोलवहे ल उहिमें लविलो कवि है है मानें अवेप रसे सैके कपोलके स्वेदन के

प २

हारी सी
१८८
110

कनताइरहेहे ८५ दोहा मिलिपरछांहीजोन्हसो रहेदुहूनकेगात हरिराधाइकसंगही चलेगलीमहिजात ८६
दंपतिजनमिसारिका सखीकोवेनसखीसों हेसखीश्रीहरिजूनेराधिकादोनूकोपरछाहीओरजोन्हसोमिलि
केगातरहेसों योदोनुपकेसाथनयागलीमेचल्याजातहे ८६ कवित्त जोन्हसोंजाइमलीपरछांहिदिनकीसुष
माजगकीसब रहे गातरहेहेदुहूनकेसुंदरतातिअनेकनकेसुषदेहें वाकुसुंबाकुलगायपरस्परके
केकटाक्षननैननचवेहे राधिकाश्रीहरिएकहीसंगचलेईगलीमहिचलतजेहे ८६ दोहा विधिहूकों
नकरेटरे नहीपरेरूपांतु चितेकितेतेलनयस्यो इतौइतेतनुमांनु ८७ मानमोचनशठलउपाय स
खीकोवेननायकसों हेराधेविधाताकोनहीमोजोविधिकरैसोपाइपरैरूटरैनही सोतेचितकेविषेइ
तने - तनमेइतनोमांनुकहांलेलेकेधस्योहे ८७ कवित्त कोनकरैविधकीविधनेकरूंदेषतहीहीयरा
हस्योहे याहीकोश्रानिलख्योसोलग्यो कहूआनपरेहूनने कटस्योहे बोलतिनांहिनमोनगसों
अतियाहीकेजीवगरूरगह्योहे ८७ दोहा मोरचंद्रकास्यामसिरि चढिकतकरतगुमांन लषिवीपाइ
नपरलुठति सुनियतराधामांन ८८ नयोनकरस सखीकोवेननायकसों हेस्यांमइनमोरचंद्रिका
कौसिरचढाइकेगुमांनकहाकरतहो सोक्योंकिइनबड्नकौपगांपरिलुटतीदेषनीहैकि राधामांनकरो
सुनियतहे ८८ कवित्त मोरकीचंद्रिकातेसुनियातन्मनेघनस्यांमकेसीसचढेहैतें सोसमजीयमेंजांनतहो
करी ×
तुमकछोरनकोरीकमहेहैतें काहेगुमांनधरैअपनैमनकायमनोवचिनेहपरेहैतें जोतिजलीलषवीलह
पाइनलुंटनीराधिकामांनचढेहैतें ८८ दोहा चिरजीवोजोरीजुरो क्योंनसनेहगंभीर कोघटएवृषभांन १३०
जा वेहलधरकेवीर ८९ नक्तिजन कविविहारीदासकहतुहैकि श्रेमीजोरीजुरेचिरजीवनेको श्रेो

केसनेहगंभीरकौंनहै ए कोकिइनमेकौनपारहै ए तोहृषजानकीपुछीहै अरुवेहरलधरजीकेद
औरविचार स्वकानिवेनसषीसौं हेसषीएकैमै सीजोरीजुरैचिरजीवनाकै औरइनकेसनेहगंभी
कौनहै इनमेंपारकौनहै ए तोहृषनकहै तोबलदलाकीअनुजाकहैतोबोटीबनहै ए तोवतादोइ
डीहै वेहरलधरकहैतोबदतिनकोवीरएदोघडोहै ८७ कवित्त जोरीजुरैचिरजीवोइकुंजनव्याब्रजवी
चवनीबिवबजे कौनसनेहगंभीरवहै अतिसुंदरतांईमनोजसेलाजे कोघटियेहृषजानकीनंदनीद
केविलोकितहीअघजाजे ताकीतोबातकहाकहोयेसषीवेहरउनइकेवीरविराजे ८८ दोहा सषः
कोवेनसषीसों हेसषीउहिजमुनाकेतीरजहांसुषकोदेनहारकुंजबायोहै औरजहांसीतलसोरलो
यासमीरआवतुहै सोमेरामनअजोटीउहांकुजातुहै ८७ कवित्त कुंजघनोघनसुंदरवाइरेसषी
सुषदाइकसोजलहेहै सीतलमंदसमीरलसेसुरनीकककोरलस्योउलहेहे हेसजनीअजहोउहा
रजैयोमनजातउमाममनहैहै फेरतकुंनफिरैकपुरंगचकवाजमुनाउहितीररहेहै ८० दोहा सोह
सोना सषीकोवेनसषीसोंतथानायकासों हेराधेजीस्यामजूकेसलोनेगातपरपीतवस्त्रवद्योसोअ
उदहेकिसाकि मानोंमनिकोसेलकहेतोपरवततिनकेऊपरचन्द्रातकोतावरोसोपस्योहै ८१ कवित्त
आढ्योहेसुंदरपीतमहापटसोहतसो ... अनेतनस्योहै स्यामसलूनेसुगातकेऊपरहेरतहीयकुला
सयस्योहै ताहिसमेउपमाइहिआवतजीयजगत्रमेआइअस्योहै मानकुनीलमिलोचयकऊपरआ

बेलो...
बरआपनेहाथा...

पहीरपरन्नातपस्योहै ६२ दोहा वरनवासुसुकमारता सबबिधिरहीसमाइ पखुरीलगीगुलाबकी गातन
जानीजाइ ६२ मुषसोंता सषीकोवेंननायकसों हेकोंन्हराधिकाकेगातकेगुलाबकीपखुरीलागीसोव
रनकरिवासुकरिसुकमारकरसगलीविधिसमाइरहीहै तातेंजानीजातिनांहीहै ६२ कवित्त अंगअंगवास
षरीसुकमारतासुंदरताइनईअलरहीहै जोतिअनेकसबेबिधिसोंअंगअंगनमेंजसमाइरहीहै याकें
सरूपसमानतिलोकनमैंलषिआपतेमोनगहीहै पांषुरीलागिरहीहै गुलाबकीगातलषेतजानीनही
है ६२ दोहा रंचनलषियेयहिरिये कंचनसेतनबाल कुम्हिलांनेजानीपरे उरचंपेकीमाल ६२ ननसोंता
सषीकोवेंननायकसों हेकोंन्हराधिकाउरकेविषेचंपेकीमालपहरीहै सोबालाकोतनकंचनसारिसोहै
तातेंनेकहूंजानीतिनहै पैजानीजातिहैसोकुम्हिलानेतेंजानीजातहै ६२ कवित्त रंचनजानीयेजातहीयेप
हिरीअतिसुंदरसोरधरहै कंचनसेतनबालविराजतदेषतहीहीयरांहरेहै दोउनकोरंगएकहीसोहनमोह
नमोहतहेमनतेनटरेहै चंपककमालविसालधरीसजनीकुम्हिलांनतेंजानीपरैहै ६२ दोहा गोधनतूंहरषे
हियै घरीकलेहुपुजाइ समुझिपरेगीसीसपर परतपसुनकेपाइ ६४ अन्योक्त कविबिहारीदासकहे
हे रेगोधनतूंहीयाकेविषेहरष्योसकोघरीकजाइलेहुपुजातिआनेकनलापरेगी याबरीयांलोनली
हीवनीकुनिसासनपेजबमारपरैगी पायपरेगयसननकेपीवनताबिनहीसबजानिपरेगी ६४ दोहा मु
हधोवतिएडीघसति हसतिअनगवतितीर धसतनइंदीवरनयन कालिंदीकेनीर ६५ चेष्टा सषीकोवें
ननायकसों हेकोंन्हनारा धिकाअनगवतिकहलोनदीकालिंदीतिनकीतीरहसतिसीमुहधोवतिहै १३९
रएडीघसतिहै अरुइंदीवरनेंनीनीरकेविषेधसतिनांहीहै ६५ धोवतिआननएडीघसेअतिसंग

४ पैसीमवरवमुनकेपाइपरेंगेतवकजानपरैगी ... ... रेगी तेदुमजाइदपरीकहसहै

नमषीविलसेहै अंगनमहामदमातीषरीआरसानसीओवनदीविहसेहै तीरलषेजुजयोहैकर
देषतआपनेजीयत्रसेहै पेकजलोचनपीनउरोजनवाजमुनानहिनीरधसेहै ८५ दोहा वदतिनिकै
कुचकोरुरुचि कदतिगोरतुजमूल मनतुटगोलोदनेचहत वीटतिऊचेफूल ८६ वेश नायककोवेन
मषीसों हेसषीयाजोऊचेफूलकेचूटतिहै सोइनकेकुचनुकेनिकसकोरिहैकैरुचवादतिहै ओरगोरे
नुजनकेमूलकादनतें ओफलोटनुकहलोपसवाडोतिनकेचहनैतेमेरोमनलूटगयोहै ८६ कवित्त
वादतहैनिकसीकुचकोरषरीसुघरीरुचिराजतिनारी गोरधनेनुजमूलमनोहरकादतिसीसुषमामनधा
री देषतहीलुटिगोमनसुंदरलोचनहीचहतेसुषकारी चूटतऊंचेषरेतरुफूलसोयाविधकीअवरीति
निहारी ८६ दोहा अहेदहेदीजिनधरे जिनदेहुउतारि नीकेहेगीकाढुये ऐसीहीरहिनारि ८७ स्वयं
दूत नायककोवेननायकासों हेनारियाछविसोऊनीकीलागतिहै तातेयाहेदेहीधरिमतनो अरु
उतारिहूंमतनो योंजोनेंगीकाकोछयोहै सोनीकोलागतुहै सोयोंहीजुरहि ८७ कवित्त ऐसेलषेसुषहै
तकऊंअहेवादहेहीनवरीनधरोरी दूजिनदेहोरिउतारिवहेमुनियाविधमेरोकह्योईकरोरी नीकेहींगीकेंछये
मनभावतकेमनहमारेकहेंतेटरोरी सोहकरैओहहाकरेनायकऐसीयेनारिरहेवहरोरी ८७ दोहा काढप
हरिपटुहटकियो वीरीमिसिपरनामु ढिगुचलाइघरकोचली विदाकीयेघनस्यामु ८८ वोषकहा
सषीकोवेनसषीसों हेसषीराधिकाकाढपटुपहरिअरुहटेअरुवेरीकेमिसिपरनामुकीयोअरुनेत्र
चलाइकैघनस्यामुजूकोविदाकीयेअरुआपघरकोंचली ८८ कवित्त काइतरंगनिसूरसुताजलके
वरआपनेहाथलियेहै जापहिरेटटकोंविडुनीमिसिकैपरनामजचाइदीयेहै आपनेनेनचलाइन

हास्य टी
१५०
112

लैयरकोंचलनैं तिनगांहलीयेहे बालिमकीनखकीसोरहीघनस्यांमनिहारविदायकीयेहै ९९ दोहा क
रउठाइ छ्यरकरनि उमरउपरगुरुहोट सुषमोहे छूटीलटउ लषिललनाकीलोट १०० चेष्टा सषीको
वेनसषीसों हे सषीराधिकाकूरनेपटुउगाइकैं संघटोकसौ मोपटुकै उसरनैतें गुरुहोट कहुलांपसवा
ठोनिकरन्माथोमोलट्नाकीलोटजोंनिकैं ललन स्सुषकीमोरस्टूटीहे १०० कवित्त आपनैहाथउगाइ
कैं छ्यरकोतिनलीबि करिनैंननचोटे ताहिसमेंलषिआपनतें उरकै पटकीसजनीगुरुहोटे अौ
हपन्कोनुसुनाननिहारतल्लोललनटिलईसुषमोटे दीखिसचाइसषीजिनकीलखदेषिलईललनाक
रिश्रोहै १०० दोहा परमजुपोंबउलषिरहउ लगिकपोलकेध्यांन करलेप्योपारलविमल प्यारीपव
येपान १ अर्कानुराग सषीकोवेनसषीसों हेसषीप्यारी...येपाटतेंलपेटविमलनागरवेलकेपान
परहहे सोप्योनायकाकेकपोलकेध्यानलषिकरकेविसेलकेंपरसतुहे औरपोंबउहे औरदेषकेरहे
हे १ कवित्त पांवतिहैंजतिनैचलसोपरसैबहरूंदरसैईरहैहैं ध्यांनकपोलनकेंलगिकैंरहैफेरहीफेरविलो
कवहैहै आपनैहाथलेपीतमपाटलनिमालदेषिपरेउमरैहै नीयकलासआपारलदोकुनिप्यारीके
कांनपवगायेगहेहै १ दोहा वामामामाकांमिनी कहिबोलेप्रानेस प्यारीकहउबिमाननहि पावसच
लउविदेस २ प्रवत्स्यत्पतिका नायकाकोवेननायकसों हमेंकांरमेरेलाईउमेंवामाकहो अहमामा
कहो औरकामिनी येप्यारीअेसेमतिकहो अहअैसेकहउविमाननहोकि पावसरितकेविषेलां
कैविदेसचलतहो २ कवित्त कांमिनीनायिनीनामकहोकछुकाहकोयाविधनांमरलेहो कैसे ×कें×
सेनसोंकतनांहिनबोलतप्रांननकेउमईसनलेहो प्यारीकहैतेंविमाननरंचककाहेतेंकैव ×२९

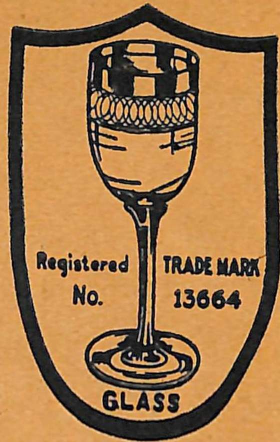
नैनमें

रागरुहै वेऽनरागकै अनुराग... गारै जेइ नमै अनवे है मे वे जेनवे है संसार समुद्र निपोरै जेइ
मै सब अंग निवे है है तेई संसार तिरमबमोरै ७ इति श्री कवि विहारी दास कृत सतसई सटीक
कवित्त बंध संपूर्णम् ॥ ब: दोहे सब सात सै सुकवि विहारी कीन बंधक वानी असि सरस रसिक
नेकीको करिदीन । संवत १७७८ हमिति तिनाइपदम्भु लैका दन्त्यो स्तिधो कर्म वा आ श्री राजगु
राम मध्ये लिखितं पं लक्ष्मीचंद गलि पंडित कर्मचंद सुनिपठनार्थम्

ਬਿਨਤੀ

# New Sample

## 1942




GLASS FABRICS

G. P. DAWER & Co.,
Station Road,
SURAT, No. 2.

No. 2

No.

Pages
210

~~No. [illegible]~~

ZTRU

10x6

A. no. 357